नमामोभजामः ॥ ७ ॥ यतोवेदवाचोतिकुण्ठामनोभिः सदानेतिनेतीतियचागृणन्ति ॥ परब्रह्मरूपंचिदानन्द भूतं सदातंगणेशंनमामोभजामः ॥ ८ ॥ श्रीगणेशउवाच ॥ पुनरूचेगणाधीशःस्तोत्रमेतत्पठेन्नरः ॥ त्रिसन्ध्यंत्रिदिनंतस्यसर्व्वंकार्य्यंभविष्यति ॥ ९ ॥ योजपेदष्टदिवसंश्लोकाष्टकमिदंशुभम् ॥ अष्टवारंचतुर्थ्यांतु सोष्टसिद्धीरवाप्नुयात् ॥ १० ॥ यःपठेन्मासमात्रंतुदशवारंदिनेदिने ॥ समोचयेद्बन्धगतंराजवध्यंनसंशयः॥ ११ ॥ विद्याकामोलभेद्विद्यांपुत्रार्थीपुत्रमाप्नुयात् ॥ वाञ्छितांल्लँभतेसर्व्वानेकविंशतिवारतः ॥ १२ ॥ योजपेत्परयाभक्त्यागजाननपरोनरः ॥ एवमुक्त्वाततोदेवश्चान्तर्द्धानंगतःप्रभुः ॥ १३ ॥ इति श्रीगणेशपुराणेउपासनाखण्डे श्रीगणेशाष्टकंसम्पूर्णम् ॥ ४ ॥ सजयति सिन्धुरवदनोदेवोयत्पादपंकजस्मरणम् ॥ वासरमणिरिवतमसांराशिंनाशयतिविघ्नानाम् ॥ श्रीगजाननार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

# महात्माओंके जीवनचरित्रकी भूमिका ।

इस ग्रन्थको स्वामिपरमानन्दपरमहंस पिशावर-नगरनिवासीने निर्माण किया मुमुक्षुजनों के कल्याण के लिये इस ग्रन्थ में, दत्तात्रेय जड़भरतादिक अनेक महात्माओं के जीवनवृत्तांत हैं इसके अवलोकन करने से चित्तको भोगोंकी तरफसे शान्ति आजाती है और ज्ञानके साधनों के संपादन करने में उत्साह मन में उत्पन्न होता है मुमुक्षु पुरुषों को उचित है इस ग्रन्थ को अवश्य अवलोकन करैं इस वार्त्ता को तो सभी लोग जानते हैं कि जगत् में कामदेव बड़ाही दुर्जय है इसका जीतना अतीवही कठिन है क्योंकि विश्वामित्र और पराशरादिक बड़े बड़े ऋषि मुनियों को एक क्षणमात्र में इस कामदेव ने तपसे चलायमान करादिया है तब फिर इतर तुच्छ मनुष्यों की कौन

गिनती है वह तो कामदेव के पूरे २ पशु बनेही हैं और जोकि अतिमूढ़ पामर पुरुष हैं वह गर्दभी आदिक पशुयोनिवालियों से भी कामातुर होकर मैथुन कर्मको पड़े करते हैं और जो अतिविषयी पुरुष हैं वह भंगन और चमायनों से भी भोग करते हैं ऐसे दुर्जय कामदेव का जीतना बड़ाही कठिनहै और विना इसके जय करनेसे पुरुष संसारचक्रसे भी नहीं छूट सक्ताहै इसीवास्ते संसारी जीवोंपर दयादृष्टिको लेकर कामके जीतने के लिये भगवान् ने गीता में वैराग्य और अभ्यास इन दो साधनोंको कहा है सो अभ्यास भी विना वैराग्य के नहीं होसक्ता है वैराग्यकोही प्रधानता है इसी वास्ते इस ग्रन्थ में वैराग्यवानों के ही जीवनचरित्रोंको हम लिखते हैं जिनको पढ़कर पामर विषयी पुरुषोंका चित्त विषयों की तरफसे हटकर आत्मज्ञान के साधनोंकी तरफ लगजाये क्योंकि विषयोंमें रागही बन्धन का हेतु है और विषयों से वैराग्यही मोक्षका कारण है प्रथम दत्तात्रेयजीके जीवनचरित्र को लिखकर पश्चात् संक्षेपसे शुकदेव वामदेवादिकोंके लिखेंगे॥

## भूमिका।

| | |
|---|---|
| १ दत्तात्रेयजी | १२ बुलाशाह |
| २ शुकदेवजी | १३ मंसूर |
| ३ ऋषभदेवजी | १४ सुकरात |
| ४ जड़भरत | १५ अफलातून |
| ५ बुद्धभगवान् | १६ अरस्तू |
| ६ भरथरी | १७ फलातून |
| ७ हरिश्चन्द्र | १८ हमीमसुपेद |
| ८ विक्रमादित्य | १९ अब्दुल्अली |
| ९ भोजराजा | २० फैलकूस |
| १० गुरुनानक | २१ देवजानस |
| ११ कृष्णचैत्य | २२ जीतो |
| | २३ नसीरुद्दीन |

दो०॥नमोनमो तसरूपको,आदिअंत जेहि नाहिं॥
सो साक्षी मम रूप है, घाट बाढ़ कहुँ नाहिं १
अविगत अविनाशी अचल,व्यापरह्यो सवथाहि॥
जो जानै अस रूप को, मिटै जगत भ्रम ताहि २
हंसदास गुरु को प्रथम, प्रणवौं वारंवार॥

नाम लेत जेहि त्रय मिटै, अघ होवै सब क्षार ३ ॥

चौ० । परमानन्द मम नाम पिछानो । उदासीन मम पथको जानो ४ रामदास मम गुरुके गुरु हैं । आतमविद जो मुनिवर मुनि हैं ५ ॥

दो० परसराम मम गुरु हैं, सिंधु नहीं जस पार ॥ भारतमण्डल के विषे, जानै सब संसार ६

संसाररूपी बन्धनसे छूटने के लिये संपूर्ण मोक्षके साधनों में से वैराग्यकोही प्रधानता है क्योंकि वैराग्य के उत्पन्न होनेसे ही सब साधन मोक्ष के पुरुषसे हो सके हैं बिना वैराग्य के कोई भी साधन नहीं होताहै सो वैराग्य दो हेतुओंसे पुरुषोंको होता है एक तो अत्यन्त दुःखकी प्राप्ति होनेपर जैसे किसीका पुत्र या स्त्री मरजाती है उसके साथ अतिस्नेह होनेसे तिसको वैराग्य होता है या धनके नाश होजानेपर भी होता है या किसी भारी रोगादि कष्टों के प्राप्त होनेसे भी पुरुष को वैराग्य होता है सो मंद वैराग्य कहा जाता है दूसरा महात्मा वैराग्यवानों की कथाओं को सुनकर बिना किसी सांसारिक कष्टके प्राप्त होनेसे भी वैराग्य

होताहै वह उत्तम वैराग्य कहा जाताहै और वैराग्य-
वानोंकी कथाओं को सुनकर चित्तमें मुक्तिके साधनोंके
करने में भी उत्साह उत्पन्न होता है सो परमार्थ की
तरफ़ लोगोंको उत्साह दिलानेके लिये हम इस ग्रन्थ
में वैराग्यवानों की कथाओंको कहते हैं संपूर्ण वैराग्य-
वानों में से शिरोमणि वैराग्यवान् जोकि स्वामिदत्ता-
त्रेय अवधूतजी हुये हैं इनके जीवनचरित्र को हम
पहले कहते हैं ॥

# अथ दत्तात्रेयजी का जीवनचरित्र ॥

सत्ययुग में अत्रि नाम करके बड़े तपस्वी राजऋषि हुये हैं उनकी स्त्री का नाम अनसूया था अनसूया के सन्तति नहीं थी सन्तति की कामना करके अनसूया ने ब्रह्मा विष्णु महेश नाम करके जो संपूर्ण देवताओंमें मुख्य गिने जाते हैं इन तीनोंकी बड़ी भारी तपस्या की और भूमिशय्यादिक तथा ब्रह्मचर्य्यादिक जोकि कठिन कठिन व्रत हैं उनको भी तिसने धारण किया अनसूया को जब कि घोर तप करते करते बहुतसा काल व्यतीत होगया तब तीनों देवता तिसके पास आकर कहनेलगे हम तुमपर बड़े प्रसन्न हुये हैं तुम हमसे वरको मांगो अनसूयाने कहा यदि आप मेरे पर प्रसन्न हुयेहो तो तुम तीनों देवता मेरे उदर से पुत्ररूप होकर जन्मको धारणकरो अनसूयाके वाक्य को सुनकर तीनों देवताओं ने कहा तथास्तु याने हम तीनों तुम्हारे घरमें पुत्ररूप होकर उत्पन्न होवेंगे इस प्रकार का वर अनसूया को देकर तीनों देवता अन्तर्द्धान होगये पश्चात् कुछकाल के बीतजानेपर

क्रम से तीनों देवताओं ने अनसूया के घर में अवतार लिये ॥ प्रथम विष्णुने अवतार लिया इनका नाम दत्तात्रेय रक्खागया जिस हेतु से आप विष्णुने अनसूया की कुक्षिसे अवतार लियाहै इसी हेतुसे लोग भी इनको विष्णुका अवतार कहतेहैं और जैसे विष्णु में स्वाभाविक ही ज्ञान वैराग्यादि गुण रहते हैं तैसे दत्तात्रेय में भी जन्मकाल से ही ज्ञान वैराग्यादिक स्वाभाविक ही गुण थे ॥ फिर महादेव जीने अनसूया की कुक्षि से आप दुर्वासा नाम करके अवतार को धारण किया इन का स्वभाव तमोगुणप्रधान था फिर कुछ काल के पीछे ब्रह्माने चन्द्रमारूप होकर अवतार को धारण किया इन का स्वभाव ब्रह्मा की तरह रजोगुणप्रधान हुआ तीनों में से दत्तात्रेय जी यदि च बाल्यावस्थासे ही ज्ञान और वैराग्य के बल से उपराम रहते थे तथापि जब यह कुछ सयाने हुये तब इन के पिताका देहान्त होगया और सब लोगों ने इनको बड़ा जानकर राजसिंहासन पर बिठला दिया तब कुछ कालतक तो यह प्रजाकी पालना को करते रहे और दुष्टोंको दण्ड देकर सज्जनों की रक्षा

को भी करते रहे पश्चात् एक दिन इनके चित्त में राज्यकी तरफ से घृणा उत्पन्न हुई तब राज्यका त्याग करके ये अकेले विचरने लगे इन की सौम्य और दयालु मूर्तिको देखकर बहुत-से मुनियों के लड़के भी इनके साथ होलिये जहां जहां दत्तात्रेय जी जायें वह बालक भी सब साथ साथही इनके जायें कितनाही दत्तात्रेयजी ने उन बालकोंको समझाकर हटाना चाहा परन्तु वह किसी प्रकार से भी न हटे तब दत्तात्रेय जीने अपने मन में विचार किया कि कोई ऐसा कर्म करना चाहिये जिस कर्मको देखकर इन को हमारी तरफ से घृणा उत्पन्नहो क्योंकि विना ग्लानिके यह हमारा पीछा नहीं छोड़ेंगे तब एक दिन दत्तात्रेय जी वनमेंविचरतेविचरते एकतालके किनारेपर जाकर खड़े होगये और कुछ देरके पीछे तिस तालमें पैठकर गोता लगाकर कितने दिनों तक जलके अंदरही समाधि लगाकर बैठे रहे तब मुनियों के लड़के बाहर ताल के किनारे परही बैठे रहे क्योंकि उनका दत्तात्रेय जी में अतिस्नेह होगया था दत्तात्रेयने देखा कि मुनियों के लड़के तो इसप्रकारसेभी नहीं जातेहैं तब उन्होंने

योगबल से एक स्त्री युवा अवस्थावाली रची और एक बोतल मदिरा की रची एक हाथसे तो तिस स्त्री का हाथ पकड़ा और दूसरे हाथ में मदिरा की बोतल को पकड़ कर वह जलसे बाहर निकल कर विहार करने लगे उनके निंदित आचरण को देखकर मुनियों के लड़के कहने लगे यह तो उन्मत्त होगये हैं इनका आचरण खराब होगयाहै अब इनके साथ रहना उचित नहीं है ऐसे कहकर वह सब मुनियों के लड़कों ने उनका पीछा छोड़दिया जब कि सब मुनियों के बालक चलेगये तब दत्तात्रेयजी ने जो माया की स्त्री और शराबकी बोतल रचीथी उस को समेटकर अर्थात् तिस का लय करके अवधूत होकर विचरने लगे कभी ग्राम में जाकर लोगों को अपने दर्शन से कृतार्थ करते और कभी नगरों में जाकर लोगों को दर्शन देते और कभी बनोंमें विचरते और कभी पर्वतों की कन्दराओं में जाकर ध्यानावस्थित होजाते वासना से रहित तथा अकिंचन भाव संसार में जीवन्मुक्त होकर विचरने लगे एक दिन दत्तात्रेय जी अपने आपमें मस्त हस्ती की तरह चले जाते थे

इन को एक राजाने देखकर पूछा आप को ऐसा आनन्द किस गुरुसे मिला है जो आप सम्पूर्ण चिन्ता से रहित होकर मस्त हस्ती की तरह विचररहे हैं राजा के वाक्य को सुनकर दत्तात्रेयजी ने कहा ॥

आत्मनोगुरुरात्मैव पुरुषस्यविशेषतः ॥
यत्प्रत्यक्षानुमानाभ्यां श्रेयोऽसावनुविंदते॥१॥

पुरुष का विशेष करके गुरु अपनाही आत्मा है क्योंकि प्रत्यक्ष और अनुमान करके अपने आत्माके ज्ञानसे ही पुरुष कल्याण को प्राप्त होता है ॥ १ ॥

दत्तात्रेयजी कहते हैं हे राजन्! मैंने किसी एक को गुरु नहीं बनायाहै और न मैंने किसीसे कान फुंकवाकर मंत्र लिया है किन्तु जिस २ से जितना २ गुण हमको मिला है उतने २ गुणका प्रदाता मान कर मैंने उसको गुरु बनाया है इसीसे मैंने २४ चौबीसोंको गुरु माना है क्योंकि उन में से हरएक से मेरेको एक २ गुण मिलाहै इसीलिये मैं उन सबको गुरु करके मानताहूं ॥ राजाने पूंछा वह चौबीस कौनहैं और उनका क्या २ नाम है और उन से कौन २ गुण आपको मिला है सो सम्पूर्ण विस्तार से

मेरेप्रति कहिये॥ दत्तात्रेयजी कहते हैं हे राजन्! तुम एकाग्रचित्त होकर प्रथम हमसे उन के नामों को सुनो फिर उन गुणोंको श्रवण करो जिन गुणों को हमने उनसे लिया है वह सब यह है ॥ पृथिवी १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५ चन्द्रमा ६ सूर्य ७ कपोत ८ अजगर ९ सिंधु १० पतंग ११ मधुकृत १२ गज १३ मधुहा १४ मृग १५ मीन १६ पिंगला १७ कुररपक्षी १८ बालक १९ कुमारी २० कंडेडो २१ सांप २२ मकड़ी २३ भृंगी २४ यह चौबीस गुरुओं के नाम हैं अब उनसे जो २ गुण हमको मिले हैं उन गुणोंको भी तुम्हारे प्रति हम सुनाते हैं॥ क्षमा और परोपकार करना यह दो गुण हमको पृथिवी से मिले हैं पृथिवी अपने प्रयोजनसे विना सम्पूर्ण जीवों के लिये अनेक प्रकारके पदार्थों को उत्पन्न करके जीवोंपर परोपकार को करती है और ताड़ना करने से भी बदले को नहीं चाहती है ऐसी क्षमाशील है जो कोई और भी पृथिवी से इन दो गुणों को ग्रहण करलेवैगा वह भी जीवन्मुक्तके सुखको प्राप्त होवैगा इस में संदेह नहीं है इसी वास्ते हमने पृथिवी को

गुरु माना है ॥ १ ॥ दत्तात्रेयजी कहते हैं हे राजन्! जलसे स्वच्छता और माधुर्यता गुण हमको मिला है जैसे जल अपने स्वभाव से स्वच्छ और मधुर है तैसे मनुष्य को भी अपने स्वभावसे ही स्वच्छ और मधुर होना चाहिये क्योंकि आत्मा स्वभाव से ही शुद्ध और सुखस्रूप भी है अर्थात् छल कपट से रहितहो और सबसे मधुर भाषण करनाही कल्याण का कारक है यह दो गुण हमको जलसे मिले हैं इस हेतु से हमने जलको भी गुरु करके माना है ॥ २ ॥ और अग्नि का अपना उदर ही पात्र है जो द्रव्य कि अग्नि में डाला जाता है उसको अग्नि अपने उदर में रखलेती तिसके रखने के लिये दूसरे पात्रको वह अपने पास नहीं रखती है तैसे मैंने भी अपने उदर कोही पात्र बनाया है जो भोजन मिलजाता है तिसको मैं उदरमेंही रखलेताहूं अपने पास नहीं रखताहूं यह गुण मैंने अग्नि से लिया है इसी हेतु से अग्नि को भी मैंने गुरु बनाया है ॥३॥ और जैसे वायु सदैवकाल चलती फिरती रहती है परन्तु किसी पदार्थ में आसक्त नहीं होती है और शरीर के भीतर जो वायु है

वह केवल आहारकरकेही संतोष को प्राप्त होजाती और किसी भोगकी इच्छा को वह नहीं करती है दत्तात्रेयजी कहतेहैं तैसे हमभी कहीं आसक्त नहीं होते हैं और समय पर जैसा कैसा आहार मिलजाता है तिसी करके हम संतोष को प्राप्त होजातेहैं तिससे अधिक भोगकी इच्छा को भी हम नहीं करतेहैं यह दो गुण हमने वायु से लिये हैं इसलिये वायुको भी हमने गुरु बनाया है ॥ ४ ॥ और जैसे आकाश में तारागण और वायु तथा बादलआदिक भी रहते हैं परन्तु आकाश का किसी के साथ भी सम्बन्ध नहीं होता है किन्तु आकाश सबसे असंगही रहता है और आकाश व्यापक भी है तैसे आत्माभी व्यापकहै और असंग है शरीरादिकों के साथ आत्मा का कोई भी सम्बन्ध नहीं है ॥ संसार में रहकरके भी किसी के साथ लिप्त न होना यह गुण मैंने आकाशसे लिया है इसलिये आकाश को भी मैंने गुरु मानाहै ॥ ५ ॥ हे राजन्! जैसे चन्द्रमण्डल एकरस सदैवकाल पूर्ण ही रहता है न घटता है न बढ़ता है किन्तु एकरस ज्योंका त्योंहीं रहता है और जितने २ चन्द्रमण्डल के

भागोंपर पृथिवीकी छाया पड़ती है उतना भाग कमती प्रतीत होने लगता है स्वरूप से वह कमती नहीं होता है एकरसही रहता है क्योंकि स्वरूपसे घटना बढ़ना चन्द्रमा में नहीं है तैसे आत्मा में भी घटना बढ़ना नहीं है आत्मा हमेशा एकरस पूर्णही रहता है घटना बढ़ना शरीरों में होता है यह आत्माकी पूर्णताका ज्ञानरूपी गुण हमने चन्द्रमा से लिया है इस लिये चन्द्रमा को भी हमने गुरु बनाया है ॥ ६ ॥ और जैसे सूर्य्य अपनी किरणों द्वारा जल को पृथिवीतल से खैंचकर फिर समयपर तिसका त्याग करदेता है तैसेही विद्वान्पुरुष भी इन्द्रिय अपेक्षित वस्तुओं का ग्रहणकरकेभी फिर तिनका त्यागही कर देता है यह गुण हमने सूर्य्य से ग्रहण कियाहै इस लिये सूर्य्य को भी हमने गुरु बनाया है ॥ ७ ॥ दत्तात्रेयजी कहते हैं हे राजन्! स्नेह का त्याग करदेना यह गुण हमने कपोत से लिया है सो दिखाते हैं॥ वन के एक वृक्षपर कपोत और कपोतिनी दो रहते थे उन्हों ने उसी वृक्षपर अपने बच्चों को उत्पन्न किया जब कि बच्चे दानाखाने के योग्य हुये

तव कपोत और कपोतिनी इधर उधर से अपनी चों-चों में दाना लाकर उन वच्चों को खिलाने लगे जब कि वह वच्चे भी कुछ बड़ेहोगये तब उसी वृक्ष के नीचे वह भी इधर उधर खेलने लगे एकदिन कपोत और कपोतिनी वनमें कुछ दूर चलेगये और उनके पीछे उनके बच्चे भी आलने से निकलकर वन में इधर उधर फिरने लगे एक फन्दक ने वहां पर जाललगा कर उन वच्चों को अपने जाल में फँसालिया इतने में वह कपोत और कपोतिनीभी अपने वृक्षपर आगये उन्हों ने अपने वच्चों को जाल में बंधायमान जब देखा तब वह दोनों रुदन करनेलगे स्नेह के वश में प्राप्तहोकर दोनों रोनेलगे बहुतसा विलाप करके क-पोतिनी ने कहा जिसकी सन्तति कष्टको प्राप्त होकर मारीजाय उसका जीने से मरनाही अच्छा है ऐसे कहकर कपोतिनी तिसी जाल में गिरपड़ी तिसको भी फन्दक ने बांध लिया तब कपोत वड़ा दुःखी हुआ कपोत ने विलाप करके कहा जिसका कुटुम्ब नष्टहो-जाय तिसका मरनाही अच्छा अब मैं अकेला जीकर क्या करूंगा ऐसा कहकर वह कपोत भी तिसी जाल-

में गिरपड़ा तिसको भी फन्दक ने बांधलिया और सब कपोतों को लेकर तिसने [illegible] हे राजन्! स्नेह के वश में प्राप्त होकर वह कपोत कपोतिनी मारेगये स्नेहही जीवों के जन्म मरण का हेतु है और स्नेह का त्याग परलोकरूपी सुखका हेतुहै जो स्नेह का त्याग मैंने कपोत से ग्रहण कियाहै इसलिये मैंने कपोतको भी गुरु बनाया है॥ ८॥ हे राजन्! जैसे अजगर एक स्थान में पड़ा रहता है अपने भोजन के लिये यत्न नहीं करता है जो कुछ तिसको दैवयोग से प्राप्त होजाता है उसीसे संतुष्ट रहता है तिससे अधिक की इच्छा को नहीं करता है सो हम भी शरीर के योग क्षेमकी इच्छा को नहीं करते हैं यह गुण हमने अजगर से लिया है इसलिये हम अजगर को भी गुरु करके मानते हैं॥ ९॥ हे राजन्! हजारों नदियें समुद्र में जाकरकेही मिलती हैं परन्तु समुद्र अपनी मर्यादा से डुलायमान नहीं होता है तैसे विद्वान्‌काभी मन अनेकप्रकारके विषयों के प्राप्त होनेपरभी डुलायमान नहीं होता है सो मनको अडोलरखनारूपी गुण हमने समुद्र से लिया है इस

लिये समुद्र को भी हम गुरुकरके मानते हैं ॥१०॥
हे राजन्! जैसे पतंग रूपको देखकर अग्निमें भस्म
होजाता है और फिर तिसका निशान भी नहीं मि-
लता है तैसे सुंदर स्त्री के रूपको देखकर पुरुष का
मन भी तिसी में लीन होजाता है और संसार की
तिसको कोई भी खबर नहीं रहती है सो मन को
आत्मा में लीन करदेना ही मुक्तिका साधनहै मनको
लीन करदेना रूप गुण हमने पतंग से लियाहै इसी
कारणसे हमने पतंगको भी अपना गुरु बनायाहै ॥११॥
हे राजन्! जैसे भ्रमर एक पुष्प से ज़रासा रस लेकर
फिर दूसरे पुष्पसे लेता है इसीतरह करके अर्थात
थोड़ा २ रस लेकर बहुतसे मधु को इकट्ठा करलेता
है तैसे हम भी हरएक गृह से एक २ ग्रास को ले-
कर अपने उदरको भरलेते हैं यह गुण हमने भ्रमर
से याने मधुमक्षिका से लियाहै इसलिये तिसको भी
हमने गुरु बनायाहै ॥ १२ ॥ और मक्षिका जब कि
बहुत सा मधु जमा करलेती हैं तब शिकारी उन को
मारकर मधु सब उनसे छीन कर लेजाताहै और वह
मक्षिका बड़े २ कष्टोंको उठाकर मधु को जमाकरती

हैं इसीतरह मनुष्य भी बड़े २ कष्टोंको उठाकर प-
दार्थों को इकट्ठा करता है यमराज आकर तिस को
जब लेजाता है तब उन पदार्थों को कोई दूसरा
ही आकर लेजाता है संग्रह करने से महान् कष्ट हो-
ता है असंग्रह में ही महान् सुख है सो असंग्रह क-
रना रूपी गुण हमने मधुमक्षिकासे लिया इसलिये
वह भी हमारी गुरु है ॥ १३ ॥ हे राजन् ! काम करके
मदांध हुआ हस्ती कागजों की हस्तिनी को देख-
कर गड्ढे में गिरपड़ता है और फिर जन्मभर सैकड़ों
लोहे के अंकुशों को अपने शिरपर सहन करता है
तैसे ही कामातुर पुरुष भी स्त्री को देखकर संसार
रूपी गड्ढे में गिर पड़ते हैं और जन्मभर उनके अं-
कुशोंको खाते रहते हैं स्त्री का त्यागरूपी गुण हमने
गजसे अंगीकार किया है इसलिये तिसको भी हम
गुरु करके मानते हैं ॥ १४ ॥ हे राजन् ! मृग जो हि-
रन है तिस को राग सुनने का बड़ाभारी व्यसन है
और रागके पीछे ही वह अपने को वधायमान भी
करालेता है तैसे कामी पुरुष भी सुंदर स्त्रियों के गा-
यन को सुनकर अपने को बंधनमें डाल लेता है सो

श्रोत्र इन्द्रियं का विषय सुंदर गायन है तिसको वं-
धन का हेतु जानकर तिसका त्यागरूपी गुण हमने
मृग से लिया है इसलिये मृगको भी हमने गुरु ब-
नाया है ॥ १५ ॥ हे राजन्! जैसे मछली आहार के
लोभ से कुंडी में फँसजातीहै तैसे ही आहार के लोभ
से पुरुष भी परतंत्र होजाताहै और परतंत्र होकर अ-
नेक प्रकार के दुःखोंको उठाता है सो आहारके लिये
लोभका त्याग हमने मछली से सीखा है इसलिये म-
छली को भी हम गुरुकरके मानते हैं ॥ १६ ॥ हे
राजन्! निराशतारूपी गुण हमने वेश्या से लिया
है सो दिखाते हैं किसी नगर में पिंगला नामकरके
एक वेश्या रहती थी सन्ध्याके समय में वह नित्यही
शृङ्गार कर के अपने द्वारपर बैठ रहती थी एक
दिन सन्ध्या के समय से बहुत सी रातगई तक
वह अपने द्वार पर ग्राहक की आशा पर बैठी रही
जब कि कोई भी पुरुष तिसके पास न आया तब उठ
कर भीतर चली गई थोड़ी देरके पीछे पुरुषकी आशा
पर फिर बाहर निकल आई इसी प्रकार करते
तिसको बहुत सा काल जब कि व्याकुल होगया तब

तिस के मनमें आया धिक्कार है हमको और हमारे इस पेशे को जो व्यभिचारकर्म के लिये मैं कभी बाहर और कभी भीतर जाती हूं यदि मैं परमेश्वर के मिलने की इतनी आशा लगाती तब क्या जाने मेरे को क्या उत्तम पदवी प्राप्त होती ऐसा विचार करके जब कि वह निराश होगई तब वह सुख से सोरही यह निराशतारूपी गुण हमने वेश्यासे ग्रहण किया है इस लिये वेश्याको भी मैंने गुरु बनायाहै और योगवासिष्ठ में भी आशा कोही बंधनरूप करके कहाहै ॥

आशाया ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य ॥
आशा येषां दासी तेषां दासायते विश्वम् १
तेनाधीतं श्रुतं तेन तेन सर्वमनुष्ठितम् ॥
येनाशाः पृष्ठतः कृत्वा नैराश्यमवलम्बितम् २
ते धन्याः पुण्यभाजस्ते तैस्तीर्णःक्लेशसागरः ॥
जगत्संमोहजननी यैराशाऽऽशीविषीजिता ३

संसार में जो पुरुष आशा के दास होरहे हैं अर्थात् जिन्होंने स्त्री पुत्र धनादिकों की प्राप्तिकी और चिरजीने की आशा लगाई है उनको सब लोगों का

दास होना पड़ता है और आशाको जिन्होंने अपनी दासी बनालिया है संपूर्ण विश्व उनका दास बन-जाता है ॥ १ ॥ उसी पुरुषने संपूर्ण शास्त्रोंका अध्ययन कर लियाहै और उसीने सर्वशास्त्र का श्रवण भी कर लिया है जिसने आशा को पीछे हटाकर निराशता को अंगीकार करलिया है ॥ २ ॥ संसारमें वही पुरुष धन्य हैं और वही पुण्यात्मा हैं जो दुःखरूपी संसार से तरगये हैं जिन्होंने जगत् को मोहकरनेवाली विष रूपी आशाका नाश करदिया है या इसको जीतकर अपनी दासी बनालिया है ॥ ३ ॥ आशाही जन्म मरण का हेतु है जो निराश होगये हैं वही मुक्त हुये हैं ॥ १७ ॥ दत्तात्रेयजी कहते हैं हे राजन्! कुररनाम करके एक पक्षी होता है कुररपक्षी को कहीं से एक मांसका टुकड़ा मिला तिसको लेकर वह आकाशमार्ग से इस उम्मैदपर उड़ाजाता था कि कहीं पर बैठकर इसको खाऊंगा तिस-पक्षीके मुख में पकड़े हुये मांस के टुकड़े को देखकर और भी पक्षी तिसको छीनने के लिये तिसके पीछे दौड़े और उसको मारने लगे उस कुररपक्षी ने देखा इस मांस के टुकड़े के लिये

सब पक्षी मेरेको मारते हैं उसने तिसमांसके टुकड़ेको भूमिपर फेंकदिया तब पक्षियोंने भी तिस को मारना छोड़दिया और वह भी मार खानेसे बचगया इसप्रकार पुरुष ने भी जबतक भोगों को पकड़रक्खाहै तबतक तस्करादिकों की मारको पड़ाखाताहै जब त्याग कर देता है उनकी मारसे बचजाताहै सो भोगोंका त्याग रूपी गुण मैंने कुररपक्षी से लिया है इसलियें मैं तिसको भी गुरु करके मानताहूं ॥ १८॥ दत्तात्रेयजी कहतेहैं जैसे दूध पीनेवाले बालक को किसी प्रकार की भी चिन्ता नहीं होती दूध को पानकरके अपने आनन्द में मग्न होकर वह पड़ा है और आनन्द से हँसताही रहताहै तैसे भिक्षाके अन्नको भोजन करके हम भी चिन्ता से रहित होकर पड़े रहते हैं यहगुण हम को दूधपीनेवाले बालक से मिला है इसलिये तिसको भी हमने गुरु बनाया है ॥ १९॥ किसी ग्राममें ब्राह्मणकी कन्याही अकेली घर में थी उस दिन तिसके माता पिता किसी कार्य्य के लिये कहीं को गयेथे एक भिक्षुक ने आकर उस ब्राह्मण के द्वार पर हरिनारायण का शब्द किया कन्या ने भिक्षुक से

कहा ठहरो मैं भिक्षाको देती हूं ऐसे कहकर वह धान को कूटने लगी तब उसके हाथमें जो कांचकी चूड़ी पहिनेथी वे छन २ शब्द करनेलगीं चूड़ियों के शब्द होने से तिसको लज्जा आई तब वह उनको एक २ करके उतारने लगी जब कि तिसके हाथों में एक २ ही चूड़ी रहगई तब शब्द होना भी बन्द होगया वहांपर दत्तात्रेयजीने कहा ॥

वासो बहूनां कलहो भवेद्वार्त्ता द्वयोरपि ॥
एकाकीविचरेद्विद्वान्कुमार्याइवकंकणः १

बहुतसे पुरुषोंका सहवास होने से परस्पर कलह होता है और दो पुरुषों के इकट्ठा रहने से बातेंहोती हैं इसलिये विद्वान् को अकेलाही रहनाचाहिये कुमारी कन्या के कंगन की तरह दत्तात्रेय जी कहते हैं हे राजन्! अकेलारहना यह गुण हमने कुमारिकन्या से लिया है इस लिये तिसको भी हमने गुरु बनाया है ॥ २० ॥ जैसे सर्प अपना घर नहीं बनाता है किन्तु बने बनायेही दूसरों के घरों में रहता है तैसे हमभी अपना घर नहीं बनाते हैं किन्तु बने बनाये स्थानों में हम रहते यह गुण हमको सर्प से मिला

है इसलिये सर्प को भी हमने गुरु माना है ॥ २१ ॥ किसी नगर के बाजार के बीच में अपनी दूकानपर बैठकर एक बाणवाला बाण को बनाता था उस के आगे से होकर राजाकी सवारी निकली उसकी दृष्टि राजाकी सवारी पर न गई क्योंकि वह बाणको सीधा करने के लिये एकही दृष्टि से देख रहाथा जब कि राजाकी सम्पूर्ण सेना तिसके आगे से होकर निकल गई तब पीछे से एक सवार ने आकर उस से पूछा इधर को राजाकी सवारी गईहै उसने कहा हम नहीं जानते हैं क्योंकि हमने उसको देखाही नहीं है दत्तात्रेयजी कहते हैं हे राजन्! उसका मन बाण में ऐसा एकाकारहुआथा कि सामने से जातीहुईभी राजा की सवारी को उसने नहीं देखाथा सो मनका एकाकारकरना यह गुण हमने उस बाणवाले से लिया है इसलिये तिसको भी हमने गुरु बनाया है ॥ २२ ॥ हे राजन्! जैसे मकड़ी एक जीव छोटा सा होता है वह अपने मुख से जाले को निकालकर फिर उसी में फँसजाता है तैसे जीवभी अपने मन से अनेकप्रकार के सङ्कल्पों को रचकर फिर आपही उन में फँसजा-

ता है मनके सङ्कल्पोंका त्याग हमने मकड़ीसे सीखा है इसलिये मकड़ी को भी हमने गुरु बनाया है ॥ २३ ॥ भृंगी एक जीव होता है वह एक कीट को पकड़कर अपने घोंसले में लाकर अपने सम्मुख रख कर तिसके सामने शब्द को करताहै वह कीट तिसी भृंगके शब्द को सुनते २ भृंगीरूप होकर फिर तिस भृंगी से मोह को त्यागकर उड़जाता है तैसे हम भी इस देह में आत्मा का ध्यान करके आत्मरूप होकर देह में मोह को नहीं रक्खा है ॥ २४ ॥ दत्तात्रेय जी कहते हैं हे राजन्! मेरेको २४ गुरुओंसे परमार्थ का बोधहुआ है इसलिये मैं अब अपने स्वरूप मेंही आनन्द को प्राप्तहोकर संसार में जीवन्मुक्त के सुखको अनुभव करताहूं इसी से मैं चिन्ता से रहित होकर और निर्द्वन्द्व होकर विचरताहूं ॥ दत्तात्रेयजी केउपदेशसे राजाको भी आत्माका लाभहुआ और राजा भी मोह से रहित होकर अपने घरको चलागया दत्तात्रेयजी फिर अपना पृथ्वीपर्यटन करनेलगे और पृथ्वीपर जिन २ स्थानों में उन्हों ने चतुर्मासमें निवास किया है वह स्थान इदानींकाल में तीर्थरूपहो

कर पूजेजाते हैं जैसे गोदावरीके किनारे पर नासिक से कुछदूरपर उनका स्थान है और गिरनार पर्वत में है कारमीरमेंहै और भी अनेक पर्वतोंमें उनका स्थान है दत्तात्रेयजी के चरित्र से यह वार्त्ता साबितहोतीहै जितना २ गुण जिससे जिसको मिलजाये उतने २ गुणका वह गुरु है चाहे व्यवहारको सुधारनेवाला गुणमिलै चाहे परमार्थ को सुधारनेवाला गुण मिलै गुण सबसे लेना चाहिये और कानफूककरके भेट लेने वाले का नाम गुरु नहीं है यह अन्धपरम्पराहै पुजारियों ने जीविका के लिये यह विद्या निकालीहै बस दत्तात्रेयजी मेंही अवधूती के पूरेपूरे साधनघटते थे और ज्ञान वैराग्य की भी वह अवधि थे मुमुक्षु पुरुषों को उचित है कि दत्तात्रेयजी की तरह गुणों को ग्रहण करके परमपदको प्राप्त होने के लिये यत्न को करें ॥ १ ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्दसमाख्याश्रयेणस्वामिदत्तात्रेयजीवनचरित्रंमध्यदेशीयभाषायां कृतंसमाप्तम् ॥

# अथ शुकदेवजीका जीवनचरित्र ॥

हिमालय पर्वत में काश्मीर से सत्तरकोस दूर जहां पर कि बारहों महीना वर्फ गिरतीहै वहांपर एक अमरनाथ नाम करके तीर्थ प्रसिद्ध है वह स्थान इसतरह से बना है वहांपर एक गुफाहै उस गुफा में एककाल में महादेवजी पार्वती जीके प्रति अमरकथा को सुनारहेथे और सुग्गा भी कहींसे आकर महादेव जीकी चौकीके नीचे चुपचापसे बैठरहा पार्वती कथा को सुनते २ सोगई सुग्गा जिसका दूसरा नाम शुकहै पार्वतीजीकी जगा हूं हूं करतारहा जब कि पार्वतीकी नींदखुली तब पार्वती ने कहा महाराज मैंने समग्र कथा नहीं सुनी है महादेवजीने कहा यह हूं हूं कौन करताथा पार्वती ने कहा मैं नहीं जानती हूं कि यह हूं हूं कौन करताथा तब महादेवजी इधर उधर देखने लगे इतने में महादेवजी की चौकी के नीचे से निकल कर शुक उड़ गया तब महादेव जी त्रिशूल लेकर तिसके मारने को दौड़े वह तो अमरकथाको सुनकर अमर होई चुकाथा वह भागकर व्यास भग-

वान् की स्त्री के उदर में प्रवेशकर रहा और व्यास भगवान्जी की स्त्री के गर्भ रहगया जब दशवांमहीना पूरा होचुका तब भी उसने जन्म न लिया इसी तरह बारहवर्ष तक वह माताके उदर में ही बैठारहा माता को अतिकष्ट भी होताथा तब भी वह बाहर संसार में आने को पसंद नहीं करताथा क्योंकि उसने अमर-कथा को महादेवजी से सुनाथा इसी हेतु से उसको गर्भ में पूर्वले अनेक जन्मों के दुःखों का स्मरण हो आया था उसी से उसका मन वैराग्य से पूर्ण होगया था और तिसको यह भी मालूम था कि जन्मकाल में जीव को माया आच्छादन करलेती है तब गर्भ-वाली जो कि पूर्वले जन्मों की स्मृतिहै वह सब भूल जाती है इसीसे वह जन्मको नहीं लेताथा जब कि माताको बहुत कष्टहुआ तब व्यास भगवान्जीने देव-ताओंका आवाहन किया देवता सब आये और इस हालको देखकर शुकदेवजी से देवताओंने कहा आप जन्म लीजिये आपकी माता बड़े कष्टको प्राप्त होरही है वरना तुम्हारी माता इस कष्टसे मृत्यु होजायगी तब तिसके साथही तुम्हारा भी मरण होजायगा शुकदेव

जीने कहा जबतक पुरुष माता के गर्भ में बैठा रहता तबतक इसको पूर्णवैराग्य बना रहता है क्योंकि पूर्वले अनेक जन्मोंके दुख इसको याद आते रहते हैं जन्म लेनेसे सब वह भूल जाते हैं क्योंकि ईश्वरकी माया इसको मोहन करलेती है शुकदेवजी कहते हैं हे देव- तो मैं अपने पूर्वले जन्मों के दुखों को तुम्हारे प्रति सुनाता हूं उनको सुनकर फिर तुम हमारे जन्मलेने का उपाय करना शुकदेवजी कहते हैं एक काल में मैंने गर्दभीसे गर्दभका जन्म लिया जब मैं बड़ा हुआ तब एक धोबीने मुझको ख़रीद लिया वह धोबी प्रा- तःकाल में उठकर गर्म २ तीन चार लादी नित्यही मेरी पीठपर लाद देता था उन लादियों की गर्मी से जब कि मेरी पीठ जलती थी तब मैं कूदने लगता और लादियों को फेंकदेता तब धोबी मेरे को दोचार डंडे लगाता और फिर लादियोंको मेरी पीठपर लाद- कर ऊपर आपभी सवार होजाता मैं बड़े कष्ट से ति- सको घाटपर लेजाता इसीतरह मैं नित्यही कष्ट को प्राप्त होता था कुछ दिनों के पीछे मेरी पीठपर घाव होगया तब भी वह धोबी लादियों को लादेही जाता

था और मैं अत्यन्त कष्टको प्राप्त होता था एक दिन रात्रिके समय में बड़ा पानी बरसा तब रास्तामें बड़ा कीच होगया और जिस रास्ता में मैं जाता था तिस रास्ता में एक बड़ाभारी नालाथा एक दिन सन्ध्या के समय में लादीको लादेहुये जब कि मैं तिस रास्ता में आया तब उस नालामें गलेतक मैं धँसगया बहुतसा ज़ोर मैंने निकलने को लगाया परन्तु निकल नहीं सका और धोबी भी निकाल चुका तब भी मैं निकल नहीं सका तब धोबी तो सब लादियों को उतार कर अपने घरमें लेगया और मेरेको उसी कीच में फँसा-हुआही छोड़गया लोगोंने मेरी पीठको पुल बनालिया अर्थात् मेरी पीठपर पांवको रखकर पार उतर आने-जानेलगे बस उसी दुखसे मेरे प्राण निकलगये फिर मेरा घोड़े का जन्महुआ जब कि मैं बड़ा हुआ तब एक भांड़ने मेरे को ख़रीद लिया और अपना सब सामान मेरे ऊपर लादकर ऊपर आपभी सवार होकर वह दिनभर ग्रामों में जाकर भीख मांगा करता रात्रि को आकर कभी मुट्ठीभर घास मेरे आगे डालता और कभी न डालता मैं भूखाही रहजाता उसके यहां मेरे

को दो कष्ट हुये एक तो पेट भरकर खानेको न दे दूसरा दिनभर मारताही रहे ॥ मार और भूखके मारे मैं अत्यन्त दुःखी होकर मरगया फिर मेरा कूकर का जन्महुआ तब मेरेको खानेको भी नहीं मिलता था दिनभर टुकड़े के लिये लोगोंकी लांठियों को मैं खाता रहता जब कोई पुरुष ज़रासा भी टुकड़ा हमको दिखाता तब पूँछ हिलाकर उसके पास दौड़ाजाता फिर जब कि वह लाठीको दिखाता तब मैं भागजाता दिन भर मेरी यही दुर्दशा होती थी फिर अकाल पड़गया तब अन्नके न मिलने से मैं कईएक दिनोंतक भूखा रहा अंतमें दूसरे ग्रामको चलदिया जब कि तिस ग्राम के समीप पहुँचा तब उस ग्राम के कूकरों ने आकर मुझे घेरलिया और वहांके कूकर सब मिलकर हमको काटनेलगे उन कूकरों में से एक कुत्ते ने आकर मेरे कान को काटलिया तब मैं वहांसे भागा परन्तु मेरे कान में घाव होगया फिर तिस घावमें क्रिमि पड़गये अंतमें कष्टको उठाकर मैं मरगया फिर मेरा जन्म चिचिड़ी का हुआ और मैं एक कुत्ते के कानपर चिपटगया एकदिन एक दूसरा कुत्ता आकर तिस कुत्ते

के साथ लड़ाई करनेलगा और उसने इस कुत्ते के कानको जो काटा जिसपर कि मैं बैठाथा आधा शरीर मेरा भी साथही कटगया उसी दुखसे मैं मरा पश्चात् बिलार के उदर से मेरा जन्महुआ अभी मैं छोटासा बच्चाही था जो बड़े विलारने एकदिन आकर मेरेको फाड़डाला तब मैं अति क्लेशित होकर मरा फिर मेरा जन्म पिस्सूका हुआ एकदिन एक आदमी के कुड़तेमें घुसकर मैंने तिसको काटा उसने मुझको पकड़कर उँगलियों से मींजकर गरम २ रेतेमें फेंक दिया उस रेते में बड़ाकष्ट उठाकरके मैं मरा इसीप्रकार और भी मेरे अनेक जन्महुये और सब जन्मों में मैंने दुख कोही अनुभव किया जन्म लेकर देहधारी कोई भी सुखी नहीं होता है फिर पूर्वजन्म के किसी पुण्य के प्रभावसे शुकका जन्म मेराहुआ तब मैंने महादेवजी के मुखारविन्दसे अमरकथाको सुना उसी अमरकथा के प्रभावसे मैं अब यहांपर प्राप्तहुआ हूं और पूर्वले अनेक जन्मों के दुखोंका भी मेरेको स्मरण होरहा है अब इसीकरके जन्मको नहीं लेताहूं जो यह जो पूर्वले अनेक जन्मोंकी स्मृति मेरे को होरही है वह सब

विस्मरण होजायेगी और मायाजाल में फिर मैं फँस जाऊंगा इस लिये मैं जन्मको नहीं लेताहूं देवतों ने कहा हे शुक जो तुमने कहाहै वह सब सत्यहै परंतु आपको जन्म तो लेनाही पड़ेगा क्योंकि जो माताके गर्भमें आताहै वह अवश्यही जन्मको लेताहै हेशुक जन्मको तुमलेवो और अपनी माताको कष्टसे छुड़ाओ माता पिताको क्लेशदेना पुत्रका धर्म्म नहींहै किंतु माता पिताको क्लेशसे छुड़ानाही पुत्रका धर्म्म है और जो तुमको मायाके आच्छादन करने का भय है सो हमने ईश्वरसे प्रार्थनाकी है तुम्हारे जन्म लेनेकाल में वह मायाको समेट लेवैंगे तुमको माया आच्छादन नहीं करसकैगी तुम्हारा वैराग्य पूर्ण रीतिसे बनाही रहेगा शुकदेवजीने इस वार्त्ताको अंगीकार कर के देवतों को विदा करदिया और जन्मको लेकर तिसी क्षणमें बनको चलदिया शुकदेवको वन की तरफ़ जाते हुये देखकर व्यास भगवान्‌जी पुत्रके मोहकरके व्याकुलहुये २ शुकदेवके पीछे दौड़े और बार २ पुकारनेलगे हेपुत्र अभी तुम्हारा बनकोजाना उचित नहीं है आगे शुकदेवजी मौनकियेहुये चले

जातेथे और पीछे २ व्यास भगवान् पुकारतेहुये चले जातेथे रास्तामें एक जलाशयथा उसमें बहुतसी स्त्रियां नग्नहोकर स्नानको कररहीथीं शुकदेवजीको समीप से जाते उन स्त्रियोंने लज्जासे ऊपर वस्त्रको न लिया जबकि व्यासजी उनके समीप पहुंचे तब उन स्त्रियों ने वस्त्रोंको ओढ़लिया तब व्यासजी ने स्त्रियोंसे कहा युवा पुरुषसे तुमने लज्जाको नहीं किया और हम वृद्धसे तुमने लज्जा करके वस्त्रको ओढ़लिया स्त्रियोंने कहा जिसको तुम युवा कहतेहो उसको तो स्त्री पुरुष का ज्ञानही नहीं है तब हम उससे लज्जाको कैसेकरें और तुमको तो स्त्री पुरुषका पूरा २ ज्ञानहै इसलिये तुमको देखकर हमने लज्जासे वस्त्रोंको ओढ़लिया है वहांसे जबकि आगेबढ़े तब फिर व्यासभगवान् पुत्र२ करके पुकारनेलगे और कहनेलगे हे पुत्र अभी वन को जानेका तुम्हारा समय नहीं है क्योंकि शास्त्रकी आज्ञा है प्रथम ब्रह्मचर्य्य आश्रमको आश्रयण करके वेदों का अध्ययन करना पश्चात् विवाहको करके संततिको उत्पन्न करना फिर वानप्रस्थाश्रमको प्राप्त होकर तदनन्तर संन्यासको ग्रहण करना कहाहै और

श्रुतिभी इसी अर्थको कहती है ॥ ब्रह्मचर्य्याद्गृहीभ वेद्गृहाद्वनीभूत्वाप्रव्रजेत् ॥ १ ॥ प्रथम ब्रह्मचारीबने पश्चात् गृही बने फिर वानप्रस्थहो तदनन्तर संन्यास को धारण करै हे पुत्र वेदकी आज्ञाको तुम उल्लंघन मतकरो व्यासजी कहते हैं हे पुत्र पुत्रोत्पत्तिके लिये मैंने बहुतसे जपतपादिकभी किये हैं क्योंकि जिसके पुत्र नहीं होता है उसको स्वर्गकी प्राप्तिभी नहींहोती है और तिसके पितृभी स्वर्गसे गिरायमान होजाते हैं क्योंकि उनको कोईभी पिंड और जलादिकोंका देने-वाला नहीं होताहै इसलिये हे पुत्र तुम प्रथम विवाह को करो शुकदेवजी कहते हैं हे पिता वेदमेंही लिखा है जिसदिन वैराग्यको प्राप्तहो उसी दिन संन्यासको धारण करले तथाच्श्रुतिः ॥ यदाहरेवविरजेतदाहरेव प्रव्रजेत् ॥ वेदमें क्रम संन्यास और अक्रमसंन्यास दोनों कहे हैं और दोनोंमें वैराग्यकोही कारण कहाहै विना वैराग्यसे संन्यासका धारण करना नहीं कहाहै नियमको कारण नहीं कहा है क्योंकि ऐसा नियम कर दियाहै चारों आश्रमोंमेंसे जिस आश्रममें वैराग्य होजाय उसी आश्रममें संन्यासको धारण करले यदि

ब्रह्मचर्य्यादि तीनोंआश्रमों में वैराग्य नहो तब संन्या-
सकोभी धारण न करै जिसको प्रथमहीं आश्रम में
वैराग्य होजाय उसको फिर गृहस्थाश्रम में जानेकी
कोईभी आवश्यकता नहीं है और पुत्रके उत्पन्न करने
सेभी गति नहीं होती है यदि पुत्रके उत्पन्न करने से
ही गति होती तब जोकि ब्रह्मचर्य्यावस्थासेही संन्यास
को धारण करलेते हैं उनकी गति न होनी चाहिये
और जिनके बहुतसे पुत्र कुकर्मी होतेहैं उनकी गति
होनी चाहिये और कूकर सूकरादिकों केभी बहुत से
पुत्र उत्पन्न होते हैं उनको भी स्वर्गकी प्राप्ति होनी
चाहिये ऐसा तो नहीं होसक्ताहै इसलिये पुत्रसे गति
नहीं होतीहै और फिर वेदमें वैराग्यवान्के लिये पुत्रा-
दिकोंका त्याग करदेनाही लिखाहै बस इन्हीं हेतुवों
से पुत्रभी बन्धनकाही कारण है हे पिता बन्धनों का
मूल कारण स्त्रीही है क्योंकि स्त्रीकेही संगसे पुरुषोंको
अनेक प्रकारके कष्ट प्राप्तहुये हैं और सदैवकाल
होतेही रहते हैं और ब्रह्मा विष्णु महादेवादिक जितने
बड़े २ देवता हुये हैं इन सबको स्त्रीके संगसे महान्
क्लेश प्राप्तहुये हैं ॥ इसी हेतुसें पुरुषके लिये स्त्रीही
बन्धनका रूपहै ॥

नरस्यबन्धनार्थाय शृंखला स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥
लोहबद्धोपिमुच्येत स्त्रीबद्धोनैवमुच्यते ॥ १ ॥

पुरुषको बांधने के लिये स्त्रीकोही शृंखला कथन कियाहै लोहेकी शृंखलसे पुरुष छूटभी सक्ता है परंतु स्त्रीरूपी शृंखल करके बन्धायमान हुआ पुरुष नहीं छूटसक्ता है १ ॥

जानामिनरकंनारीं ध्रुवंजानामिबन्धनम् ॥
यस्यांजातोरतस्तत्र पुनस्तत्रैवधावति ॥ २ ॥

शुकदेवजी कहतेहैं हम स्त्रीकोही नरकरूप करके जानते हैं और फिर निश्चय करके तिसीको बन्धन रूप करकेभी हम जानतेहैं जिसयोनिसे उत्पन्न होता है तिसमें फिर प्रीतिवाला भी होताहै ॥ २ ॥

मूत्रशोणितदुर्गंधे ह्यमेध्यद्वारदूषिते ॥
चर्मकुण्डेयेरमन्तिते लिप्यन्तेनसंशयः ॥ ३ ॥

मूत्र और रुधिर तथा दुर्गंधि और अमेध्य वस्तुओं करके युक्त जो स्त्रीका योनिद्वारहै वह मानो चर्म का एक टुकड़ा है उसमें जो रमण करते हैं वह उसी में लिप्यमान होजाते हैं इसमें संशय नहीं है ॥ ३ ॥

भगादिकुचपर्यंतं सम्बन्धिनरकार्णवम् ॥
येरमन्तिपुनस्तत्र तरंतिनरकंकथम् ॥ ४ ॥

शुकदेवजी कहते हैं भगसे लेकर कुचों पर्य्यन्त जितने कि स्त्रीके अंग हैं उसको तुम नरकका समुद्र करके जानो जो पुरुष बार २ तिसीमें रमण करते हैं वह नरकसे कैसे तरसक्तेहैं किंतु कदापि नहीं ॥ ४ ॥

स्त्रीणामवाच्यदेशस्य क्लिन्ननाड़ीव्रणस्यच ॥
अभेदेऽपिमनोभेदाज्जनःप्रायेणवंच्यते ॥ ५ ॥

स्त्रियोंका जो अवाच्य देशहै याने योनिस्थान है वह एक गीले व्रण याने घावकीतरह या फटेहुये फोड़ेकीतरह है वह आप अभेद न होकरके भी पुरुषों के मनको भेदन करदेताहै इसीहेतुसे पुरुष प्रायः करके उसीमें ठगजाते हैं ॥ ५ ॥

मुनेरपिमनोऽवश्यं सरागंकुरुतेऽङ्गना ॥
जितेन्द्रियस्यकावार्त्ताकिंपुनश्चाजितात्मनाम् ॥६॥

शुकदेवजी कहते हैं हे पिता जितेन्द्रियमुनिके मनकोभी स्त्री रागके सहित करदेती है फिर जो अजितेन्द्रिय पुरुष हैं तिसकी क्या वार्त्ता है तिसको तो

पूरा २ पशु बना लेती है ॥ ६ ॥ फिर कहते हैं हे पिता जन्म मरणरूपी संसारका बीज कारण स्त्रीही है और अनेकप्रकार के दुःखोंकी खानि भी है इसीलिये मैं विवाह को नहीं करताहूं हे पिता विष्णुको स्त्रीके शापकरके शिला होनापड़ा और स्त्रीके संगसे इन्द्र को सहस्रभगका शापहुआ नहुषराजा स्वर्गसे गिराया गया और स्त्रीके पीछे रावणका सम्पूर्ण कुल नाशहो-गया महाभारत भी द्रौपदी केही पीछे हुआ है और स्त्री के पीछेही बृहस्पति और चन्द्रमा का बड़ा विरोध हुआ स्त्रीके पीछेही ब्रह्माको भी शरीरका त्याग करना पड़ा और महादेवजी को भी बड़ाकष्ट हुआ और कै-केयी स्त्री के पीछे राजादशरथ को शरीरकाही त्याग करना पड़ा स्त्री के पीछेही बालि भी मारागया और नारदजीका बन्दरका मुख होगया और स्त्रीके पीछेही दश हज़ार कीचक भीमसेन के हाथसे मारेगये एक स्त्रीके पीछे शुम्भ निशुम्भ भी मारेगये॥ और महिषा-सुर भी स्त्रीकीही इच्छासे मारागया और स्वयंवरों में परस्पर कटकर हज़ारों राजा मारेगये हैं ॥ हे पिता मैं विवाहको नहीं करूंगा शुकदेवजीके वैराग्यकी बातों

को सुनकर व्यास भगवान् विचार करनेलगे अब क्या करनाचाहिये थोड़ी देरतक विचार करके फिर व्यास भगवान्ने कहा हे पुत्र विना आत्मवित् गुरु के उपदेश से पुरुष को आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है यदि आपकी इच्छा विवाह करनेकी नहीं है तब जनकजी बड़े ज्ञानी हैं उनके पास जाकर आत्मविद्या का उपदेश लीजिये क्योंकि केवल वैराग्यसे चित्तकी शान्ति और मोक्षसुख की प्राप्ति पुरुषको कदापि नहीं होती है मेरे वचनको मानकर आप जनकजीके पास जाइये व्यास भगवान् जीके वचन को मानकर शुकदेवजी राजाजनकजी के पास गये जाकर प्रथम तिसके द्वारपर खड़े होकर जनकजीको भृत्य के हाथ अपने आनेका संदेशा भीतर भेजा शुकदेवजी के आनेकी खबरको सुनकर जनकजीने शुकदेवजी को भीतर बुलाया जब कि शुकदेवजी भीतर गये तब देखा कि जनकजी एक स्वर्ण के सिंहासनपर बैठेहुये हैं और अप्सरा के तुल्य सुन्दर स्त्रियां जनकजी के चरणोंको दबारही हैं कोई तो चामर को डुलाती है और कोई सुगन्धियों को जनकजी के शरीरपर मल

रही है ॥ और कोई सुन्दर स्वरसे गान कर रही है जनकजी के ऐश्वर्य को देखकर शुकदेवजी के मनमें फुरा पिताने तो हमसे कहा है वह पूर्ण ब्रह्मवित् हैं यह तो महान् प्रवृत्तिवाले हैं यह ब्रह्मवित् कैसे हो-सक्ते हैं ऐसा जब कि शुकदेवजी के मनमें सङ्कल्प हुआ तब जनकजी योग के बलसे तिसको जानगये और शुकदेवजीके प्रति अपनी असंगता दिखलानेके लिये तिसकालमें जनकजीने ऐसी मायारची जो मि-थिलापुरी को आग जलानेलगी और बाहर से एक दूतने आकर जनकजीसे कहा महाराज मिथिलापुरी में आग लगगई है और आपके अन्तःपुरमें भी अब अग्निने प्रवेश करदिया है और आपके मन्दिरों को जलारही है दूत की वार्त्ता को सुनकर जनकजी कहते हैं ॥

अनन्तवत्तुमेवित्तंयस्यमेनास्तिकिञ्चन ॥
मिथिलायांप्रदग्धायांनमेदह्यतिकिंचन ॥ १ ॥

जनकजी कहते हैं मेरा जो आत्मारूपीवित्त याने धन है सो अनन्तहै अर्थात् नाशसे रहित है यह जो नाशवान् मिथिला के पदार्थ हैं इनमेंसे तो मेरा कोई

भी नहीं है मिथिला के दग्ध होनेसे मेरा तो कुछ भी दग्ध नहीं होता है १ जनकजीकी ऐसी असङ्गताको देखकर शुकदेवजी के चित्तकी घृणा दूर होगई अग्नि भी सब शान्त होगई क्योंकि वहभी सब मात्रही थी तब शुकदेवजी ने जनकजी से कहा मेरे को आप के पास पिताने भेजाहै उपदेश लेनेके लिये आप हम को उपदेश दीजिये जनकजी ने कहा आपके पिता ब्रह्मज्ञानीहैं आपने उनसे उपदेशको क्यों नहीं लिया शुकदेवजी ने कहा मुझसे पिता विवाह करने के लिये कहते थे मैंने पितासे कहा मैं विवाहको नहीं करूंगा और न मैं गृही बनूंगा जिसलिये पुरुषों को गृह जो है सो ग्रसलेता है अर्थात् क़ैद कर लेता है और जैसे क़ैदख़ाने में अनेकप्रकार के कष्ट होतेहैं तैसे गृहस्थाश्रम में भी अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं इसलिये मैं गृही नहीं बनूंगा इस मनुष्य दुर्लभ शरीर को प्राप्त होकर और वेद शास्त्रोंका अध्ययन करके फिर भी जो स्त्री पुत्रादिरूप संसार में बन्धायमान होजाता है तब फिर मुक्त कौन होगा जैसा कि निस्पृह भिक्षु सुखी है वैसा इन्द्रभी सुखी नहीं है हे राजन् जब कि मैंने पिता

से ऐसे कहा तब फिर पिताने मुझसे कहा केवल वैराग्यसे चित्तकी शान्ति नहीं होती है चित्तकी शान्ति और परमपदकी प्राप्तिके लिये तुम जाकर जनकजीसे आत्मविद्याका उपदेश लेवो इसलिये पिता करके भेजा हुआ मैं आपके पास आयाहूं ॥ जनकजी कहते हैं ॥

नगृहंबन्धनागारंबंधनेनचकारणम् ॥
मनसायोविनिर्मुक्तोगृहस्थोपिविमुच्यते ॥ १ ॥

जनकजी कहते हैं हे शुकदेव यह गृह बन्धन का घर नहीं है और बन्धन करने में कारण भी नहीं है जो गृहस्थी मनकरके मुक्त है वह गृहस्थाश्रममें भी मुक्त होजाता है ॥

ब्रह्मचारीयतिश्चैव वानप्रस्थोव्रतस्थितः ।
गृहस्थंसमुपासंते मध्याह्नातिक्रमेसदा ॥ २ ॥

जिसकालमें दिनका मध्य होता है तब तिसकाल में ब्रह्मचारी यति वानप्रस्थ ये सब गृहस्थकेही द्वारपर जाते हैं इसलिये गृहस्थाश्रम सब आश्रमोंसे बड़ाहै २॥

इन्द्रियाणिमहाभाग मादकानिसुनिश्चितम् ॥
अदारस्यदुरन्तानि पञ्चैवमनसासह ॥ ३ ॥

तस्माद्दारान्प्रकुर्वीत तज्जयायमहामते ॥
वार्द्धकेतपआतिष्ठेदितिशास्त्रोदितंवचः ॥४॥

जनकजी कहते हैं हे शुकदेव हे महाभाग यह जो मनके सहित पांच इन्द्रिय हैं सो पुरुषोंमें मद्यको उत्पन्न करती हैं अर्थात् विषयों की तरफ़ उन्मत्त कर देती हैं जिसपुरुषकी स्त्री नहीं है उसके तो बड़े कष्ट करके भी निग्रह नहीं होसक्ती है ३ इसलिये इन्द्रियोंके जय करनेके लिये पुरुषको प्रथम विवाह करना चाहिये हे महामते वार्द्धकअवस्थामें तपको आश्रयण करै ऐसी देवकी आज्ञा है ४ सो तुमको जो पिता ने विवाह करनेको कहा है सो ठीक कहा है तुम प्रथम विवाह करके सन्ततिको उत्पन्न करो पश्चात् संन्यास को धारण करना क्योंकि जितने कि ऋषि मुनि हुये हैं उन सबने प्रथम विवाह किया है और जो गृहस्थाश्रम मेंही रहकर एकही आत्माको सर्वत्र पूर्ण देखताहै तिससे भिन्न सम्पूर्ण जगत् को मिथ्या देखता है और सबसे असंग होकर मोह ममतासे रहित होकर अपने घरमेंही रहताहै वही ज्ञानी है जनकजी से

आत्मविद्या को प्राप्त होकर शुकदेवजी ने आकर वि-
वाहको किया ऐसा तो देवीभागवत में लिखाहै और
शुकदेवजीने विवाह नहीं किया ऐसा अन्यत्र लिखा
है कल्पभेद से दोनों बन जावैंगे ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्दस-
माख्याधरेणशुकदेवजीवनचरित्रभाषायां
कृतःसमाप्तः ॥ २ ॥

## अब ऋषभदेवजीके जीवन-चरित्रको लिखते हैं ॥

नाभीनाम करके एक चक्रवर्ती और बड़ा धर्मात्मा राजा हुआ है तिसके गृहमें शुभ लग्नमें ऋषभदेवजीका जन्म हुआ था जिसकाल में ऋषभदेवजी पांचवर्ष के हुए तब पिताने इनको विद्या गुरुके पास अध्ययन करने के लिये बिठलादिया बीस वर्ष तक यह विद्या गुरुसे वेदों और शास्त्रोंका अध्ययन करते रहे और बीसवर्ष के अन्दर ऋषभदेवजी ने संपूर्ण अस्त्र शस्त्र विद्याका भी अध्ययन करलिया अर्थात् राज्यसम्बन्धी विद्यामें भी बड़े निपुण होगये और दैवी संपद् के जो गुण हैं वह सब तो जन्मसेही इनमें थे जब कि यह युवा अवस्था करके संपन्नहुये तब पिता ने इनका विवाह भी एक योग्य राजकन्या से करादिया जबतक इनके पिता जीतेरहे तबतक तो यह उनकी आज्ञाका पालन करतेरहे जिसकाल में इनके पिताका देहान्त होगया ॥ तब पिताके कर्मोंसे छुट्टी

पाकर राजसिंहासनपर यह विराजमान हुये और कुछ काल तक धर्म पूर्वक पृथ्वीकी पालना करतेरहे और राज्यसम्बन्धी भोगों को भी यह भोगतेरहे तब इनके गृहमें सौपुत्र उत्पन्नहुये उनमेंसे दश पुत्र तो क्षत्रियों के कर्मों को करके राजाहुये और नवपुत्र उनमें योगाऽभ्यासको करके योगीश्वर होगये और ८१इक्यासीपुत्र तप करके ब्राह्मण होगये उनमें से जो दश पुत्र क्षत्रियोंके कर्मोंको करके क्षत्रिय होगये थे उन्हीं दशोंको पृथ्वीका राज बांटकर ऋषभदेवजीने देदिया अर्थात् पृथ्वीके दशखण्ड याने दशहिस्से करके दश पुत्रोंको देकर आप वैराग्य से पूर्णहोकर वनको चलेगये अब नग्न होकर कौपीनमात्र को धारण करके अवधूत बनकर पर्वतों में और वनों में विचरने लगे और कभी २ ग्रामोंमें आकर अपने दर्शनसे लोगोंको भी पवित्र करते थे इसीतरह उनको विचरते २ जब कि कुछकाल व्यतीत होगया तब एकदिन ऋषभदेव जी जीवन्मुक्त होकर विचरते हुये वहांपर आनिकले जहांपर कि ब्राह्मणोंकी सभामें उनके ब्राह्मण पुत्र बैठे थे उस सभामें आकर ऋषभदेवजी ने अपने पुत्रों से

कहा हे पुत्रो यह मनुष्य शरीर स्त्री आदिक विषयोंके भोगने के लिये नहीं मिलता है क्योंकि यह जो स्त्री का भोग है सो तो कूकर सूकरादिकों कोभी मिलता है जो पुरुष स्त्री आदिक भोगोंमेंही आयुको व्यतीत करता है उनमें और कूकर सूकरादिकों से कुछ भी अधिकता नहीं है जोकि विषयी पुरुष हैं उनको स्त्री आदिकों का शरीर रमणीक प्रतीत होता है और जो कि वैराग्यवान् विचारशील हैं उनको स्त्रीका शरीर रमणीक नहीं प्रतीत होता है क्योंकि देखने मात्र से तो ऊपरसे सुन्दर प्रतीत होता है परन्तु बीचमें इसके हड्डी मांस चर्म मज्जा रुधिर येही सब भराहै कोइ भी इसमें रमणीक वस्तु नहीं है ॥ जिस हेतु से स्त्री का शरीर अपवित्र वस्तुओं का एक मन्दिर है इसी वास्ते महान् अपवित्र है क्योंकि नव ही द्वारोंसे इस के मल गिरता है ऐसा मलीन जोकि स्त्रीका शरीर है तिसको देखकर कामी पुरुष मोहको प्राप्त होते हैं ॥ और जोकि वैराग्यवान् विवेकी पुरुष हैं वह मोहको नहीं प्राप्त होते हैं ऋषभदेवजी कहते हैं हे पुत्रो स्त्री आदिक भोगों का त्याग करके मुक्तिका द्वार जो

वैराग्य है तिसको तुम आश्रयणकरो हे पुत्रो! स्त्री ही बन्धन का हेतु है और तमोगुणका कार्य है जिसके स्त्री है वही बन्धनमें है जिसके स्त्री नहीं है वह बन्धन में भी नहीं है तुम तमोगुण का त्याग करके सात्विकीगुणोंको धारणकरो जो पुरुष तामसी हैं या राजसी हैं वही स्त्री पुत्रादिकोंमें प्रीति को करतेहैं यह जीव आपही अपनी चतुराईसे मन और इन्द्रियोंकी प्रसन्नताके लिये परिश्रम को करताहै और मोहरूपी मदिराको पान करके पागलकी तरह कर्मोंके करनेमें प्रवृत्त होजाताहै पूर्वले जन्मोंमें विरुद्ध कर्मोंका फल रूपी शरीर इसको प्राप्त हुआ है जोकि सम्पूर्ण दुःखों की खानि है उन दुःखोंकी खानिसे छूटनेके लिये यत्न को नहीं करता है किंतु फिर भी वार २ कर्मोंकोही करता है इसीसे यह जीव पुनः २ तिरस्कार को भी प्राप्त होता है जबतक यह जीव कामना को लेकर कर्मों को करता रहेगा तबतक यह जन्म मरणरूपी संसारसे भी नहीं छूटैगा किंतु संसाररूपी चक्रमें पड़ाही रहेगा हे पुत्रो! जबतक यह जीव आत्मज्ञानकी तरफ़ से मूर्ख बना रहता है अर्थात् आत्मज्ञान के साधनों

को न जानकर मैथुन सुखकोही प्रधान मानता है और उसीकी प्राप्ति के लिये यत्नको करता है और मैथुन सुखकी प्राप्तिके साधनों में लगा रहता है तब तक कष्टसे भी महान् कष्टकोही प्राप्त होता रहता है और जबतक पुरुषके हृदयकी ग्रन्थी कर्मों करके बंधायमान रहतीहै तबतक तिसको आत्मज्ञान कदापि प्राप्त नहीं होता है और जो पुरुष विषय भोगों से उपराम होकर ज्ञानके साधनों में यत्न करता है उसी को आत्मलाभ की प्राप्ति होती है हे पुत्रो! वह पिता नहीं कुपिता है जोकि अपने पुत्रों को संसाररूपी बंधनमें फँसाता है और वह माता नहीं है कुमाता है जोकि अपने पुत्रों को संसारचक्र में डारती है वही सुष्ठुपिता माता हैं जोकि अपने पुत्रों को ज्ञानमार्गमें लगाकर संसारबंधन से छुड़ादेते हैं हे पुत्रो! तुम देवतों से तुच्छ कामनाको मत मांगो जिन साधनों करके वह देवता हुये हैं उन्हीं साधनोंको तुमभी करो देवतों में भी कुछ अधिकता नहीं है अधिकता उसी में है जिसने आत्मा को जानलिया है अर्थात् जिस को आत्मा का साक्षात्कार होगया है वास्तवसे वही

देवता है बल्कि देवताओं का भी वह शिरताज है हे पुत्रो! यह संसाररूपी बड़ाभारी दल २ है जैसे दल २ में फँसाहुआ हस्ती नहीं निकलसक्ताहै उसी में मरजाता है तैसे इस संसाररूपी दल २ में फँसा हुआ पुरुष पुनः २ जन्म मरणकोही प्राप्त होता है इसलिये तुमभी मोहरूपी दल २ से छूटने के उपाय को करो ऋषभदेवजी इसप्रकार पुत्रों को उपदेश करके अवधूत वृत्तिको धारण कियेहुये जड़वत् अन्धवत् पिशाचवत् अचिह्न होकर वन और पर्वतादिकों में फिर विचरने को चलेगये और इसी अवधूतवृत्ति मेंही ऋषभदेवजीने अपनी आयुको व्यतीत करादिया॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्द सभाख्यासरेणपिशावरनगरनिवासिनामध्यदेशीयभाषा यांकृतंऋषभदेवजीवनचरित्रंसमाप्तम्॥ ३॥

## अब जड़भरतजी के जीवनचरित्र को लिखते हैं ॥

---

भरतजी ऋषभदेवजी के उन दश पुत्रों में से थे जो कि कर्मों करके क्षत्रिय होगये थे इनको हिस्से में भी एक खण्ड पृथ्वी का मिलाथा जो कि इन्हीं के नाम से भरतखण्ड करके प्रसिद्ध है जिसमें कि हमलोग रहते हैं इसी खण्ड का नाम आर्य्यावर्त्तभी है प्रथम तो यह बहुत कालतक राज्य करते रहे पश्चात् जब कि इनके चित्त में वैराग्य उत्पन्नहुआ तब राज्य का त्याग करके वनको चले गये वन में जाकर गण्डकी नदी के तटपर कुटी बनाकर तपको करनेलगे जब कि तप करते २ इनको उसी नदीके किनारे पर कुछका-ल व्यतीत होगया और एकदिन प्रातःकाल में स्नान करके पद्मासन लगाकर नदी के किनारेपर यह बैठेथे कि इतने में नदी के ऊपरकी तरफ़ एक गर्भवती ह-रिणी नदी के तटपर पानी पीनेको आई और पानीमें मुखको लगाकर वह पीनेलगी इतने में एक सिंह के

गर्जने का शब्द तिसके कान में पहुँचा सिंहके शब्द को सुनकर भयभीत होगई और तुरन्तही नदी में कूदपड़ी जल में कूदतेही उसके उदर से बच्चा भी तुरन्तही नदी में गिरपड़ा हरिणी तो नदीको लंघन करके उस पार जातेही गिरकर मरगई और बच्चा बहता २ हुआ जहांपर कि भरत बैठेथे वहांपर नदीके किनारेसे लगगया तिस बच्चेको अनाथ देखकर भरत जीके मन में तिसपर बड़ी दया उत्पन्न हुई तिसको जल से निकासकर भरतजीने उसको अपनी कुटी में घासपर धरदिया और तिस मृगी के बच्चे की पालना करने लगे भरतजीका तिससे अतिमोह होगया जब कि बच्चा कुछ बड़ा हुआ तब इधर उधर कूदने लगा तब भरतजी तिसको सुन्दर सुन्दर खिलानेलगे ऐसा अतिमोह तिससे उनका होगया यदि वह एकक्षण-मात्रभी कहीं चलाजाताथा तब व्याकुल होजातेथे एक दिन वह मृगी का बच्चा कहीं बन में चलागया और लौटकर फिर इनके पास नहीं आया तब तिस के वियोग में यह बड़े दुःखी हुये अन्त में इन्होंने उसी के वियोग के दुःख में शरीर का भी त्यागही करदि-

या॥ तब उनका मृगका जन्महुआ अपने तपके प्र-
भाव से उनको अपने पूर्वले जन्मका स्मरण मृगश-
रीर में भी रहा उस मृगके बच्चे के साथ मोह करने
से तीनबार उनको मृगका शरीर धारण करनापड़ा
इसी पर एक कविने भी कहा है॥

दो० एक मृगाके कारणे भरतधरी त्रयदेह॥
वाके कौन हवालहैं जाके बड़े सनेह १

फिर इनका जन्म एक उत्तम ब्राह्मण के यहां पर
हुआ उस जन्म में भी इनको पूर्वलेजन्मोंका कष्ट सब
यादरहा इसी से इन्होंने बाल्यावस्थासेही मौनकोभी
धारण करलिया जब कि बड़ेहोगये तब अपनेको इन्हों
ने उन्मत्त की तरह बनाडाला घरका कोई भी काम
यह न करते थे इनके पिता ने इनको पागल जान
करके भी इनके संस्कार करवा दिये और भरतजी संग
दोषसे डरतेहुये मौनही रहतेथे और मनकरकेभी अति
उदासही रहते थे और अपने मनमें भरतजी ने यह
निश्चय करलिया था कि मोहही जन्म मरणका हेतु
है आगे हमने एक मृगके बच्चे से मोह करलिया था
तब तिसका फल यह हुआ कि हमको तीनबार मृग

का जन्मलेना पड़ा यदि अबकी बोलैंगे तब फिर स-म्बन्धी फँसादेवैंगे और किसी न किसी से मोह अव-श्यही होजायेगा इसलिये बोलनाही अच्छा नहीं है ऐसा जानकर भरतजी मौनही रहते थे और अपने को पागल बना रक्खा था जिसमें कि कोई भी पास न आवै जब कि भरतजीके माता पिता परलोकवास गये तब भरतजी के भाइयों ने भरतजी को खेतीकी निगाहबानी के लिये खेतमेंही बिठलादिया क्योंकि वह जानते थे आदमी को बैठा देखकर कोई भी खेत का नुक्सान नहीं करैगा भरतजी अपने आपमें मस्त होकर भयसे रहितहो उसी खेतमें बैठे रहा करते थे उसी जगह भाई उनको भोजन नित्य देआते और वह खालेते इसीतरह खेतमेंही बैठे उनको कुछकाल व्यतीत होगया जिस हेतु से इन्हों ने अपने को जड़ की तरह बना रक्खाथा इसी हेतुसे लोगों ने इनका नाम भी जड़भरत धरदिया जिस स्थानमें कि जड़भ-रतजी बैठे रहते थे वहां से थोड़ीदूर पर एक शूद्रों का राजा रहता था वह राजा एक दिन भद्रकाली की पूजा करने को चला और एक आदमी को अपने

साथ बलिदान करनेको लेचला जब कि राजा मंदिर के पास पहुँचा तब रात्रि अँधेरी थी वह आदमी भागगया राजाने तिसको खोजनेके लिये आदमियों को भेजा वह आदमी खोजते २ वहांपर पहुँचे जहांपर कि भरतजी बैठे थे जोकि भागगया था वह तो उन को नहीं मिला उन्होंने जड़भरतजी कोही पकड़लिया और देवीके मन्दिर में लेजाकर बलिदेनेको खड़ा कर दिया और खड्गको निकालकर देवीके सामने धरदिया प्रथम उन्होंने खड्गकी पूजाकी और पश्चात् अक्षत वगैरह भरतजीपर भी चढ़ाये जब कि बलि देनेकी तैयारीहुई उस कालमें भरतजी के मनमें किंचित् भी भय उत्पन्न न हुआ और न भरतजी को किंचित् शोकही हुआ जैसे पहले वह अपने आपमें मस्तथे वैसे ही फिर भी मस्त रहे और जिसप्रकार से पुजारियों ने भरतजी को देवी के सामने खड़ाकिया उसी प्रकार से वह खड़ेही रहे यत्किंचित् भी डुलायमान न हुये जिस कालमें पुजारीने खड्गको हाथ लगाया उसी कालमें देवीकी जोकि पाषाणकी मूर्त्तिथी वह फटगई और तिसमेंसे एकभयङ्कर रूपवाली चेतन देवी खड्ग

को हाथ में लिये हुये निकसी और उसने राजा के सहित पुजारियों को काटकर फेंकदिया उस काल में भी भरतजी को किंचित भी भय नहीं हुआ क्योंकि उनकी आत्मदृष्टि होरही थी सिवाय एक आत्मा के उनकी दृष्टिमें दूसरा कोई भी दिखाही नहीं था वह ब्रह्मरूपहीथे देवीने हाथ जोड़कर भरतजीसे विनती किया आप अपने स्थानमें पधारिये भरतजी उसी खेत में आकर बैठगये ऐसा प्रताप पूर्ण ज्ञानवान् का है थोड़ेही दिनोंके पीछे एकदिन रात्रिके समय सिंधुसौवीरपतिनामवाला राजा पालकी पर सवार होकर कपिलजीके दर्शन को जाताथा रास्तामें चलते २ एक कहार बीमार होगया उससे पाल्कीका उठाना कठिन होगया राजाने अपने आदमियोंसे कहा तुम जाकर कहींसे एक आदमीको खोजकरके लाओ वह राजाके आदमी खोजने को जो निकले तव उन्होंने हृष्टपुष्ट शरीर से जड़भरतजी को खेत में बैठेहुये देखा और अपने मनमें विचारा यह आदमी पालकी उठाने के लिये ठीकहै जड़भरतजीको पकड़कर वह लेचले जड़भरतजी भी उन्मत्त हस्तीकी तरह उनके साथ चल

घड़े पालकीके पास लेजाकर भरतजीके कांधेपर पा-
लकी को धरादिया भरतजी ने भी पालकी को उठा
लिया और कहारों के साथ २ चलनेलगे और ऊँचे
नीचे पांव रखनेलगे और कभी धीरे २ चलते और
कभी खड़े भी होजाते और भरतजी के उलटे पुलटे
पांव रखने से पालकी भी ऊँची नीची टेढ़ी सीधी
होने लगी राजाने प्रथम तो दो चारवार सीधा २
चलने के लिये कहा जड़भरतजी कब राजाकी
बातको सुनते थे एक तो कभी पालकी उठाई नहीं
थी दूसरे अपने आप में मग्न थे तब पालकी को
खड़ाकर राजा बड़ा क्रोध करके पालकी से उतर
पड़ा और भरतजीसे कहने लगा क्या तुम थकेमांदे
हो जो चल नहीं सक्तेहो क्या तुम बालकहो या बूढ़े
हो जो उलटे पुलटे चलते हो इतना कहने परभी
जड़भरतजीने राजाको आगे से कुछभी उत्तर को न
दिया किन्तु मौनही रहे तब फिर राजा ने क्रोध से
जड़भरतजी को धमकाकर कहा क्या तुम पागल हो
क्या तुमको कुछ किसी तरह का अभिमान है जो
बोलते नहीं हो मैं राजाहूं मेरे सामने खड़े होकर मेरे

प्रश्नों के उत्तर को तुम नहीं देतेहो मैं तुमको दण्ड देने में भी समर्थ हूं तब जड़भरतजी बोले उस पुरुष का आप क्या करसक्ते हैं जिसकी दृष्टि में स्वामि सेवक भाव नहीं है उसके ऊपर तुम्हारी आज्ञाकरनी भी वृथा है फिर जिसकी दृष्टि में राजा रंक सब बराबर हैं उसको धमकाना कैसे होसक्ता है जड़भरत जीकी बातों को सुनकर राजा ने अपने मनमें जान लिया कि ये कोई महात्मा जीवन्मुक्त अवधूत हैं राजा तुरन्तही जड़भरतजी के चरणों पर गिरपड़ा और हाथ जोड़कर कहने लगा महाराज मुझ मूढ़ अज्ञानी से बड़ा अपराध हुआ है जो आपके कांधों पर पालकी को धराकर उसमें सवार होकर मैं चलाहूं आप मेरे इस अपराध को क्षमाकीजिये जड़भरतजी बोले हे राजन्! पालकी कांधों पर कांधे जंघापर जंघे चरणों पर चरण पृथ्वीपर हैं इन सबका आधार पृथ्वी है सो आप पृथ्वी से क्षमामांगिये राजा ने कहा महाराज है तो इसीप्रकार परन्तु हम मूढ़पुरुषोंको इतना बोध कहां है यदि हमको इतना बोधहोता तब हम आपको क्लेश क्यों देते जिसवास्ते हमने

आपको क्लेश दिया है इसी वास्ते हम आपसे क्षमा मांगते हैं जड़भरतजी ने कहा हे राजन् ! जितने क्लेश हैं वह सब शरीर और मनकेही धर्म हैं आत्मा निर्धर्मिक है शरीर के साथ आत्माका कल्पित तादात्म्याऽध्यास है इसीसे शरीर और मनके धर्म आत्मा में प्रतीत होते हैं जैसे लोहेका अग्नि के साथ तादात्म्याऽध्यास होनेसे अग्निके धर्म लोहे में जलाना आदिक प्रतीत होते हैं वास्तव में जैसे लोहे में जलाना नहीं है तैसेही वास्तवसे आत्मामें भी क्लेशादिक नहीं हैं और सुख दुःख इच्छाआदिक तथा जन्म मरणादिक भी शरीर के ही धर्म हैं आत्मा के धर्म नहीं हैं आत्मा असंग और शुद्ध है अविद्याआदिक मलों से रहित स्वयंप्रकाश भी है हे राजन् ! संसार में जितने क्लेशोंको लोग भोगते हैं सो मोह के वशमें होकरके ही भोगते हैं इसलिये मोहही बन्धनका हेतु है मोह का नाश होजानाही मोक्षका कारण है हे राजन् ! स्त्री पुत्रादिक तो जीवोंको पशुआदिक योनियोंमें भी मिलजाते हैं परन्तु मोह की निवृत्ति के साधन पशु आदिक योनियों में नहीं होसक्ते हैं ॥ मोहकी नि-

वृत्तिके साधन मनुष्य योनिमेंही होसक्ते हैं हे राजन्! तुम प्रथम स्त्री पुत्रादिकोंमें मोहको निवृत्तकरो क्योंकि संसारका सम्पूर्ण दुःख मोहवालेकोही प्राप्त होता है और जिसका मोह किसी में भी नहीं है वही सुखी होता है उसीका चित्त शांत होता है वही जन्म मरण से छूटसक्ता है मोहवाला कदापि नहीं छूटसक्ता है और आत्मज्ञान का लाभभी विना मोहके त्यागनेसे नहीं होता है इसलिये तुम प्रथम मोहकाही त्याग करो राजाको इस प्रकार उपदेश करके जड़भरतजी वनको चलेगये और जीवन्मुक्त होकर आयुको व्यतीत करतेभये अन्तमें विदेहमुक्तिको प्राप्त होतेभये और राजा भी जड़भरतजी से आत्मज्ञान को प्राप्त होकर अपने घरमें चलाआया ॥ अवधूत गीता में अवधूतका जोकि लक्षण लिखाहै ॥ सो दिखाते हैं ॥

आशापाशविनिर्मुक्त आदिमध्यांतनिर्मलः ॥
आनंदेवर्तते नित्यमकारंतस्यलक्षणम् ॥ १ ॥

आशारूपी पाशसे जो कि रहितहै और आदि मध्य तथा अन्त में भी जोकि निर्मलहै अर्थात् जिसका चित्त तीनों काल में शुद्ध है अपने आत्मानन्दमेंही जो कि

नित्यही वर्त्तमान रहता है वाह्य विषयानन्दकी त-रफ़ जिसका मन कदापि नहीं जाता है अकार अक्षर का यह लक्षण है ॥ १ ॥

वासनावर्जिता येन वक्तव्यं च निरामयम् ॥
वर्तमानेषु वर्तेत वकारस्तस्यलक्षणम् ॥ २ ॥

जिसके हृदयकी संपूर्ण वासना नष्टहोगई हैं और वक्तृता जिसकी कपट से रहित है वर्त्तमान कालमें ही वर्तता है भूत भविष्यत् की चिंता जिसको नहीं है यह वकार अक्षर का अर्थ है ॥ २ ॥

धूलिधूसरगात्राणि धूतचित्तोनिरामयः ॥
धारणाध्याननिर्मुक्तो धूकारस्तस्यलक्षणम् ३॥

धूलिमें लिपटेहैं शरीरके अंग जिस के और धोया गयाहै चित्त जिसका मानसी रोगोंसे जो कि रहितहै और धारणा ध्यानादिकों सेभी जोकि रहितहै अर्थात जिसकी सदैव काल समाधि बनी रहती है धकार अक्षर का यह अर्थ है ॥ ३ ॥

तत्त्वचिंताधृतोयेन चिंताचेष्टाविवर्जितः ॥
तमोहंकारनिर्मुक्तस्तकारस्तस्यलक्षणम् ॥ ४ ॥

जिसने आत्मचिंतन कोही धारण करलियाहै और विषयों की चिंतासे और भोगोंकी प्राप्तिके लिये चेष्टा से जो रहित है॥ अज्ञान और अज्ञान का कार्य्य जो कि अहंकार है तिससेभी जोकि रहित है यह तकार अक्षर का अर्थ है पूर्वोक्त अवधूत शब्दके चारों अ-क्षरों का अर्थ जिसमें घटजाय उसीका नाम अवधूत है सो अवधूत शब्दका अर्थ दत्तात्रेय शुकदेव ऋष-भदेव जड़भरत इन चारोंमेंही पूरा २ घटताहै और भी पूर्वकाल में कोई एक ऐसी धारणावाला हो-गयाहै परंतु इदानींकालमें तो किसी अवधूतमें भी अवधूत शब्दका अर्थ नहीं घटताहै केवल मान और प्रतिष्ठा के लिये और माल चाबने के लिये वस्त्रोंको फेंककर अवधूत कहलाने लगजाते हैं॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानंदसमाख्या धरेणपिशावरनगरनिवासिनामध्यदेशीयभाषायां कृतंजड़भरतजीवनचरित्रंसमाप्तम्॥१॥

## अब बुद्धभगवान्जीके जीवनचरित्र को लिखते हैं ॥

नैपालकी तराई में इक्ष्वाकुके वंशमें से एक शुद्धों नाम करके महान्प्रतापी राजाका नगर बसताथा वहां पर इदानींकाल में बड़ाभारी जङ्गल है जिसमें कि अब शेर और मृगादिक जीव रहते हैं ऐसा नियम नहीं है जो कि सब पदार्थ हमेशा एकही हालत से रहें किन्तु ईश्वर का ऐसा सङ्केतहै जो हमेशाही सब पदार्थों के रूप और रंग बदलते रहें जहांपर कि किसी ज़माने में नगर बसते थे वहांपर अब जंगलहैं और जहांपर कि पहले जंगलथे वहांपर अब बड़ी२ भारी इमारतें बनी हैं सो शुद्धों राजा का नगरभी उस कालमें बहुतही रमणीक बनाथा वह राजा अपनेको गौतम मानताथा इसीसे मालूम होताहै जो वह गौतम गोत्रवालाही होगा तिसकी स्त्रीका नाम मायाथा वह माया क्या थी मानो साक्षात् लक्ष्मीहीथी क्योंकि जितने गुण स्त्रीमें होनेचाहिये वह सब गुण उसमें थे इस हेतुसे राजा शुद्धों मायाकी बड़ी प्रतिष्ठा करतेथे

जबकि राजाकी उमर पचास बरसके समीप पहुंची और माया की उमर चालीस बरससे अधिक हुई तब मायाको गर्भाधान हुआ जब कि बालकके जन्म लेनेके दिन समीप पहुँचगये तब मायाने पतिसे कहा मेरेको पिताके घरमें भेजदीजिये राजाने मायाकी इस वार्त्ता को मान लिया और तिसको अपने पिताके घरको रवाना करदिया रास्तामें एक बागथा वहां पर बागके सैर के लिये रानी पालकी से उतर कर तिस बागमें गई बागमें एक ऊंचे दरख्तके तले रानी खडीथी उसी जगहमें बालकके जन्म का समय पहुंच गया उसी जगहमें बिछौना करागया तिस बिछौने पर बस बैठनेहीकी देरीथी कि इतने में चन्द्रमारूपी बालक का जन्म होगया उसी कालमें खुशीके बाजे बजने लगे और दूतने दौड़कर राजाको खुशखबरीदी इस खुशीके सुनतेही राजा वहां पर पहुंच गये और मायाको उस चन्द्रमा के सहित पालकीमें बिठलाकर घरमें लेआये और राजाने लडकेकी खुशी में सब कैदियों को छोड़दिया और ब्राह्मणों के प्रति राजाने बहुत सा दानभी दिया नगरके लोग सब मिलकर नाचरंग

कराने लगे भाटलोग कवित्त पढ़ने लगे कवि लोग आशीर्वादों को देने लगे राजभवन में सब रोशनी कीगई और राजा शुद्धो के नगरके समीप जंगल में शरत नाम करके एक ऋषि रहताथा वह सामुद्रिक विद्या में और ज्योतिषविद्या में एकहीथा राजाने तिस ऋषिको बुलाकर लड़के के कर्मोंका हाल पूछा ऋषिने कहा हे राजन्! तुमको बड़ी खुशी मनानी चाहिये क्योंकि यह लड़का तुम्हारा बड़ा उपकारी और धर्मात्माहोगा देवताओंकरके भी यह पूजनेयोग्य होगा और संसार भरको यह मुक्तिके साधन जो कि सच्चे धर्म हैं उनपर लगावेगा और एक बार तो सब लोग इसीके कहेहुये धर्मोंपर चलेंगे और भी सम्पूर्ण गुणों करके यह तुम्हारा लड़का पूज्य होगा तुम बड़ी खुशीको मनावो फिर तिस ज्योतिषीनेकहा हे राजन्! एक मेरको बड़ा अफ़सोस है वह यह है मेरी आयु अब अपनी हदतक पहुंच गई है वरना मैं इस बालक से कुछ नफ़ा उठाता यह तुम्हारा ज्ञानवानों में अग्रगामीहोगा इससे संसारीलोगों का बहुतही भला होगा ज्योतिषीऋषि की बातों को सुनकर राजा और

रानी दोनोंही आनन्द में मग्न होगये राजा ने ज्योतिषी को बहुतसा द्रव्य दिया और जिस पुत्र के जन्म लेने से राजा के सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धहोगये उस पुत्र का नाम राजा ने सिद्धार्थ रक्खा और ज्योतिषी को विदा करदिया जब कि पुत्र को उत्पन्नहुये छः दिन व्यतीत होगये तब माया ने अपनी बहिन प्रजापतिसे कहा मैं अब न जीवोंगी क्योंकि मेरा अंतका समय समीप आगया है सिद्धार्थ अपने बच्चे को प्रजापतिकी गोद में देकर कहा इसकी पालनाको तुम करना ऐसा कहकर माहामाया ने अपने शरीर का त्याग करदिया अब सिद्धार्थ को प्रजापति पालनेलगी राजा को मायाके मरने का बड़ारंजहुआ मगर पुत्रकी खुशीने तिसरंजको भी दूरकिया॥ अब शुद्धों राजा सिद्धार्थ के पालने में लगा जिसकाल में सिद्धार्थ जवान होगया तब सिद्धार्थकी शादीके लिये सिद्धार्थ के पिताने अपने सम्बन्धियोंको लिखा तुम सब कोई अपनी २ कन्याको साथ लेकर आओ जिसकी कन्या को सिद्धार्थ पसंद करेगा उसीकी कन्या के साथ में सिद्धार्थकी शादी को करूंगा उन्हों ने जवाब में लिखा

प्रथम सिद्धार्थ अपनी विद्या और हुनरका परचा दे लेवै तब पीछे हम अपनी २ कन्याको लावैंगे सिद्धार्थ से पूछागया तब उसने कहा हां मैं परीक्षा देऊंगा जब कि राजा के सब सम्बन्धी आये तब सिद्धार्थ ने अपनी परीक्षादी परीक्षा में सिद्धार्थ अव्वल निकले और सब कन्याओंमें से सिद्धार्थ ने अपने मामाकी लड़-की को पसन्द किया उसी कन्या के साथ सिद्धार्थ की शादी भी होगई अब सिद्धार्थ पक्के गृहस्थ बनगये सिद्धार्थ की स्त्री बड़ी पतिव्रता थी और पण्डिताभीथी कभी २ सिद्धार्थ के मन में संसारसे वैराग्यभी उत्पन्न हो आता था तब उस पतिव्रता के प्रेम में वह फिर ढीला होजाता था उन्नीस बरसकी उमर में सिद्धार्थकी शादीहुई और उनतीस बरसकी उमरतक वह घरमें रहे थे राजसम्बन्धी भोगों को भी उन्होंने भोगाथा एक दिन वह रथपर सवार होकर बागकी तरफ़ सैर के लिये चले जाते थे कि रास्तामें एक बूढ़ा आदमी लाठी के सहारेसे सिर झुकायेहुये धीरे २ चला जाता था उ-सको देखकर सिद्धार्थने अपने सारथी से कहा सारथी यह आदमी क्यों धीरे २ चलता है और इसका शिर

क्यों झुका है फिर इसका शिर हिलता क्यों है और इसकी निगाह नीचे की तरफ़ क्यों है इसके सब बाल क्यों सफ़ेद होगये हैं इसका बदन क्यों सूखगया है इसका हाल तुम हमसे कहो सारथीने कहा कि हे देव! इस शरीर की चार अवस्था होती हैं पहले बाल फिर कुमार फिर युवा पश्चात् वृद्धावस्था आती है सो इसकी तीन तो बीतचुकी हैं अब यह चतुर्थ अवस्था इसकी आई है इस अवस्था में शरीर कमजोर हो जाता है गरदन झुकजाती है आंखकी निगाह कमहो जाती है कानों से सुना नहीं जाता है वाणी से बोला नहीं जाताहै पांवसे चला नहीं जाताहै इस अवस्थामें घरके लोग आदर नहीं करते हैं रोग सब ग्रस लेते हैं भोजन पचता नहीं है ऐसी यह वृद्धावस्थाहै सो इस पुरुष को आरही है॥ सिद्धार्थ ने कहा क्या यह सब को आतीहै॥ सारथी ने कहा कि हे देव! सब किसी को आती है याने जीवमात्रको आती है॥ सिद्धार्थने कहा जबकि प्राणीमात्रको यह आती है तब फिर एकदिन हमपरभी आवैगी जिसपर ऐसी बुरी अवस्था आनेवा-ली है उसको सैर तमाशेसे क्या खुशी है आप रथको

लौटाकर घरकी तरफ लेचलें सारथी रथको लौटाकर ले आया अब सिद्धार्थ के मनमें यह चिन्ता उत्पन्न हुई कैसे हम इस बुरी वृद्धावस्था से छूटैंगे इसी शोच में पड़कर सिद्धार्थ घरकी एक कोठरीमें बैठकर चिन्ता करनेलगे ॥ और कई एकदिन घरमेंहीबैठेरहे राजा शुद्धो सिद्धार्थ के हाल को सुनकर शोच में पड़गया फिर राजा ने सिद्धार्थ के मनको खुश करने के लिये अनेक प्रकार के नाच और तमाशे कराने शुरू कर दिये फिर सिद्धार्थ का मन कुछ वैराग्य की तरफ से हटकर संसार की तरफ झुकगया थोड़े दिनों के पीछे फिर एकदिन रथपर सवार होकर जंगल की सैर को निकले तब रास्ता में एक मुर्दे को चार आदमी उठाकर श्मशान की तरफ लियेजाते थे सिद्धार्थ ने सारथी से कहा यह चार आदमी किसको उठाकर कहां को लियेजातेहैं सारथीने कहा कि हे देव!यह एक मरे हुयेआदमीको उठाकर जलानेके लिये श्मशानमें लिये जाते हैं वहां इसको जलाकर फिर घरको लौटआवैंगे सिद्धार्थ ने कहा क्या सब कोई मरताहै सारथीने कहा कि हे देव ! जो पैदा होताहै सो अवश्य एकदिन मरताहै

प्राणीमात्र के लिये यह अमर जरूरी है सिद्धार्थ ने कहा जब कि एकरोज जरूर मरनाही है तब फिर हमको सैर करने से क्या प्रयोजन है रथको घरकी तरफ लेचलो सारथी रथको लौटाकर घरको लेआये अब फिर सिद्धार्थ एकान्त देशमें बैठकर चिन्ता करने लगे इस जन्म मरणरूपीचक्र से हम कैसे छूटें कोई इसका उपाय करना चाहिये इसी फिरके में वह पड़ गये और बोलना चालनाभी छोड़दिया जबकि शुद्धों को सिद्धार्थ का हाल मालूमहुआ तब फिर तिसने सिद्धार्थ के दिलको खुश करने के लिये बहुत उपाय किये और फिर सिद्धार्थ का दिल कुछ २ बहल गया थोड़े दिन के पीछे फिर एक दिन सिद्धार्थ रथ पर सवार होकर बागकी सैर को जाते थे रास्ता में एक संन्यासी हाथ में भिक्षापात्र को लिये हुये जाता था उसको देखकर सिद्धार्थ ने सारथी से पूछा यह कौनहै सारथीनेकहा कि हे देव! यहसंन्यासीहै इसने संसारका त्याग करदिया जन्म मरणसे छूटने के लिये साधनों को यह करता है भिक्षा मांगकर खाता है किसी व्यवहारसे वास्ता नहीं रखता है मुक्तिके मार्ग

में प्रविष्ट है सिद्धार्थ ने कहा हम भी अब संन्यासको धारण करके मोक्षके साधनों को करेंगे ऐसे कहकर सिद्धार्थ ने सारथी से कहा रथको लौटाकर लेजाओ और आप दरख्त के नीचे बैठकर विचार करनेलगा कोई ऐसा सच्चाधर्म निकालना चाहिये जिसधर्म के मार्गपर चलकर संसारके लोग संसाररूपी कारागार से छूटकर मुक्ति के आनन्द को प्राप्त होवें वह सच्चा धर्म किससे मिलै और कैसे कियाजाये घरमें रहकरके तो तिसका मिलना कठिन है अब संन्यास को धारण करलेना चाहिये परन्तु संन्यास को धारण करके जब कि हम जायेंगे तब पिता नहीं जाने देवेंगे फिर क्या करैं इसी चिन्तामें सिद्धार्थ पड़कर वेहोशकी तरह होगया इधर सारथीने जाकर राजा शुद्धोंसे सिद्धार्थ का हाल कहा जो वह बाग में एक वृक्षके नीचे चिन्तारूपी समुद्र में डूबकर बैठेहुये हैं राजा इस हाल को सुनकर तुरन्त सिद्धार्थ के पास रथपर बैठकर पहुँचा और सिद्धार्थ को रथपर बिठाकर घरमें लेगया और अपने पास बिठाकर समझाने लगा कि हे पुत्र! तुम किस बातकी चिंताको करतेहो परमेश्वरने सब कुछ दियाहै

सुन्दर दास और दासियें सेवा करने के लिये तुम्हारे हाज़िर हैं हाथी घोड़े रथ पालकियें ये सब सवारी के लिये मौजूद हैं और पहिरने के लिये उत्तम २ वस्त्र और हीरा मोती सब खज़ानों में भरे हैं नानाप्रकारके भोजन खानेके लिये विद्यमान हैं। और पतिव्रता सर्वगुणों करके संपन्न गोपानामक आज्ञाकारी तुम्हारी स्त्री घरमें विराजमान है मैं अब बूढ़ाहुआ हूं तुम सब राजको देखो और करो यह अवस्था तुम्हारी भोगोंके भोगने के लिये है चिंताके लिये नहीं है फिर तुम क्यों नहीं बोलतेहो क्या कोई तुम्हारेको दुःख है सिद्धार्थ ने कहा हे पिता जो कुछ कि आपने कहा है सो सब ठीक है और मेरे को कोईरोग भी नहीं है परन्तु वह बुढ़ापा जिसमें अनेकप्रकार के कष्ट हैं और वह मृत्यु का जो कष्ट है इनसे छूटनेकी मेरे को चिंता लगी है भोगोंके भोगनेसे वह कष्ट दूर नहीं होताहै हे पिता जैसे सोनेके जंजीरों से बँधेहुये हाथी का मन जंजीरों से छूटकर जंगल में स्वतन्त्र होकर घूमने को करताहै उसके लिये वह सोनेके जंजीर खुशीका हेतु नहीं होते हैं तैसे विषयरूपी जंजीरों से बँधाहुआ जो

मैंहूं मेरा मन इन विषयों में खुशीको नहीं मानता है इनसे छूटने को चाहता है आप मेरे को आज्ञादें जो मैं अब जाकर उन सच्चे धर्मोको हासिलकरूं ६ जिन की पालना करके नित्य सुख ७ को मैं प्राप्त होजाऊं और संसारके लोगोंको अपने उपदेशों करके महान् कष्टों से छुड़ादेऊं सिद्धार्थ की वैराग्यभरी बातों को सुनकर राजा वड़ी चिंता में पड़गये और मकान के दर्वाजों पर पहरे लगवादिये जोकि सिद्धार्थ न जाये और जिस कमरे में सिद्धार्थ बैठाथा उस कमरे में सुन्दर २ स्त्रियों को बुलाकर सिद्धार्थ के दिलको खुश करने के लिये जमा करदिया और उनको हुक्म दिया गाकरके और नाच करके और हँसी खुशीकी बातों को सुना करके तुम सिद्धार्थ के दिलको प्रसन्न करो यह सब बन्दोबस्त करके राजा अपने कमरे में चले गये॥ एक बात यह भी हुईथी कि सिद्धार्थका लड़का जो थोड़े दिनों से उत्पन्न हूआ था और तिसका नाम शुद्धोंने रायल धराथा जब कि वह स्त्रियें सब सुन्दर २ स्वरोंसे गान करके बुद्धको खुश करनेलगीं तब बुद्ध सोगये जिस वैराग्यवान् के सामने इन्द्रकी अप्सरा

तुच्छ हैं उस वैराग्यज्ञान् को यह तुच्छ वेश्या कैसे गान करके रिझासक्ती हैं कदापि नहीं बुद्धने अपने स्वप्नमें देखा कि एक आदमी शान्त मूर्त्तिवाला बड़ा गम्भीर और दयालु स्वभाववाला था हमारे पास आ-कर खड़ा होगया-है सिद्धार्थने उससे पूछा तुम कौन हो और कहांसे आयेहो उसने कहा मैं साधुहूं बुढ़ापे और शारीरिक चिन्ता से और मोहजाल से छूटने के लिये और नित्यसुख की प्राप्ति के लिये मैंने घरबार छोड़ दिया है क्योंकि जितने पदार्थ कि संसारके दि-खाई पड़ते हैं वह सब नाशवान्हैं एक मोक्ष सुखही नित्य है जिसका नाश कदापि नहीं होता है मैं उसी की तलाशमें फिरताहूं और मैं ऐसी खुशीको चाहता हूं जिसके पानेसे फिर कभी भी रञ्ज न हो इसीसे मैंने तमाम सांसारिक संकल्पोंको दूर करदियाहै मैं एकांत स्थान में अकेलाही रहताहूं सिद्धार्थ ने कहा यह जो कि सांसारिक दुःख हैं किसी उपाय से दूर होसक्ते हैं साधुने कहा जहांपर गर्मी होती है वहांपर कभी सर्दी होनेकी भी उम्मैद होजाती है जिसको दुःखहै उसको कभी सुख भी ज़रूर होजाता है सिद्धार्थने कहा क्या

इन सांसारिक दुःखोंसे शांति भी हासिल होसक्ती है मैं इस संसारको दुःखरूप करके देखताहूं मेरेको इन भोगों में सुखकी लेशमात्र भी प्रतीत नहीं होती है कैसे मैं नित्यसुखको प्राप्त होजाऊंगा मेरा चित्त कि-सतरह से शान्ति को प्राप्त होवैगा ॥ साधुने कहा जैसे कीच करके भरेहुये पुरुषको पानी के तालाबकी या नदी की जरूरत होती है तिसी प्रकार पापरूपी कीचके धोनेके लिये तुमको भी साधनोंरूपी जलकी जरूरतहै सो विना पुरुषार्थ के साधनोंकी प्राप्ति नहीं होती है हे सिद्धार्थ तुम पुरुषार्थ को करो यदि वन में सिंह इधर उधर घूमकर मृगकी तलाशको न करै तब आपसे आप मृग उसके मुखमें आकरके नहीं गिरता है तैसेही यह पुरुष यदि मोक्षके मार्गकी तलाश नहीं करैगा तब आपसे आप मोक्षमार्ग इसको नहीं मिलैगा इसलिये तुम भी पुरुषार्थ करके मोक्ष मार्ग को खोजो ऐसे कहकर वह साधु चलागया और इतने में बुद्ध की भी नींद खुलगई जिसकाल में बुद्ध सोगया था उस काल में गानेवाली स्त्रियों ने विचार किया था जिसके लिये हम गाती बजाती हैं वह तो सोगये अब

हमारा गाना बजाना व्यर्थ है ऐसा विचार करके वह सब भी सोगई थीं बुद्धने नींद से उठ करके जब कि सबको सोयाहुआ देखा तब मनमें विचार किया अब इसीवक्त चलाजाना अच्छा है क्योंकि जब कोई भी इनमें जाग पड़ेगा तब वह औरोंको भी जगादेगा तब जाना किसी प्रकारसे भी नहीं होसकैगा ऐसा विचार करके जब कि जानेको तैयारहुआ तब सिद्धार्थके मन में आया एकबार अब अपने बच्चेका और अपनी स्त्री का मुख जरूर देख लेनाचाहिये क्योंकि अब ऐसा जाना नहीं है जो फिर भी आना होगा ऐसा विचार कर सिद्धार्थ अपनी स्त्रीके कमरेमें गया वहां दिये जग रहेथेऔर गोमरानी अपने बच्चे को छातीसे लगाकर सोई हुई थी सिद्धार्थने जब कि अपनी स्त्री और अपने बच्चे के मुखको देखा तब तिसके मनमें मोह उत्पन्न हुआ और उसने चाहा कि एकबार अपने बच्चे को छातीसे लगाकर तिसके मुखको चुम्बन करूं फिर सोचा ऐसा करनेसे यदि गोमा जाग पड़ेगी तब बड़ा कठिन होजायेगा आखिर तो इनका त्यागही करनाहै एकबार ऐसा करने से क्या होगा इस मोहमाया का

त्याग करदेनाही अच्छा है ऐसा विचार करके सिद्धार्थ,
पीछेको हटकर धीरे २ मकानके बाहर निकलआया
बाहर फाटकपर तिसका सारथी खड़ाथा उससे सि-
द्धार्थ ने कहा जल्दीसे तेजरफ्तार वाले घोड़ेको कस-
कर लावो उसने सिद्धार्थ को बहुतसा समझाया और
कहा देव अभी आपकी युवा अवस्था भोगोंके भोगने
के लिये है त्यागके लिये नहीं है सिद्धार्थने कहा मेरा
मन किसीतरह से भी वशमें नहीं लगताहै अगर तुम
लाख तरहसे समझावोगे तब भी मैं नहीं मानूंगा
तुम हमारे प्यारे भृत्यहो और हमारे लिये यदि तुम
भलाई को चाहते हो तब और बातचीत मतकरो
जल्दी से घोड़े को लावो रथवाही ने अपने मन में
निश्चय करलिया कि अब यह किसीतरह से भी नहीं
मानेंगे तब वह तुरन्त जाकर एक तेजरफ्तार वाले
घोड़े पर जीन को कसकर लेआया सिद्धार्थ घोड़े
पर सवार होकर धीरे २ नगर के दरवाजा के बाहर
निकला फिर तिसने घोड़ेको तेज चलाया उस काल
में रात्रि तो बड़ी अँधेरी थी मगर तारोंकी चमक से
रास्ता दिखाताथा दिनके निकलने पर राज्यकी सीमा

पर एक नदीथी तिस नदी के किनारेपर सिद्धार्थ प-
हुँचगये वहां एक कोई गरीबखड़ाथा सिद्धार्थ ने उस
के फटेहुये कपड़ों को लेकर आप पहनलिया और
अपने कपड़े उसको दे दिये और भूषणों को और
मुकुटको तथा घोड़े को सारथीको देकर कहा तुम यह
सर्व लेजाकर राजाको देदेना और यह वार्त्ता कहनी
सिद्धार्थ कहताहै मेरी चिन्ता को मत करना क्योंकि
मैंने शुभकाम के लिये और उपकारके लिये घरको
छोड़ा है जब कि मैं अपना कार्य्य सिद्ध करलेऊँगा
तब एकबार फिर आपसे मिलूंगा सारथी को सबकुछ
देकर सिद्धार्थ ने अपने शिरके बालों को काटडाला
और जूतेकोउतार करके उसी गरीब को देदिया अब
सिद्धार्थ त्यागीबनकर नदी के पार उतरगये और
सारथि रुदन करताहुआ राजा शुद्धोंके नगरकीतरफ
चलपड़ा सिद्धार्थ के घरसे चलेजाने के कुछदेर पीछे
जब कि उन गान करनेवाली स्त्रियोंकी नींद खुली
और उन्होंने सिद्धार्थ को अपने पर्यङ्क पर न देखा तब
उन्होंने शोर मचादिया कि सिद्धार्थ भागगये उनके
रोनेकी आवाजको सुनकर राजाकी नींद भी खुलगई

और राजा बड़े ऊँचे स्वरसे विलाप करनेलगे हे पुत्र मेरेको तुमने क्यों त्याग दिया मैंने आपका क्या कसूर कियाथा हे पुत्र इस बुढ़ापे में मेरा कौन सहायक होगा मैंने आपको ईश्वर से प्रार्थना करके लियाथा हे पुत्र तुम्हारे विना मैं अब अनाथ होगयाहूं इसप्रकार राजा कुछदेर तक विलाप को करतारहा और कई एक नौकरोंको सिद्धार्थकी तलाश के लियेभी राजाने भेजा भीतर रनिवास में जब कि सिद्धार्थ के चलेजाने की खबर पहुंची तब सब बांदियां और प्रजापति जो कि सिद्धार्थकी दूसरी माताथी बड़े ऊंचेस्वर से रोने लगी और सिद्धार्थकी रानीगोमा तो इसखबरके सुनते ही बेहोशहोगई जबकि तिसको होशआया तब उसी कालमें उसने अपने शिरके बालोंको खोलदिया और भूषणों को उतारदिया और पृथ्वीपर शय्या बनाकर ब्रह्मचर्य्य को धारण करके पतिके ध्यानमें स्थित होगई॥ जब कि दिन निकला तब राजा के भृत्य जो कि सिद्धार्थको खोजने गये थे वह सब रास्तामें आते हुये सारथी को मिले और सारथी से सिद्धार्थ का सब हाल उनको मालूम होगया वह सारथी को लियेहुये

राजाके समीप चलेआये सारथी ने सब भूषणों को राजा के आगे धरकर और रोकर सब हाल सिद्धार्थ का कह सुनाया सिद्धार्थ के संन्यासी होनेको सुनकर राजाके मनमें मोहरूपी अग्नि भड़कउठी और बड़े ज़ोर से चिल्ला २ करके रुदन करनेलगा और शिरको पीटनेलगा बहुत देरतक रोना पीटना होता रहा फिर वज़ीरों ने राजाको समझा बुझा करके कहा रायल तिसका लड़का जीता रहे ॥ अब इसी को देखकर तुम जीना और एक सिद्धार्थका छोटा भाईथा उसको देखकर अपनी आयु व्यतीत करनी राजाको भी लोगों के कहने सुननेसे कुछ २ सबर आगया इधर सिद्धार्थ नदी से पार उतरकर जंगल में एक दरख़्त के नीचे ध्यानावस्थित होगये एकरोज़ तो उसी जगह में बैठेरहे फिर वहांसे चलकर रास्ताके ग्रामोंसे भिक्षाको मांगकर खाते हुये एक ग्राम में एक पण्डित के पास बहुत से विद्यार्थी पढ़ते थे वहांपर कुछ काल रह कर षट्‌दर्शनों के सूत्रों को सिद्धार्थ ने पढ़ा फिर वहांसे चलकर रास्ता में एक ग्राम के बाहर एक संन्यासी बहुतसे विद्यार्थियोंको पढ़ातेथे और कुछ योग

भी जानते थे कुछ काल उनके पास रहकर सिद्धार्थने योग भी सीखा इसीतरह एकवर्ष रास्तामें लगा और राजगृहीकी राजधानीमें पहुँचगये और वहांपर पर्वत की गुफामें सिद्धार्थने अपना आसन लगाया उस काल में मगहदेश की राजधानी का नगर राजगृही के पहाड़ों के बीच में बसता था और चारोंतरफ तिसके पहाड़ थे मानो वह पर्वतही तिसकी क़िला थी यह पुराना जरासंध राजाका नगर है इदानीं कालमें वहां घोर वन है सिंह और स्यार अब उस जंगल में रहते हैं जैसे चांद बादलों के नीचे फूट २ करके चमकता है और जैसे हीरा मोती कीचमें गिराहुआ दूरसेही दम-कताहै और जैसे अग्नि राखीमें दबीहुई चमकती है तैसेही सिद्धार्थ उस फकीरी लिबासमें चमकते थे जो कोई गुणवान् महान् ऋषि हैं सवेरे भिक्षापात्रको हाथ में लेकर और नगरमें जाकर जब कि सिद्धार्थ द्वार २ पर भिक्षा मांगनेलगे तब इनके शरीरकी सौंदर्यताको देखकर नगरके सब स्त्री पुरुष मोहित होगये लोगोंने जाना यह कोई मुनिहैं हिमालयपर्वतसे तप करते २ चलेआये हैं जिस बाज़ार और गलीमें सिद्धार्थ भिक्षा

के लिये जाते लोग भिक्षाको लेकर आगेसेही अपने २ द्वारोंपर खड़े होजाते राजा वहांका जिसका नाम बंब-सार था वह भी अपने कोठेपर खड़ा था सिद्धार्थ को जातेहुये दूरसे राजाने भी देखा और अपने मन्त्रीको बुलाकर कहा यह जो कि नया भिक्षु हमारे नगर में आया है इसके पीछे जाकर तुम इस हाल को बूझ आवो कि यह कहांसे आया है और कौन है जिस काल में सिद्धार्थ भिक्षाको लेकर अपने आसन पर आये वहां पर एक शिलाको धोकर तिसपर बैठकर सिद्धार्थ ने भोजनकिया जब कि भोजन करचुके तब राजाका मन्त्री हाथ जोड़कर उनके पास बैठकर पूछनेलगा महाराज आपका आना किधरसे हुआ है और आप कौन आश्रम हैं बुद्धने कहा मैं नैपालकी तराई से आयाहूं और भिक्षु मेरा आश्रम है फिर मौन होकर सिद्धार्थ आसन लगाकर बैठरहे मन्त्री ने आ-करके राजासे सब हाल कहा और यह भी कहा यह कोई बड़े वैराग्यवान् कुलीन मालूम होते हैं राजाभी तीसरेपहर अपने मन्त्रियों के सहित सिद्धार्थ के पास गया जिस कालमें राजा उनके समीप बैठगया तब

राजाने सिद्धार्थ को पहचानलिया क्योंकि छोटी उमर में थोड़ेदिन इकट्ठे पढ़ते रहेथे राजाने कहा महाराज मैंने आपको पहचान लिया है आप राजा शुद्धो के लड़के हैं सिद्धार्थ आपका नामहै आपने इस जवानी की उमर में घरका त्याग क्यों करदिया आपका शरीर बड़ा कोमल है कांटों और पत्थरोंपर चलने का बल नहीं है किन्तु राज्य करनेके लायक है अब आप मेरी सहायता राजकाज में करैं और मैं आपके आराम के लिये सब सामान करदेऊंगा यह राज्य सब आपका ही है सिद्धार्थ ने आंख उठाकर राजाकी तरफ देख करके कहा हे राजन्! तुम्हारी बातें सब बुद्धिमानोंकी हैं इसी वास्ते तुम बुद्धिमानीमें मशहूर हो हे राजन्! जो आदमी धूपकी गर्मी से जलाहुआ है उसके लिये फिर धूपही आरामका कारण नहीं होती है किन्तु ठण्ढक से उसको आराम मिलता सो मैंने सांसारिक दुःखों से छूटने के लिये राजपाट का त्याग करदिया है फिर वह सांसारिक दुःखरूपी राजपाट मेरे सुखके लिये कदापि नहीं होसक्ताहै हे राजन्! नित्य सुखरूपी जो मुक्ति है मैं तिसकी तलाशके लिये घरसे निकसा

हूं अब मैं कैसे उसकी तलाश को छोड़कर फिर उसी सांसारिक दुःखोंमें लपट होजाऊं हे राजन् ! जिसका बदन कीचसे लिपटाहै वह कीच करके धोनेसे साफ कदापि नहीं होता है उसको जलकी ज़रूरत है तैसे सांसारिक कीच कौनहैं राग द्वेष और मोहादिक इनके धोनेके लिये जो कि शुद्धजलहै उस जलकी खोजके लिये मैं घरसे निकलाहूं अब फिर उसी राग द्वेषादि रूप कीच में फँसना मेरा धर्म नहीं है जो पुरुष सच्चे धर्मरूपी ख़ज़ानेकी तलाश कररहाहै वह तुच्छ और झूठे ख़ज़ाने की इच्छा क्यों करैगा कदापि नहीं हे राजन् ! सच्चाईको जिसने हासिल करलिया है उसने चक्रवर्ती राज्यको हासिल करलिया उसीको महान् सुखकी प्राप्ति होती है जो मछली कांटेसे निकल गई है क्या वह फिर कांटे में फँसनेकी इच्छाको करती है जो पक्षी जाल से निकल गया है क्या वह फिर भी जाल में फँसनेकी इच्छा को करता है कदापि नहीं इसीतरह राजपाटरूपी जालसे निकलकर फिर तिसमें फँसनेकी इच्छाको मैंभी नहीं करताहूं और मैं उस सच्चे धर्म को हासिल करूंगा जिस सच्चे धर्मकरके तमाम

संसारी लोगों को नित्य सुखकी प्राप्ति होगी सिद्धार्थ के वैराग्य को देखकर राजा ने कहा महाराज जिस कालमें आपको उसीसच्चेधर्मकी प्राप्ति होजाये जिसकी तलाश में आप निकले हैं तब एकबार हमको भी दर्शन देना और उसी सच्चे धर्मका उपदेश करके हमारे भी कल्याण को करना और जबतक यहांपर रहिये भिक्षा मेरेही घरकी करनी ऐसे कहकरके राजा अपने घरको चलागया दूसरेदिन बुद्धने राजाकी भेजी हुई भिक्षाको स्वीकार करलिया और तीसरेदिन वहांसे चलदिया फिर विचरते हुये एक नदी के किनारेपर सुन्दर रेता के चट्टानपर बैठ करके पद्मासनको लगा कर बुद्ध ध्यान में स्थित होगये अब उस जगह में गर्मी सर्दी और बरसात को बितानेलगे छः वर्षतक उसी स्थान में बैठे रहे॥ कभी कोई कुछ मुट्ठीभर अन्न देजाता तो खालेते नहीं तो भूखेही रहजाते कभी वनके फलोंको चुग करके खालेते कभी आठ २ दिन निराहारही रहजाते ऐसा कठिन तप करनेसे बुद्ध का शरीर बहुतही सूखगया और दुर्बल होगया जब कि एकही स्थानपर योगाऽभ्यास को करते २ छः वर्ष

व्यतीत होगये तब एक दिन ध्यानावस्था में बुद्धके हृदय में यकबारगी सच्चे धर्मोंका प्रकाश होगया और आत्माका भी साक्षात्कार होगया तब बुद्धके मन में बड़ी खुशी उत्पन्नहुई जब कि बुद्ध समाधिसे उत्थान हुये तब बुद्ध ने उठकर स्नान करनेकी तैयारी की मगर बुद्धके शरीर में ज़रासा भी बल नहींथा धीरे २ उठकरके बुद्ध ने नदी में स्नान किया उस काल में बुद्ध बिल्कुल नग्न थे क्योंकि एक कौपीन कोही वह प्रथम रखते थे वह भी गल सड़गई थी उस काल में इधर उधर जो उन्होंने देखा तो श्मशान घाटपर मुर्दोंके कफ़नों के टुकड़े पड़े थे उनको इकट्ठा करके पानीमें धोकर सुखा २ उन्होंने किसी टुकड़ेकी कौपीन बनालई और जो कि बड़ाथा उसको ओढ़लिया कोई शिरपर बांधलिया और वहांसे चलकर नदीके किनारे पर एक बड़ाभारी वृक्षथा उसके नीचे जंगलमें आकर ध्यानावस्थ होकर बैठरहे इस वृक्षका नाम बुद्धि था इसके नीचे वह फ़िरसे ध्यान करनेलगे तब उनकी बुद्धिमें अत्यन्त प्रकाश होगया जिस चीज़की उनको तलाशथी वह उनको प्राप्त होगई इसीसे फिर उनका

नाम बुद्ध पड़गया फिर थोड़े दिनों के पीछे वहांसे उठकर वह नदी के किनारेपर एक और वृक्षके नीचे जाबैठे थोड़ी दूरपर एक ग्राम था उसमें एक बड़ा भारी ज़मींदार रहताथा उसकी लड़की जब कि स्यानी हुई तब उसने उसी वृक्षके नीचे आकर मानत मानी थी यदि हमको पति अपनी पसन्दका मिलेगा तब मैं सोने के बर्तन में खीर लाकर तुमको चढ़ाऊंगी सो उसकी मानता पूरी होगई थी उसने खीर बनाकर स्वर्ण के थाल में भरकर अपनी बांदी को चढ़ाने के वास्ते भेजा उसने आकर जो दूरसे देखा तो एक अलौकिक मूर्त्ति बुद्धकी वहांपर उसी वृक्षके नीचे बैठी है उसने दौड़कर अपनी मालकिन से कहा वहांपर तो आज देवता मूर्त्तिमान् बैठे हैं वह ख़बरके सुनते ही घरसे दौड़कर वहांपर पहुँचगई और बुद्धकी मूर्त्ति को देखकर बड़ी प्रसन्नहुई उसने दूध और दधि से बुद्धके शिरके बालों को धोया और तेल लगाया और एक चद्दर को बुद्ध के ऊपर उढ़ादिया और खीर के थालको उनके आगे धरकर उसने चलदिया चूंकि बुद्धको बड़ी भूख लगीथी इसलिये बुद्धने उस खीर

को बड़ी प्रसन्नता से खायकर उस पात्रको नदीमें फेंक दिया हाथ धोकर थोड़ी देरतक बुद्धने आरामकिया फिर वहांसे चलदिया एक ग्राममें दोब्राह्मण बड़ेभारी पण्डित रहते थे वहांपर बुद्ध गये और अपने मनमें कहते थे जो कि अमोल ख़ज़ाना हमको सच्चे धर्मोंका मिला है इसको अब अधिकारियों के प्रति देनाचाहिये ऐसा विचार करकेही बुद्ध वहांपर गये जहांपर कि आद्रि और बद्रिनाम करके दो बड़ेभारी पण्डित रहते थे और उनकी विद्याकी बातोंको खूब सुनतेरहे फिर वहांसे चलपड़े और जब कि यह राजगृही से चले थे तब रास्ता में पांच भिक्षु शिष्य इनके बने थे फिर जब कि यह तपमें लगगये तब वह पांचों बुद्ध को छोड़कर बनारसकी तरफ चलेगये थे सो बुद्धने भी उन्हींके पास जानेका विचार किया और चलपड़े रास्ता में एक दरख़्तके नीचे बुद्ध बैठकर सुस्तानेलगे तब वहांपर एक जवान ब्राह्मण उनके पास आकर बैठगया और पूछनेलगा आपका चेहरा बड़ा चमकता है और बहुतही प्रसन्न मालूम होता है क्या कोई दौलतका ख़ज़ाना आपको मिला है बुद्धने कहा हम

को उन सच्चे धर्मोंका ख़ज़ाना मिलाहै जिसका नाश कभी भी न हो इसीसे मेरा चेहरा चमकता है बुद्धकी बातको सुनकर तिस ब्राह्मणको बड़ाक्रोध उत्पन्नहुआ और कहनेलगा धर्म के ख़ज़ानेके मालिक ब्राह्मणही हैं दूसरा कोई भी नहीं है ऐसे कहकर उनके पाससे उठगया बुद्ध थोड़े दिनोंमें बनारसके समीप जहांपर कि उनके शिष्य रहतेथे वहांपर पहुँचगये उनको वस्त्र पहरेहुये दूरसे आते देखकर उनकी बुद्धपर श्रद्धा जाती थी उन्हों ने कहा यह नग्न अवधूत होकरके रहतेथे अब इन्होंने अपने धर्मको छोड़दियाहै क्योंकि इन्होंने वस्त्रोंको पहरलिया है यह दण्डवत् करनेके भी योग्य नहीं हैं बल्कि नाम लेकर पुकारने के योग्य हैं जब कि बुद्ध उनके समीप पहुँचगये तब उनके आगे एकदमसे वह पांचों शिष्य उठकर खड़े होगये बुद्ध भगवान् उनके चेहरों से उनके दिलका हाल जानगये और बुद्ध भगवान् उनसे कहनेलगे जिस बातसे तुम्हारी इस शरीरपर श्रद्धा उठगई है अर्थात् जिन वस्त्रोंके पहरनेको तुमने अधर्मका साधन जाना है सो वास्तवसे वस्त्रोंका पहरना अधर्मका साधन नहीं

है किन्तु धर्मकाही वह साधनहै किन्तु नंगा रहनाही अधर्मका साधन है नंगे रहने से या जटा रखाने या मुँड़वाने से सच्चेधर्मों की प्राप्ति कदापि नहीं होसक्ती है और शरीरपर राख लगानेसे या कम्बल ओढ़नेसे और पंचाग्नि तापने से जलमें या धूपमें बैठनेसे सच्चे धर्मों की और मोक्षकी प्राप्ति कदापि नहीं होसक्ती है और यह सब कर्म चित्तको शुद्ध भी नहीं करसक्तेहैं और न इनके करने से चित्तकी शान्तिही होती है और देवतों की पूजा करने से तथा उपवास व्रतों के रखने से हिंसाप्रयुक्त यज्ञादिक कर्मोंसे मांस मद्य के पान करने से झूंठ बोलने से परस्त्री आदिकों के साथ भोग करनेसे और शरीर के सुखाने से भी चित्तकी शांति और मोक्षकी प्राप्ति नहीं होसक्ती है ऐ भिक्षुओ! मैं तुमको सच्चे धर्मों का उपदेश करताहूं जो आदमी सत्यको ग्रहण नहीं करता है केवल अपने नफे के लिये अनेक प्रकारके स्वांगों को धारण करता है वह संसारी लोगोंको धोखा देकर नरक में डालताहै और आपभी नरकमेंही जाताहै ऐभिक्षुओ! मुक्तिके साधनों को मैं तुम्हारे प्रति बतलाता हूं ॥ हमेशा सच्चही

बोलना कदापि झूंठको न कहना १ परोपकारही करना अपकार किसीका भी न करना २ किसी जीवकी भी हिंसाको नहीं करना ३ मांस और मदिरा का भक्षण कदापि नहीं करना ४ परस्त्रीआदिकोंका संग कदापि नहीं करना ५ ब्रह्मचर्य्य में दृढ़ रहना ६ झूंठी साक्ष को कदापि नहीं देना ७ और आत्माके ध्यान में मन को लगाना ८ दया और क्षमाको अपना मित्र बनाना ९ काम क्रोधादिक शत्रुओं के वशीभूत कदापि नहीं होना॥ येही सब सच्चेधर्म हैं बुद्ध भगवान् कहते हैं ऐ भिक्षुओ! जबतक इस जीवमें अहङ्कार मौजूदहै तब तक इसको मोक्षकी प्राप्ति कदापि नहीं होती है और जबतक जीव के मन में भोगों की और मान बड़ाई की वासना भरी है तबतक इस को सुख कदापि नहीं मिलता है जबतक यह कुछ बनना चाहता है तबतक महान्से महान् कष्टको प्राप्त होताहै और जो आदमी कुछ बनता नहीं है और जिसके दिलकी वासनायें नष्ट होगईहैं जो अपनी सच्चाईपर क़ायम है उसीको नित्यसुखकी और चित्तकी शान्ति की प्राप्ति होती है शरीर निर्वाह के लिये जोकि अन्न वस्त्रका

ग्रहण करना है वह दोषका जनक नहीं है जोकि कपट छलसे द्रव्य का पैदा करना है वही पाप का जनक है जैसे कमलका फूल जलमेंही रहताहै परंतु जल तिसको छू नहीं सक्ताहै तैसेही जो पुरुष अपनी सच्चाई पर क़ायम है उसके मनको सांसारिक दुःख छू नहीं सक्ते हैं शरीरको गर्मी और सर्दीमें तकलीफ देना बड़ीभारी मूर्खता है क्योंकि तकलीफ में मन दुःखी होकर सत्य असत्यका विचार नहीं करसक्ता है और न पूरा २ धर्मके स्वरूपकाही ज्ञान होता और न ध्यानादिकही होसक्ते हैं जितनेमें शरीरका निर्वाह विना कष्टके होजाये उतनी वस्तुके ग्रहण करने में भिक्षुको दोष नहीं है किंतु विषयभोगोंके लिये कपट छलसे द्रव्य के संग्रह करने में दोषहै हे भिक्षुओ! जिसने सुख दुःखके स्वरूप को नहीं जाना है और दुःख के दूर करनेके लिये यत्न नहीं करता है वह पुरुष इस जन्म में और आगे होनेवाले जन्मों में भी दुःखीही रहता है और जो सच्चे रास्तापर चलता है उसको इस जन्ममें और आगेवाले जन्मोंमें भी कभी दुःख नहीं होता है उसका चित्त हमेशा शान्तही

रहताहै जो वस्तु कि उत्पन्न होती है वह ज़रूर एक दिन नाशको भी प्राप्त होजाती है आत्मा ऐसा नहीं है क्योंकि आत्मा न तो उत्पन्न होताहै और न नाश को प्राप्तहोताहै जैसे कि नींदमें जबतक पुरुष सोयारह-ताहै तबतक वह स्वप्नके दुःखसुखको अनुभव करता है जब कि नींद से जागताहै तब नींदके दुःख सुखको फिर अनुभव नहींकरताहै इसीप्रकार अज्ञानरूपी नींद मेंसोयेहुये पुरुषभी संसारके दुःखोंको अनुभव करतेहैं जब कि आत्मज्ञानमें उनमेंसे कोई एकभी जग पड़ता है तब वह संसार के दुःखों को अनुभव नहीं करता है फिर जिस पुरुषको रज्जुमें सर्प भ्रम होरहा है वह रज्जुको सर्प जानकर भयकम्पको प्राप्त होताहै जिसका रज्जुमें सर्प भ्रम मिटगया है वह भयकम्प को प्राप्त नहीं होताहै तैसेही जिसको आत्ममें भी भ्रम होरहा है आत्मा जन्म मरण और दुःखादिकोंवालाहै उसको अवश्य जन्म मरणका भय होता है जो आत्मा को जन्म मरणवाला नहीं जानता है उसको जन्म मरण का भी भय नहीं होता है जिस पुरुषने सच्चाई पर भरोसा रक्खा है वह पुरुष हमेशा के लिये सुखी

हो जाता इस प्रकारके बुद्धके उपदेशों को सुनकर उन पांचों शिष्यों की बुद्धपर बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो आई और बड़े प्रेम से सिद्धार्थ के उपदेशों को बहुतसे लोग नित्यही सुननेको आते और बुद्ध भगवान्से लाभ उठाते और बड़ी श्रद्धासे बुद्धके गृहस्थी चेले बननेलगे थोड़ेही दिनोंमें प्रथम बनारस के ज़िले मेंही हज़ारों चेले बनगये फिर बुद्धने अपने शिष्यों से कहा जो आदमी अकेलाही सच्चाई के फैलाने के लिये कमर बांध लेता है वह कभी भी गिरता नहीं है तुम लोग आपसमें मिलकरके रहो और एक दूसरेकी सच्चाइके बढ़ानेमें मददको करो और देशमें सच्चे उपदेशोंको करके लोगोंको दुःखसे छुड़ावो बुद्धकी आज्ञाको लेकर हरएक शिष्य एक २ देशमें जाकर सच्चेधर्मोंका उपदेश करनेलगा ॥ इन्हीं दिनों में यशशनाम करके खानदान जवान बड़ा प्रभावी रहता था एकदिन वह रात्रीके समय किसी दुःखसे दुःखी होकर बुद्धके पास पहुंचा और कहनेलगा बड़ा दुःखहै बुद्धने कहा हमारे पास दुःखका नाममात्रभी नहींहै आओ तुमकोभीसुखी करदें वह बुद्धके पास जाकर बैठगया बुद्धने अपने

उपदेशों करके तिसके चित्तको शान्तकरदिया वह बुद्ध का शिष्य बनगया बुद्धके पास धीरे २एक भिक्षु शिष्यों की मण्डली बनगई उनमें जो कि विद्वान् और समझ बहुत रखते थे उनको बुद्धने देशान्तर में सच्चेधर्मोंका उपदेश करने के लिये भेजदिया बुद्धभगवान्‌की वाणी में ऐसी शक्तिथी जो उनके उपदेश को सुनताथा वही शिष्य बनजाता था अब दूर २ से लोग उनके दर्शन को आनेलगे और बुद्धके मतको सुनकर शिष्य बनने लगे अब बुद्धका मत धीरे २ फैलनेलगा उन दिनोंमें अग्निकी उपासना बहुतही लोग करतेथे काशेयनाम करके एक उनका महंत हज़ारोंआदमी अग्निकी उपासना करनेवाले तिस काशेयके शिष्यथे काशेयनेअपने मकान के अन्दर एक दूसरा मकान बनवाया हुआथा जिसमें अग्नि हरवक्त मौजूद रहतीथी रात्रीको उस मकान में कोई आदमी रहने नहीं पाताथा क्योंकि उसमें एक ज़हरीला सांप रहताथा वह मारडालताथा एकरोज़ बुद्धभगवान् उसके पासगये और काशेय से कहने लगे हमको रात्रीके समय इस अग्निवाले मकानमें तू रहनेदे काशेयने कहा हे भगवन्! इस मकान

एक सांप रहता है वह आदमी को अपने ज़हर के शोलों से भस्म करदेता है जब कि बुद्ध ने बहुत कहा तब उसने मानलिया रात्रिको बुद्ध उस मकान में जा-कर बैठ रहे आधी रात को सांप निकला और अपने ज़हर के फुंकारे बुद्ध पर उसने फेंके आख़िर को बुद्ध के तेज से वह मरगया सवेरे बुद्ध को जीता और सांप को मरा देखकर काशेप के मन में यह ख्याल हुआ बुद्ध सिद्ध तो है मगर हमारी तरह शुद्ध नहीं है तब बुद्ध ने कहा काशेप जो आदमी अपने को बड़ा शुद्ध मानता है और दूसरे को अशुद्ध मानता है वह ठीक २ धर्म के रास्ता को जानता नहीं है क्योंकि यह जो चित्त में अहंकार भराहै हम शुद्धहैं हम उत्तम हैं यह अहंकार ही धर्म के रास्ता पर लोगों को चलने नहीं देता है जब तक इस अहंकार को पुरुष दूर नहीं करसक्ता है तब तक कदापि शुद्ध नहीं होसक्ता है काशेप आत्मा सब का वास्तव में शुद्ध है परन्तु बुरे कर्मों करके और राग द्वेषादिकों करके अशुद्ध बन रहा है जैसे दर्पण वास्तव में शुद्धही है परन्तु मैल के सम्बन्ध से अशुद्ध होरहा है बस मैल के हटाने का

नामही शुद्धी है तैसे आत्माभी तीनों कालमेंही शुद्ध है परन्तु अविद्यारूपी आवरण करके अशुद्ध प्रतीत होताहै अविद्या के दूर करनेकी ज़रूरत है अविद्या के दूर करने का नामही शुद्धी है शुद्धि और कोई चीज़ नहीं है सो अविद्यारूपी मल सच्चाई और प्राणीमात्र पर दया करने से और परोपकार करने से जीवमात्र में प्रेम रखने से और ब्रह्मचर्य्य में दृढ़होने से दूर होती है अग्निकी उपासना से और जीवों को बलिदान करने से वह अविद्या कदापि दूर नहीं होती है किन्तु वृद्धि को प्राप्त होती है हे काशेप तुम अपने मन में खूब सोच विचार को करो॥ बुद्ध के सच्चे उपदेशों को सुनकर काशेप का मन द्रवीभूत होगया और काशेप ने भी बुद्धभगवान् से उपदेश को लेकर संन्यास को धारण करलिया काशेप जब कि बुद्धभगवान् का शिष्य संन्यासी बन गया तब कई हज़ार तिसके चेले भी बुद्ध के गृहस्थी चेले बन गये बुद्ध दो प्रकार के शिष्य बनाते थे एक तो उपदेश लेकर घरका त्यागकर भिक्षु बन जाते थे दूसरे उपदेश को लेकर बुद्ध के धर्मों पर श्रद्धा करके पुराने धर्मों का त्याग करके

गृहस्थी बने रहते थे ॥ बुद्धभगवान् थोड़े दिन और वहांपर लोगों को उपदेश देकर काशेप वग़ैरह भिक्षुओं को साथ लेकर राजगृहीकी तरफ़ रवाना हुये जब राजगृही के समीप पहुंचे तब राजगृही के राजा को बुद्धके आने की ख़बर पहुंची और बुद्ध के उपदेशों की ख़बर तो राजा को पहलेही पहुंच गई थी राजा अपने मंत्रियों को और अपनी सेना को साथ लेकर बुद्ध के लेने को आया और बड़ी प्रतिष्ठा के साथ राजा बुद्धको लेगया नगर के बाहर पर्वत के समीप बुद्ध भगवान् ठहरे अब उसी जगह में मेला जमने लगा और काशेपको भगवान् का शिष्य बनेहुये देखकर और भी लोग हैरान होगये जिस काशेप के हज़ारों चेले थे वह काशेप अपने पुराने धर्मों का त्याग करके अपने सेवकों के सहित जब कि बुद्ध का शिष्य बन गया है तब ज़रूर इनके वाक्यों में विलक्षण शक्तिहै और अवश्य इनके उपदेश कियेहुये धर्म भी सच्चे हैं बुद्धभगवान् ने लोगों के मनकी बातको जानलिया और सब लोगों के सामने काशेप से कहा हे काशेप कहो तुमने कौनसा ज्ञान हासिल करके अग्नि की

उपासना का त्याग करदियाहै और अति कठिन व्रतों के धारण करने का भी त्याग करदिया है काशेपने कहा जो अग्नि कि खुदही जड़ है और गर्मी को पैदा करती है उस अग्निकी उपासना करनेसे मेरे को कोई ज्ञान और सच्चा धर्म हासिल नहीं हुवा है बल्कि तिसकी उपासना करने से चित्तको सदैव काल विक्षेपही बनारहता है जो कि आपही जड़ है वह ज्ञान और धर्म का उपदेश नहीं करसक्ता है इस लिये मैंने अग्नि की उपासना का त्याग करदिया है सच्चे ज्ञान और सच्चे धर्मों की प्राप्ति चेतन सेही होसक्ती हैं इस लिये मैंने बुद्धभगवान् को सच्चा गुरू बनाया है जिन के उपदेश से मेरे को आत्मज्ञान का लाभ हुवा है बुद्ध भगवान् कहते हैं जो आदमी स्वप्न को देखता है वह स्वप्न के भूत से भी डरता है जिसकी नींद खुलगई है और जागपड़ा है वह स्वप्न के भूतसे डरता भी नहीं है और न कांपता है इसी तरह जो पुरुष अज्ञानरूपी निद्रा में सोया है वह संसार के अहंकारादिकों से डरता है और कांपता है जब कि ज्ञानरूपी जाग्रत् को प्राप्त होजाता है तब वह जानलेता है जो कि अहं-

कारादिक वास्तव से नहीं हैं मेरे साथ इनका कोई संबन्ध भी नहीं है मैं इनसे न्यारा हूं तीनोंकाल में मैं ज्योंका त्यों एक रसहूं ॥ यह सब संसार मनकाही बनाया हुआ है मैं मन नहीं हूं किन्तु मनसे न्यारा और मनका भी मैं साक्षी हूं मनके मैं अधीन नहीं हूं किन्तु मन मेरे अधीन है जो पुरुष ऐसे जानता है वह मनके पीछे लगकर बुरे कामों को नहीं करता है वह हमेशह अपनी सच्चाई पर क़ायम रहता है और सच्चे धर्मों की पालना करता है क्योंकि सच्चे धर्मोंकी पालना करने सेही पुरुष बंधन से छूटसक्ता इस तरह बुद्धभगवान् के उपदेशों को सुनकर राजाने कहा भगवन् जब कि मैं राजकुमार था तब मेरे चित्तमें पांच बातों की प्राप्ति की इच्छा थी एक तो राजा बनने की मेरी इच्छा थी सो पूरी होगई दूसरी मेरी यह इच्छा थी कि बुद्धभगवान् की प्रसिद्धि मेरेही देशसे हो वह भी पूरी हुई तीसरी यह इच्छा थी कि बुद्धभगवान् की मैं बड़ी प्रतिष्ठा करूं वह भी पूरी हुई चौथी यह इच्छा थी जो कि बुद्धभगवान् मेरे को सच्चे धर्मों का उपदेश करें सो भी पूरी हुई पांचवीं यह इच्छाथी

कि मैं बुद्ध भगवान् के उपदेश किये हुये धर्मों को समझकर धारण करलेऊं यह भी पूरी होगई फिर राजा ने कहा मैं अब बुद्ध धर्म की शरण को लेताहूं और बुद्ध भगवान् को अपना गुरू बनाताहूं फिर राजा ने कहा मेरी एक आरजू बाकी है उसको भगवान् मंजूर करैं वह यह है मेरा जो कि आराम बाग़ है उसको मैं भिक्षुओं की भेटकरताहूं उसमें हमेशा भिक्षु लोग रहा करैं और मेरी तरफ से उनकी सेवा भी हुआ करै बुद्ध भगवान् ने राजाकी इस आरजू को भी मंजूर करलिया॥ अब बुद्ध के उपदेशों को सुनकर दूर२ से लोग आने लगे और बुद्ध के सच्चे धर्मों को ग्रहण करके बुद्धमतकी शरण को प्राप्त होनेलगे उन दिनों में अनाथ पंडक नामी एक बड़ा दौलतमन्द सेठ राजगृही में आया हुआ था और वह बड़ा उदार आत्मा मशहूर था क्योंकि ग़रीबों को वह बड़ा दानदेता था अनाथोंका वह नाथ था उसने जब कि लोगों से बुद्ध के उपदेशों का हाल सुना तब वह भी बुद्ध के समीप पहुंचा और आकर बुद्ध के समीप वह बैठगया और बुद्धकी मधुरवाणी से अमृत रूपी उपदेशों को

वह सुननेलगा बुद्ध ने कहा मन और इन्द्रियों की जो कि चंचलता है यहही दुःखका कारण है इसका हटानाही सुखका कारण है इस लिये तुम प्रथम मन और इन्द्रियों को अपने क़ाबूमें करो और सत्य भाष-ण से तथा दया और क्षमा करने से और परोपकार करने से जीवमात्रकी रक्षा करनेसेही यह मन और इन्द्रिय सब क़ाबू में होजाते हैं क्योंकि जितने अनर्थ होते हैं वह सब ऊपर वाली बातों के न करनेसेही होते हैं उनके करने से कोई भी पाप फिर पुरुष से नहीं होता है॥ इस लिये सत्य भाषणादिक ही सच्चे धर्म हैं और हमेशा एक रस रहते हैं जिस पुरुष ने पूर्वोक्त सच्चे धर्मों की शरणली है उसको किसी का भी डर नहीं रहता है जो पुरुष नेक कामों को ही करता है वही जन्म मरण से छूटजाता है जो पुरुष प्राणियोंकी हिंसा रूपी कुकर्म को करता है और ई-श्वरकी स्तुति को भी करता है वह कदापि जन्म मरण से नहीं छूटसक्ता है जो पुरुष कदापि ईश्वरकी स्तुति रूपी भक्ति को नहीं करता है परन्तु सदैव काल स-फ़ाई में क़ायम रहता ब्रह्मचर्य्य में दृढ़ रहता है जीव-

हिंसा और अपकार से बचा रहता है परकी स्त्री को माता और भगिनी करके जानता है सबसे मैत्री करता है कुकर्मियों को कुमार्ग से हटाकर सत्यमार्ग में लगाता है वह निर्वाण पदवी को प्राप्त होता क्योंकि ईश्वर की आज्ञा के पालन करने का नामही भक्ति है ईश्वर न्यायकारी है तब फिर सचाई वाले को ईश्वर से भय भी नहीं होता है जो आदमी चोरी आदिक बुरे कर्मों को करता है चाहे वह कितनी राजा की बड़ाई करे परन्तु न्यायकारी राजा तिसको विना दण्ड दिये कदापि नहीं छोड़ता है यदि राजा न्याय न करे और अपनी बड़ाई सुनकर तिसको छोड़दे तब राजा का न्यायकर्ता रूपी धर्म जातारहता है परन्तु राजा अपने न्यायकर्ता रूपी धर्म को नहीं छोड़ता है तब ईश्वर कैसे अपनी कोरी बड़ाई से कुकर्मी को दण्ड देने से छोड़देगा कदापि नहीं बस सच्चे धर्मोंमें आरूढ़ रहनाही ईश्वर का मानना है जो मुखसे तो कहता है हम ईश्वर को मानते हैं और कुकर्मों को करता है वह ईश्वर को नहीं मानता है वह नास्तिक है॥ सेठ ने कहा महाराज जैसा कि मैंने आप को

ज्ञानी सुनाया वैसाही मैंने आपकोदेखा बस अब हम को क्या करना चाहिये मेरे लिये जो कर्त्तव्य अब बाकी हो सो बताइये जिसके करने से मैं निर्वाणको हासिल करलेऊं ॥ बुद्ध ने कहा हमारा यह तात्पर्य नहीं है जो घरबार को छोड़कर संसार से अलग हो जाये संसार से बाहर तो कोई जगहही नहींहै सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का नामही संसार है बस तुम अपने घर में रहकर केही सच्चे धर्मों की पालनाको करो और धर्म के जीवन को हासिलकरो और ज़िन्दगी तथा दौलत और ताक़त ये तीनों पुरुष को अपना गुलाम नहीं बनासक्ती हैं बल्कि आदमी उन में आसक्त होकर आपही उनका गुलाम बनजाता है तुम इनमें आसक्ती मत करो अष्टांग योग को और सच्चाई को हासिल करनाही अब तुम्हारे लिये कर्त्तव्य है ॥ अनाथ पण्डक ने कहा मेरी राय है कि मैं अपने देशमें एक धर्मशाला आपके भिक्षुओं के रहने के लिये बनाऊं और भिक्षुकलोग वहांपर रहकर लोगों को धर्म का उपदेश कियाकरें और एकबारआपभी वहांपर पधारें जोकि सबलोग आप के दर्शन से और उपदेशों से

लाभको उठावें मेरी इस आरज़ू को आप मंजूर करें बुद्ध ने उसकी आरज़ू को मंजूर करलिया और अनाथ पण्डक रुख़सत होकर अपने देश को चलागया॥ बुद्ध के शिष्य भिक्षुकलोग जबकि सब देशोंमें जाकर बुद्धमतको फैलाने लगे तब बुद्धधर्म बड़े ज़ोर शोरसे फैलने लगा और राजालोग भी इस धर्म में आनेलगे तब बुद्धका पिता जो राजा शुद्धो नामवालाथा उस को भी हाल मिला जोकि बुद्धका मतलब पूराहोगया है बुद्ध को निर्वाण पदका लाभ होगया है तब राजा ने राजगृही में अपने मन्त्री को बुद्धके बुलानेके लिये भेजा और बुद्ध ने भी पिता से कहा था कि एक बार आप के पास आऊंगा बुद्धभगवान् भिक्षुओं की मण्डली को साथ लेकर पिता की राजधानी की तरफ़ चलपड़े जब कि थोड़े दिनों में नगर के समीप पहुँचे तब राजा अपनी सेना वग़ैरह को लेकर बुद्ध के लेने को आया जबकि बुद्ध से राजाकी भेंट हुई तब राजा ने बुद्ध को प्रणाम किया और मोह के वश्य में होकर राजा के नेत्रों से जलकी धारा बहनेलगी क्योंकि सात बरस के पीछे राजाको अपने पुत्रका दर्शन हुआ था

राजा ने कहा मे चाहता हूं अपनी राज्य को तुम्हारी नज़र करदेऊं मगर तुम इसबात को नहीं मानोगे इसलिये मैं इस वार्त्ता को नहीं कहताहूं बुद्ध ने कहा आपकी कृपा से मुझको वो अटल राज मिलाहै जिसका नाश कदापि होनेवाला नहीं है कुछदिन बुद्धभगवान् पिता के देश में रहे और अपने सच्चेधर्मोंके उपदेशों से लोगों को कृतार्थ करते रहे राजा शुद्धो और तिसकी सम्पूर्ण प्रजा ने बुद्धमत को स्वीकारकर लिया फिर बुद्धभगवान् वहां से चलकर भिक्षुओंकी मण्डलीके सहित अनाथ पण्डकके देशको चलेआये इधर अनाथ पण्डककी मरज़ी हुई भिक्षुओं के लिये मकान बनवाने की तब राजकुमार से कहा अपना बाग़ हमारे हाथ बेंचदीजिये प्रथमतो बाग़के देनेकी सलाह राजकुमार की नहींथी मगर जब उसको मालूमहुआ कि धर्मकार्य के लिये अनाथ पण्डक लेना चाहते हैं तब उसने मंजूर कर लिया अनाथ पण्डक ने बाग़में एक बड़ा आलीशान दालान बनवाया और उसको आरास्ता किया इस राजधानी का नाम शरावस्ती था जबकि मकान तैयार होगया तब बुद्धभग-

वान् भी भिक्षुओं की मण्डली के सहित वहांपर पहुँच गये वहांका राजा और अनाथ पण्डित बड़ी प्रतिष्ठा के साथ बुद्धभगवान् को उस मकानमें लेगये ॥ अब बुद्धभगवान् अपने उपदेशोंसे लोगोंको कृतार्थ करने लगे राजा भी वहांका शिष्य बनगया औरलोग भी सब शिष्य बनने लगे बुद्ध के वाक्य में ऐसीएक विलक्षण शक्ति थी जिसको श्रवण करके लोग मस्तहोजाते थे और अपने को कृतार्थ मानते थे बुद्ध मतसे पहले जिन लोगोंको संसार बन्धनसे छूटनेकी इच्छा होती वह लोग श्मशानों में रहतेथे फटे पुराने कपड़ों को पहिनते थे गरमी और सरदी का सहन करते थे पुराने गिरे पड़े कपड़ों को पहननेथे पांवसे नङ्गे रहते थे भूख प्यास को सहारते थे इसी से रोगी रहते थे अल्पायु वाले होजाते थे बुद्ध ने इन सब बातों की परीक्षा करके जान लिया कि यह अज्ञान का कार्य्य है और सच्चे धर्मों के हासिल करने में महान् विघ्न है इसलिये बुद्ध ने इन बातों का निषेध करदिया और सब भिक्षुओं को वस्त्र पहरने की और पांव में जूता पहरने की आज्ञा को देदिया जब लोगोंने इस बातो

को सुना तब चारों तरफ़ से भिक्षुओं के लिये अनेक प्रकार के वस्त्रों को और जोड़ों को लानेलगे और राजाजी तो एक उमदा पोशाक बनवाकर बुद्धभगवान् के लिये लेगया उसको बुद्धभगवान्ने पहनलिया और सब भिक्षुओंको भी बुद्धने वस्त्र पहरनेकी आज्ञा को दे दिया शरीर निर्वाह से अधिक का संग्रह नहीं करना जबकि राजा शुद्धों का अन्तका समय समीप पहुँचा तबतिसने फिर बुद्धको कहला भेजा अब मेरा अन्तका समय समीप आगया है आप आकर मेरेको दर्शन देवें बुद्ध वहांपर गये और राजाशुद्धों को बुद्ध ने आत्मज्ञान का उपदेश किया॥ बुद्धकी गोद में राजशुद्धों ने अपने शरीर का त्याग करदिया फिर वहां से आकर बुद्ध ने अपने भिक्षुओं को सच्चे धर्मों के प्रचार के लिये देशदेशान्तर में रवाना किया और आपभी आठमहीना बाहर देशान्तरों में फिरकर बुद्ध सच्चे धर्मों का प्रचार करते थे और चारमहीना चतुर्मासके राजगृही पर्वत में आकरके गुजारते थे इसी तरह ४४ चौतालीस वर्ष तक उपदेश को करते रहे बुद्ध के उपदेशों को सुन तमाम हिंद बौद्धबनगया॥

उनतीस वर्ष की उमर में बुद्ध ने संन्यास को धारण किया और एकसाल तक बुद्धने दर्शनोंको पाढ़ा और योगाभ्यास को सीखा फिर छः वर्ष तक बुद्धने कठिन तपस्या को किया और चौतालीस वर्षतक बुद्धने सब देश में फिरकर लोगोंको धर्मकार्यमें लगाया कुल असी वर्ष की उमरतक बुद्ध जीतेरहे पश्चात् इस अनित्य संसार का त्याग करके विदेहमुक्तिको प्राप्तहोगये सन् ईसा से ६२३ वर्ष पहिले बुद्धका जन्महुआ और सन् ईसा से ५४३ वर्ष पहले बुद्धभगवान् का देहांत होगया ॥ बुद्धभगवान् जैसे महान्ऋषी ऐसाप्रभाव किसी का भी नहीं हुआ है क्योंकि और जितने कि ऋषि मुनि आचार्य्य हुये हैं उनके मतानुयायी इसी देशमें हैं सो भी थोड़े २ बुद्धमतानुयायी अबभी ब्रह्मा चीन जापान सिलोन वगैरः देशों में पचास करोड़ आदमी मौजूद हैं धन्य है बुद्धभगवान् ! धन्य है तिसके उपदेश ! ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामीहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्द समाख्याभरेणपिशावरनगरनिवासिनाथितिसंज्ञेयेण बुद्धजीवनचरित्रमध्यदेशीयभाषायांकृतःसमाप्तः५॥

---

# अब राजा भरथरी के जीवनचरित्रको संक्षेप से लिखते हैं॥

---

इस भारतखण्ड में उज्जैन नगरी एक प्रसिद्ध स्थान है और हिन्दू लोगों का वह बड़ाभारी तीर्थ भी है और महाकालेश्वर जो कि बारह ज्योतिर्लिङ्गों में प्रसिद्ध एक ज्योतिर्लिङ्ग है तिसका एक बड़ाभारी मन्दिर भी इसी उज्जैन नगरी में नदी के किनारेपर है यह नगरी बहुतही प्राचीन है और दूर २ के हिंदू लोग इस तीर्थ में यात्रा करने के लिये जाते हैं और बारह बरसों के पीछे उज्जैन में नदी के किनारे पर एक बड़ाभारी मेला वैशाख के महीने में होता है जिसका नाम उज्जैन का कुम्भ है इस मेले में हजारों साधु संन्यासी उदासी वैरागी वगैरः जाते हैं मगर वैरागी रामदत्त और सब वेषों के साधुओं से भी अधिक होता है पूर्वकाल में चन्द्रगुप्त नामकरके बड़ा प्रतापी इसी उज्जैन नगरी का राजा हुआ है तिस राजा की तीन रानी थीं और हरएक रानी के एक २

लड़का था सबसे बड़ी रानी में से जो कि लड़का उत्पन्न हुआ था तिसका नाम राजा ने भरथरी रक्खा था और मँझली रानी में जोकि लड़का उत्पन्न हुआ था उसका नाम राजा ने विक्रमाजीत रक्खा था और सब से छोटी रानीमें जोकि लड़का उत्पन्न हुआ तिसका नाम शंख रक्खाथा ॥ भरथरी जी विक्रमाजीतके बड़े भाई थे और शंख विक्रमाजीतका छोटाभाईथा राजा ने तीनों लड़कों को छोटी उमर में ही विधिपूर्वक राजनीति और धर्मशास्त्रों के ग्रन्थ तथा दर्शनादिक जितने शास्त्र हैं सब पढ़ा दिये थे और घोड़ों पर सवार होना तथा हथियारों का चलाना निशानों का लगाना इस सिपाहगरी को भी सिखलादियाथा और तीनों लड़कों के विवाह भी करा दियेथे जबकि राजा के मरने का समय समीप पहुँचा तब राजा ने तीनों लड़कों को अनेक प्रकार की शिक्षा को देकर कहा मेरे मरने के अनन्तर भरथरी जीको गद्दी हो और राज काज को तीनों ने मिलकर के करना तथाच राजा के देहान्त के पश्चात् सब लोगों ने मिलकर के भरथरीजी को राज़ तिलक देदिया अब भरथरी

जी राजाबनगये अर्थात् राजकाज को करनेलगे और विक्रमाजीत तथा शङ्ख दोनों भाई राजसम्बन्धी कार्य्य को देखनेलगे विक्रमाजीतका मन देशान्तरको देखने में बहुत ही लगताथा और तीर्थाटन करनेका भी उन को शौकथा इसलिये वहहमेशा बाहर तीर्थोंमेंही अटन करते रहतेथे और तीर्थोंमें जाकर बड़े २ पण्डित और महात्मोंकी संगति करते उनसे उत्तम उत्तम गुणोंका लाभ उठातेथे और कभी २ अपनी राजधानी में भी चलेआतेथे और शङ्खतो हमेशा अपने राज्यमेंही रहते और भरथरीजी के आगे मन्त्रीपनेका काम करते थे भरथरीजी सब काम करतेथे याने विषयभी अत्यन्त भोगते और महात्मों के पास जाकर सत्संग भी करते और शिकार वगैरह कामोंकोभी करतेथे॥एकदिन भर-थरीकी सभामें महात्माओंका प्रसंगचलाथा तब एक पुरुषने कहा फलाने पहाड़ में एक महात्मा बड़े तप-स्वी रहते हैं वहभी दर्शन करने के योग्य हैं क्योंकि बड़ी शान्तमूर्त्ति हैं और वैराग्यकी अवधिहैं भरथरीजी ने कहा हम किसी दिन उनके दर्शनके लिये जावेंगे एकदिन भरथरीजी पालकीपर सवारहुये और बहुतसे

नौकरोंको साथलेकर उसी पर्व्वतकी तरफ रवानाहुये जहांपर कि वहमहात्मा रहतेथे वहांपर पहुँचकर महात्माको प्रणाम करके भरथरीजी उनके समीप बैठगये और सत्संगकी बातें होनेलगीं जब कि सत्संगकी बातें समाप्तहुईं तब भरथरीजीने महात्मासे पूँछा आप किसी कामना को लेकरके तपस्याको करते हैं या निष्काम होकर करते हैं यदि आपके मनमें कोईभी कामना नहीं है तब फिर इतनी तितिक्षा का सहारना व्यर्थ है और यदि आपके मनमें कोई कामनाहै तब तिसकामनाको मेरेप्रति कहिये मैं उसको पूर्ण करदेऊंगा ॥ तपस्वीने भरथरीजीके ऐश्वर्य्य को देखकर भरथरीजी से कहा हम राजा बननेकी कामनाको लेकर तपको करतेहैं भरथरीने कहा आठदिनके लिये मैं अपनाराज भोग आपको देताहूं यदि इससे आपको तपस्या से अधिक सुखका लाभहुआ तब फिर मेरेसे आकरके कहना मैं आपको किसी देशका राजा बना देऊंगा यदि राजभोग का सुख आपको अच्छा न जानपड़े तबभी मेरेसे आकरके कहना मैं अपने राज्यपर चलाजाऊंगा आप फिर इसी जगहमें आकर तपस्याको ही करना

तपस्वीने इस वार्ताको अंगीकार करलिया राजाने अप-
ने वज़ीर और नौकरोंके साथकरके राजधानी में तप-
स्वीको भेजदिया और आप वहां तप करनेलगे और
नौकरों से यहभी भरथरीने कहदिया था हमारी सब
विभूतिका महात्मा को दर्शनभी करादेना राजाका
मन्त्री तिस तपस्वी को नगरमें लेआया और राजाकी
जितनी कि विभूतिथी अर्थात् जो जो कि उत्तम उत्तम
हाथी घोड़े और जवाहिरात आदिकों के ख़ज़ाने वग़ैरह
थे उन सबका दर्शन मन्त्री ने उस तपस्वी को करा
दिया जिस काल में तपस्वीने सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यको देख
लिया तब मन्त्रीने कहा आप सिंहासनपर बैठकरके
भृत्योंके प्रति आज्ञादीजिये जो जो पदार्थ भोगने के
योग्य हैं उनको मँगाकरके भोगिये और राजकाजको
देखिये मन्त्री की वार्ताको सुनकर तपस्वी के मनमें
विचार उठा यदि इस राज्यकी विभूतिमें सुखहोता तब
राजा इसको हमारे प्रतिदेकर आप तपकरनेकी इच्छा
क्यों करता जिसवास्ते इसमें सुख नहींहै इसीवास्ते
राजा ने इसका त्याग करके मेरे को राज्य करनेमें
लगाया है और आप तपमें लगाहै फिर इसके प्रबंध

करने में भी अनेक प्रकारकी चिंताभी मनमें नित्य
अति रहतीहोगी फिर शत्रुओंका भयभी इसमें नित्य
ही बना रहताहोगा फिर इस विभूतिका विश्वासभी
कोई नहींहै क्योंकि आज एक राजाके पासहै कलको
दूसरा आकर अपना दखल करलेताहै तब महान् कष्ट
का हेतु यह विभूति होजाती है और युद्धमें मरनाभी
होजाता है यदि भागगया तब वह राजा से कंगाल
होजाता है फिर इसमें राजकुल के सम्बन्धियों से भी
नित्यही भय बना रहता है और भोजनादिकों में भी
सर्वत्र काल सन्देह बनारहता विचार करने से तो यह
राज्यभी एक दुःखकी खानिही है ऐसा विचार करके
तपस्वी ने मन्त्री से कहा मैं सिंहासन पर नहीं बैठूं-
गा और न मैं राजभोग करूंगा मैंने इसके गुण दोषों
का विचार करलियाहै सिवाय दोष के राज्य में कोई
भी गुण नहीं है यह भरथरीजीका राज्य भरथरीजी
केही पासरहे तपस्वी ने मन्त्री से कहा हम को जो
निश्चय करनाथा सो हमने निश्चय करलिया अब
हम अपने आसनपर जाते हैं और भरथरीजी को
राजधानी में भेजदेवेंगे ऐसा कहकर वह तपस्वी

वहां से चलपड़ा ॥ वहांसे चलकर जब कि तपस्वी पर्व्वत की गार में पहुँचा तब क्या देखता है जो कि दो हाथी आपसमें लड़ते सामनेसे चले आते हैं वहां पर रास्ता बहुत तंगथा इधर उधर कहींभी भागजाने के लिये जगह नहीं थी इसलिये वह तपस्वी पर्व्वतकी एक कन्दरा में घुसगया वह दोनों हाथी लड़तेहुये जब कि तिस कन्दरा के समीप पहुँचे तब एकहाथी ने उठाकर तिस दूसरे हाथी को तिस कन्दराके मुख के आगे पटकदिया वह पटकाहुआ हाथी उसी कंदरा के आगे गिरकर मरगया और कन्दरासे बाहर निकलनेका रास्ता बन्दहोगया जब कि बाहर को आने का रास्ता बन्दहोगया तब तपस्वी तिस कन्दरा के अन्दर घबराया और निकलने के उपायको सोचने लगा ॥ तब तिसको यह उपाय सोचपड़ा एक नोकदार पत्थर को लेकर इस हाथीका पेट चाककरके तिसमेंसे धीरे धीरे मांस को निकाल दियाजाये तब आपसे आप रास्ता बनजायेगा सिवाय इस उपायके और तो कोई भी उपाय बाहर निकलने का नहीं है ऐसा विचार करके तपस्वी ने वैसाही करना शुरूकरदिया अर्थात

नोकदार पत्थर से हाथीके पेटको चाक करके धीरे२ तिस से मांस को निकाला और बाहर को निकलने का मार्ग बनगया इसी में तपस्वी को आठदिन वहां गुजरगये और भूख प्यास ने भी तिसको बड़ा तंग किया बाहर निकलकर एक जलाशयपर जाकर तिसने स्नानकिया और फिर अपनी कुटीपर भरथरी जीके पास पहुँचा भरथरीजी ने कहा महाराज आप ने आठ दिनतक राज्यका भोग अच्छी तरहसे भोगा तपस्वी ने कहा मैंने आठदिन नरकका भोग कियाहै भरथरी ने कहा यह कैसे तब तपस्वी ने अपनी सब कथा को कहसुनाया और कहा आठघण्टा में आप के नगर में रहा और आपका ऐश्वर्य देखा तिसका फल आठदिन मैंने नरकभोग कियाहै जो कि सम्पूर्ण राज्य के ऐश्वर्य्य को भोगतेहैं उनको क्याजाने अन्त में क्या २ दुःख उठाने पड़ते होंगे सो हे राजन्! आप अपने राज्य को जाकरके सँभालिये और हमको अपने तपकाही सुख अच्छा है हम आपके राजभोग के सुखको नहीं चाहते हैं तपस्वी की वार्ता को सुनकर भरथरीजीके भी चित्तमें कुछ थोड़ा २ राजस-

म्बन्धी भोगों की तरफसे वैराग्य हुआ परन्तु तीव्र न हुआ इसलिये फिर अपनी राजधानीमें चलेआये ऐसा नियम है जबतक जिस पुरुषकी जिस विषय में राग बुद्धि बनी रहती है तबतक तिसका त्याग नहीं कर सक्ताहै यदि उस विषयके सम्बन्धसे किसी कालमें कुछ दुःखभी प्राप्तहोजाताहै तबभी वह उसका त्याग नहीं करता है क्योंकि तिस काल में तिसको मन्द वैराग्य होता है इसी से उस विषय में फिर भी राग बुद्धिहो-जाती है तपस्वी की वार्ता को सुनकर भरथरीजी को यत्किंचित् मन्द वैराग्य हुआथा इसलिये राजधानी में आकर फिर भरथरीजी का राजभोगों में रागहो-गया ॥ भरथरीजी के नगर के बाहर वन में एक ब्रा-ह्मण द्रव्यकी कामना को लेकर देवी की उपासना को करताथा जब कि तिसको देवी की उपासना कर-ते २ बहुतसा काल व्यतीत होगया तब एकदिन भ-गवतीने प्रसन्न होकर एक अमृतफल तिस ब्राह्मणको लाकरके देदिया और कहा यह अमृतफल है इस के खाने से तू अमर होजावेगा ऐसा कहकर देवी अन्तर्द्धान होगई तिस अमृतफल को लेकर ब्राह्मण

ने विचार किया इसअमृतफलको यदि मैं भक्षणकरले-ऊंगा तब बहुतकालतकतोमैं अवश्य जीतारहूंगा परंतु दरिद्री का बहुत कालतक जीने से मरनाही अच्छा है क्योंकि अधिक जीना तिसके दुःखकाही कारण है और संसारमें निर्द्धन होकर जीनेसे कोईभी कार्य्य सिद्ध नहीं होता है और न कोई दरिद्री का आदर-ही करताहै इससे तो बेहतरहै जोमैं इस फलको राजा के पास लेजाकर भेंटकरदेऊंगा राजा मुझको इस के देने से कुछ द्रव्य भी ज़रूर देवैंगे और उस द्रव्यसे मेरा निर्वाह भी अच्छीतरहसे होजायेगा ऐसा विचार करके तिस ब्राह्मणने तिस फल को लेजाकर भरथरी जीके आगे धरदिया-राजा तिस फलको देखकर बड़े आनन्द को प्राप्तहुये और तिस ब्राह्मण को राजा ने बहुतसा द्रव्य देकरके विदा करादिया राजाभरथरी का अपनी छोटी रानीसे बड़ा स्नेहथा इसलिये राजा अपने मन में विचार करने लगे यदि मैं इस फलको खाऊंगा तब मैं तो चिरकालतक जीताहीरहूंगा परन्तु मेरी प्यारी रानी तो उतनाकालतक नहीं जीवैगी तब तिस के विना मेरेको महान् क्लेशही होगा यदि मैं

इस फलको रानीके प्रति देदेऊं तब फिर मेरे को क्लेश नहींहोगा ऐसा विचार करके राजाने तिस फल को लेजाकर सब से छोटी रानी को देदिया आगे रानी की मैत्री घोड़ों के ऊपर जो कि दारोगा था तिस के साथ थी रानी ने विचार किया यदि मैं इस अमृत-फल को खाकर चिरकाल तक जीती रही और मेरा मित्र दारोगा मरगया तब तिसके बिना मेरा जीना किसकामका होगा किन्तु क्लेशकाही हेतु होगा ऐसा विचार कर के तिस फल को अपने मित्र दारोगा के प्रति तिसने देदिया रानी से अमृफल को लेकर दा-रोगा ने अपने मन में विचार किया यदि मैंने इस अमृतफल को खालिया और चिरकालतक मैं जीता भी रहा और मेरी मित्र वेश्या मरगई तब तिसके विना मेरा जीना किसकाम का होगा वेश्याके साथ तिस दारोगा की बहुतकाल से मैत्रीथी और तिस दा-रोगा का मन तिस वेश्या में अतिआसक्त होरहाथा इसलिये दारोगा ने तिस फल को लेजाकर वेश्या के प्रति देदिया अब फल को लेकर वेश्या विचार करने लगी यदि मैं इस फल को खाजाऊंगी तब हमेशा

ही व्यभिचार कर्म को करातीरहूंगी तब तो बहुतका-
ल जीना मेरे लिये पापकाही हेतु होगा इस से तो
बेहतर है जो मैं इस फल को लेजाकर राजाभरथरी
की भेंटकरूं राजाका चिरकाल तक जीना बहुतही
अच्छाहोगा क्योंकि राजा बहुतही धर्मात्मा है अधिक
जियेंगे तब अधिकही धर्म को करेंगे धर्मकी अधिक-
ता से प्रजाको सुखभी अधिकही होगा ऐसा विचार
कर तिस वेश्या ने फलको लेजाकर राजा की भेंट
करदिया अब राजा तिस फलको देखकर बड़े अचम्भा
में होगये यह फल वेश्या के पास कैसे चलागया यह
तो वही फल है जिस को ब्राह्मण ने मेरेप्रति दियाथा
और मैंने फिर अपनी रानीको दियाथा इस वेश्याके
पास यहफल कैसे चलाआया फिर राजाने तिस वेश्या
से पूछा यह फल तुमको कहां से मिला है वेश्या ने
कहा हमारा एकमित्र दारोगा जो कि आपके अस्त-
बल के घोड़ों पर दारोगा है उसने कहीं से पायाथा
सो मेरेसे उसकी अधिक प्रीति है इसलिये तिसने
हमको देदिया है राजा ने तिस दारोगा को बुलाकर
कहा सचकहो यह फल तुमको कहां से मिला था

जिसको तुमने वेश्या के प्रति दिया है उसने कहा मेरी जान बख़्शी जाये तब मैं सच्च कहूंगा राजा ने कहा हमने तुम्हारी जान को बख़्शा तू हमारे सामने सच्चा २ हाल सब कहदे दारोगा ने कहा यह फल मेरे को छोटी रानी ने दियाथा क्योंकि मेरी उस की बहुत काल से मैत्री है फिर राजा ने तिस रानी को बुलाकर कहा हमनें जो अमृतफल तुमको दिया था तिस फलको तुमने क्या किया सच्च २ कहेगी तब तो बचजायेगी वरना मारीजायेगी रानी ने भी सच्च सच्च कहदिया वह फल हमने दारोगाको देदिया था॥ रानी की तथा दारोगा की और वेश्याकी अर्थात् तीनों की वार्त्ता को सुनकर राजा के चित्त में बड़ी ग्लानि भोगों की तरफ़से उत्पन्न हुई और उसीकाल में सिंहासन से उठकर राजा बाहर जंगल में जाकर के बैठगये क्योंकि राजा को तिसकाल तीव्र वैराग्य उत्पन्न हो आया अब राजा जंगल में बैठकर वैराग्य के भरेहुये वाक्यों को कहते हैं भरथरी जी कहते हैं अहो मैंने विषय भोगों में व्यर्थही अपनी आयु को खो दिया जिस स्त्री से मैं अति स्नेह करताथा फिर

जिस रानी का मैं निरन्तरही रात्रि दिन चिन्तन करता था तिस रानी का मेरे में चित्त से यत्किञ्चित् भी स्नेह नहीं था किन्तु तिस रानी का मन परपुरुष में लगाथा इसलिये वह रानी मेरे चिन्तवनको छोड़ कर दूसरे का चिंतवन करतीभई और वह जो कि रानी का मित्रथा तिसका स्नेहभी रानीमें कुछ नहीं था यदि तिसका स्नेह रानी में होता तब वह वेश्यासे प्रीति को क्यों करता जिस हेतु से तिसका वेश्याही में अधिक प्रेम था इसी हेतु से उसने अमृतफल को भी वेश्याकेही प्रति देदियाथा और तिसवेश्याका भी तिस दारोगा में प्रेम नहीं था क्योंकि वेश्यों के अनेक मित्र होते हैं इसी से उस वेश्या ने अमृतफल को मेरेप्रति देदिया है धिक्कार है उस रानी को जो मेरे ऐसे राजा का त्याग करके एक तुच्छ पुरुष के साथ तिस ने प्रीति को किया है और धिक्कार है तिस पुरुषको भी जिसने ऐसी रानी से प्रीति का त्याग कर फिर तुच्छ वेश्या के साथ प्रीति को किया॥ और फिर तिस कामदेव को भी धिक्कारहै जिसने संसारी लोगोंको मोक्ष के साधनों से रोककर विषय लंपट कररक्खाहै राजा

कहते हैं हमको भी धिक्कारहै जो एक स्त्री के वश में होकर अमृतफलका भी मैंने त्याग करदिया था ऐसे कहकह के राजाने तिस अमृतफल को खालिया राजाभरथरी परमवैराग्य को प्राप्त होकर आगेवाले श्लोकों को कहते हैं॥

न वैराग्यात्परंभाग्यं न बोधादपरःसखा ॥
न हरेरपरस्त्राता न संसारात्परोरिपुः १ ॥

वैराग्य से परे और कोई भाग्य नहीं है अर्थात् जो कि वैराग्यवान् पुरुषहै वही भाग्यशालीहै वैराग्य से अधिक सौभाग्यता पुरुष के लिये नहीं है और आत्मज्ञान से बढ़कर दूसरा कोई भी मित्र नहीं जो कि संसार बन्धन से छुड़ादेवै और महादेव से बढ़कर कोई रक्षित नहीं है॥और इस जन्म मरणरूपी संसार से परे कोई दूसरा शत्रु नहीं है १ भरथरी जी कहते हैं जैसे स्त्रीवाले पुरुष का मन नित्यही पर स्त्री के पीछे जाता है तैसे पतिवाली स्त्रीका मनभी नित्य ही परपुरुषके साथ गमन करने को चाहताहै॥और जैसे सुन्दर रूपवती युवास्त्री को देखकर पुरुष का मन लोलुप और चंचल होता है तैसे सुन्दररूप

वाले और युवाअवस्थापन्न पुरुष को देखकर स्त्री का मनभी लोलुप और चञ्चल होजाताहै और जैसे वृद्ध पुरुष भी नित्यही युवा और सुन्दरस्त्रीके भोगने की इच्छा करता है किन्तु वृद्धा स्त्री को नहीं चाहता है तैसे वृद्धास्त्री भी सुन्दर और युवा पुरुष के साथही रमण करने की इच्छा करती है वृद्धपुरुष की इच्छा नहीं करती है ऐसा अनादिकाल का चक्र चलाआता है यह सब कामदेवका महत्त्वहै॥ परन्तु ऐसानियमहै जो पुरुष कि वैराग्य से शून्यहैं उन्हीं पर कामदेव का बल बढ़ताहै और उन्हीं भाग्यहीन पुरुषोंको कामदेव अपनापशु बनालेताहै वैराग्यवान् पुरुषों पर कामदेव का बलनहीं चलसक्ताहै देखो वैराग्यकीअवधि जोकि महादेवजीहैं उन्होंने कामदेवको भी एक क्षणमात्रमें भस्म करदिया था इसलिये वैराग्यही सुख का हेतु है यह विषयभोग्य सुख के हेतु नहीं हैं किन्तु दुःख काही यहसब मूलकारण है॥ फिर भरथरीजी कहते हैं यह जो काम और क्रोधहै यही दोनों सम्पूर्ण जीवों के महान् शत्रु हैं और परस्पर पिता पुत्रभीहैं क्योंकि काम सेही क्रोध की उत्पत्ति होती है सम्पूर्ण जगत्

को जीत कर के विजय के पताके को लेकर यह घूम रहे हैं इन दोनों को जिसने जीत लिया है उसी को नित्य सुख मिला है और यह कामदेव ऐसा बली है इसी ने ब्रह्मा को जीतलिया और विष्णुको तथा महा-देवको और इन्द्रादिक सबदेवतोंको और जितने कि ऋषि मुनिहैं सबको इसकामदेवने जीतलिया है उसी कामदेवके आधीन होकरमैंनेभी अपना कर्त्तव्य सब खोदिया वैराग्यसे हीन होकरकेही मैं इस दुर्गतिको प्राप्त हुआ हूं अब मैंने वैराग्य को आश्रयण कियाहै इसलिये मैं अब मुक्तिकेलिये यत्नकरूंगा इसप्रकार वैराग्य को प्राप्त होकर फिर भरथरी आत्मा के ध्यान रूपी योग में आरूढ़ होकर परमपद को प्राप्त होते भये उज्जैन नगरी से एक मील के फ़ासिले पर वह गुफा अब भी विद्यमान है जिसमें भरथरीजीने तप किया धन्य है भरथरी जीको जिन्हों ने राजके भो-गों को काकविष्ठा के तुल्य त्यागदिया ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्दस-माख्याधरेणनिरञ्जनस्थानिवासिना भरथरीजीवन चरित्रंभाषायांकृतंसमाप्तिमगात् ६ ॥

## अब हरिश्चन्द्रजीके जीवनचरित्र को लिखते हैं ॥

पूर्वकाल में हरिश्चन्द्र नाम करके बड़ा धर्मात्मा एक अयोध्या नगरी का राजाहुआ है हरिश्चन्द्रजी बड़े सत्यवादी और जितेन्द्रिय तथा धर्म्मात्माथे और अपने नित्य नैमित्तिक कर्मों के करने में भी तत्पर रहते थे राजा के धर्म के प्रताप से तिसकी प्रजा अत्यन्त सुखी और चैन से रहती थी तिसके राज में चोरका और डाकू का नाम भी न था और न कभी दुर्भिक्षही पड़ाथा और न किसीको कभी आधि व्याधि रूपी रोगही हुआथा और न कभी किसी जीवकी अकाल मृत्युही होती थी सर्व प्रकार करके राजाकी प्रजा को आराम था इसीप्रकार राजाको राज करते२ कुछकाल जब कि व्यतीत होगया तब एकदिन राजा हरिश्चन्द्र शिकार को गये थे रास्ता में राजा चले जाते थे कि इतने में कहीं से स्त्रियों के रोने की आवाज़ राजा के कानमें पड़ी तिसको सुनतेही राजा को शिकार करना भूलगया और जिधर से आवाज़

आती थी उसी तरफ़ राजा चलपड़ा और पुकार कर के राजा ने कहा डरोमत मेरेको अपने पास पहुँचा जानो राजा हरिश्चन्द्र खड्गको हाथ में लियेहुये उसी तरफ़ को चलपड़ा जिस तरफ़ से स्त्रियों के रोने की आवाज़ आती थी और राजा यह भी मुखसे कहता जाता है मेरे राज्य में ऐसा कौन दुर्बुद्धि है जो कि दीनों को सताता है मैं अपने बाणों करके तिसके शिरको भेदन करदेऊंगा॥ और इधर वनमें विश्वामित्रजी विद्यों को साधरहेथे परन्तु राजाको ऐसा दिखाई पड़ा कि कोई पुरुष अग्नि को वस्त्र में बांधरहा है जो कि स्त्री के रूप को धारण करके विद्या रुदनकरती थीं वह तो अदृश्य होगईं और विश्वामित्रजी राजा को दिखाई पड़े और राजाको देखतेही क्रोधकरके विश्वामित्रजीके नेत्र लालहोगये विश्वामित्रको क्रोधयुक्त देखकर राजा कांपने लगे और विश्वामित्र जी राजा से कहने लगे हे दुष्ट दुरात्मा! तू क्या कहता था जैसे कि तुमने कहा है अब फिर हमारे सामने भी तुम उसी तरह से कहो इसप्रकार के विश्वामित्र के वाक्य को सुनकर राजा और भी डग और

हाथ जोड़कर विश्वामित्रसे कहने लगा हे भगवन्! हम पर क्षमाकरिये मैं इस वार्त्ता को नहीं जानता था कि आप अपने कार्य्य में लगे हैं राजाओं का यह धर्म है दीनों की रक्षाकरनी मैं रोदन के शब्द को सुनकर इस तरफ़ चलाआया हूं कि किसी दीन स्त्रीको कोई सतारहाहै चलकरके मैं उसकी रक्षाको करूं क्योंकि राजाओं का मुख्य धर्म यही है कि दीनों की रक्षाकरनी और पालना करनी और दुष्टों को दण्डदेना और नीति के अनुसार युद्धकरना मैं तो अपने धर्म की पालना करने के लिये इधर चला आया हूं आप महात्मा हैं आपका धर्म क्षमा करनाही है विश्वामित्र ने कहा भला यह तो बतलाओ किसको दानदेना चाहिये किसकी रक्षा करनी चाहिये किस के साथ युद्ध करना चाहिये राजा ने कहा हे भगवन्! उत्तम ब्राह्मण के प्रति दान देना चाहिये और जो कि दीन है दुःखी है उसके प्रति भी दान देना चाहिये और भयभीत की रक्षा करनी चाहिये अन्यायी के साथ युद्ध करना चाहिये॥ राजा के वचन को सुनकर विश्वामित्र ने कहा यदि आप ऐसेही मानते हैं जैसा

कि आप कहते हैं तब हम उत्तम ब्राह्मण हैं और हमको धनकी आकांक्षा भी है हमारे प्रति आप धनको दान करके देवैं राजा हरिश्चन्द्रके धर्म की परीक्षा करने के लिये विश्वामित्र ने ऐसे कहा तब राजा हरिश्चन्द्र ने प्रसन्न होकर विश्वामित्र से कहा जिस वस्तु की आपको इच्छाहो सो हमसे मांगिये मैं अवश्य उसी वस्तु को आप के प्रति देऊंगा क्योंकि संसार में कोई वस्तु भी मेरेको अदेय नहीं है इसलिये जो आपकी इच्छाहो उसको मेरेसे मांगिये ॥ विश्वामित्र बोले हे राजन्! प्रथम हमको आप राजसूय यज्ञकी दक्षिणा को देवैं राजा ने कहा हम आप को राजसूय यज्ञकी दक्षिणा को तो देवैंहींगे सिवाय इसके और भी जिस वस्तु की आप को ज़रूरतहो सो मेरेसे मांगिये तब विश्वामित्र ने कहा पुत्र और स्त्री के विना जितना कि तुम्हारे पास ऐश्वर्यहै राज पाट सो सब हमको देदीजि-ये राजा ने कहा पुत्र और वधू से विना बाकी का सब ऐश्वर्य्य मैंने आप को दिया फिर विश्वामित्र ने कहा जब कि सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य अपना हमको आपने देदिया है तब फिर अब इस सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य का स्वामी

कौनहै राजा ने कहा सर्व ऐश्वर्य्यके स्वामी अब आप हैं मैं नहीं हूं विश्वामित्र ने कहा जब कि इस सम्पूर्ण ऐश्वर्यके स्वामीहमहैं तब आप अपने पुत्र और अपनी स्त्री को साथ लेकर तुरन्त यहां से चलेजावें क्योंकि अब आपका इस राज्य और ऐश्वर्य्य से कुछभी वास्ता नहीं रहाहै यह सब आपने हमको दानकरके देदियाहै अब देरमत करिये अब तुम्हारा चलाजानाही यहांसे अच्छा है राजा हरिश्चन्द्रभी अपने वचन को पालते हुये बड़ी प्रसन्नता से स्त्री पुत्र को साथ लेकर अयोध्यापुरी से काशी की तरफ़ को चलपड़े अभी राजा अयोध्या से दो चार मीलतक भी दूर नहीं गया था कि इतने में विश्वामित्र ने आकर राजा को घेर लिया और कहा हे राजन्! आपने हमको राजसूययज्ञ की दक्षिणा देने को कहाथा सो विना तिसके दिये हुये आप चलेजाते हैं यह कैसी वार्ताहै प्रथम दक्षिणा को दे लीजिये तब जाइये विना दक्षिणा के लियेहुये मैं आपको नहीं जानेदूंगा विश्वामित्रकी वाणी को सुनकर राजा बड़ी चिन्ता में पड़े पास तो अब राजा के एक कपर्दिका भी नहीं है कुछ देरतक राजा मनमें

चिन्ता करते रहे इस ऋषि से अब कैसे छुटकाराहो फिर राजा ने हाथ बांध करके कहा महाराज एक महीना के पीछे मैं आप को दक्षिणा देऊंगा और आप कृपा करके अब देशान्तर में जाने के लिये मेरे को आज्ञा दीजिये विश्वामित्र ने कहा अच्छा जाने के लिये तो मैं आपको आज्ञा देताहूं परन्तु आप अपने इस करारको मत भूलजाना एक महीना के बीत जानेपर दूसरेही दिन में आपसे अपनी राजसूययज्ञ की दक्षिणा को लेऊंगा जिस कालमें राजा हरिश्चन्द्र स्त्री पुत्र के सहित पांव से नग्न चलनेलगे उस कालमें राजा की प्रजा सब राजा को देखकर रुदन करने लगी और आपस में लोग सब कहनेलगे यह मुनि बड़ा दुष्ट और क्रूर स्वभाववाला है जिसने ऐसे धर्मात्मा राजा को नगर से निकालकर राज्य को लेलिया है॥ फिर नगर के लोग कहते हैं अहो! बड़ाकष्ट है ब्राह्मण बड़े कठोर हृदयवाले और दया से हीन होते हैं इस मुनिको ज़रासी भी दया इस धर्मात्मा राजापर नहीं आती है अब इससे बढ़कर और क्या अधिक कठोरता होगी कि राजा हरिश्चन्द्र कभी दश

कदम भी पैदल नहीं चले थे वह राजा आज इस ऋषि की कुटिलता से नंगे पांव वन में चलरहे हैं जिस राजा की रानी कभी भी रनिवास से बाहर नहीं निकसी थी उस राजाकी रानी आज वन में कंकर और कांटों पर चलरही है और जो कि रोहित नाम करके राजाका बालक कभीभी नौकरों के कन्धे से नीचे नहीं उतराथा वह भी आज माता पिताके साथ नंगेपांव से घोरवनमें चलरहाहै और जो कि राजा रानी अपने मन्दिरों में कोमल फूलों की शय्यों पर नित्य शयन करते थे वह आज वन के पत्थरों और पत्तोंपर श-यन करेंगे अहो! यह ऋषि बड़ा निर्दयी है राजा के कष्ट को देखकर प्रजा भी बड़ी दुःखी हुई और राजा से प्रजा ने कहा हमभी आप के साथ साथही चलेंगे ऐसे कहकर प्रजा भी राजा के साथ साथही चलने लगी राजा हरिश्चन्द्र ने प्रजा को बहुतसा दिलासा दिया और कहा सुख और दुःख दोनों शरीर केही धर्म हैं आत्मा के यह दोनों धर्म नहीं हैं क्योंकि यह दोनों आगमापायी हैं आत्मा नित्य है तब फिर जो वस्तु कि एकरस रहनेवाली नहीं है किन्तु आने जाने

वाली है उस के लिये शोक क्या करना तुम सब अपने अपने घरों को लौटजावो ऐसा न हो कि मुनि तुम्हारे ऊपरभी क्रोध करबैठें मुनिके भय से प्रजा पीछे को अपने अपने घरों को लौटगई अब राजा वहांसे स्त्री पुत्र के सहित धीरे धीरे चलने लगे यद्दिच राजा के मन में और शरीर में उस काल बड़ा कष्ट हुआ तथापि धैर्यता को अवलम्बन करतेहुये रानी और पुत्रको समझाते बुझातेहुये वनकी कठोर और पथरी-ली भूमिपर चलनेलगे राजा हरिश्चन्द्र अपनी शैव्य नामक रानी को और रोहित नामक पुत्रको साथलेकर एक मास के समीप दिनों में काशी में आपहुँचे॥ अयोध्या से काशी छःदिनका रास्ताहै राजाहरिश्चन्द्र को बहुत दिन इसलिये रास्ता में व्यतीतहुये थे एकतो वह कभी पांवसे चले नहीं थे दूसरे उनकी रानी और लड़का अतिसुकुमार थे जोकि कभी भी अपने घरसे बाहर नहीं निकसे थे उन सुकुमारों को ऊंची नीची पथरीली और कांटोंवाली भूमिपर पांवसे नंगा चलना पड़ा वह चलते २ दश २ कदमों पर बैठजाते और रुदन करते थे यह भी एक बड़ाभारी कष्ट था

तीसरे राजा के पास एक कपर्दिका भी नहीं थी भीख मांगकर जहां तहां से खानापड़ता था ऐसे महान्कष्ट को प्राप्त होकरके भी राजा अपने धर्म से चलाय-मान नहीं हुआथा और अपनी धैर्य्यता का भी त्याग राजा ने नहीं किया था जिसदिन राजा काशीमें पहुँचे उसी दिनका विश्वामित्र को राजसूय यज्ञकी दक्षिणा देने का करारथा इसलिये उसी दिन विश्वामित्र भी काशी में जा पहुँचे और जहांपर राजा और रानी बै-ठकर सुस्ताते थे वहांपर जाकर राजा से विश्वामित्र कहने लगे आजही राजसूय यज्ञ के दक्षिणाका करार पूराहुआ है आप हमको राजसूय यज्ञ की दक्षिणा को दीजिये और दिन छिपने से पहले २ मैं आपसे दक्षिणा को लेऊंगा यदि दिन छिपने से पहले २ आप मेरेको दक्षिणा न देवैंगे तब मैं आप को शाप देकर भस्मकर देऊंगा राजा हरिश्चन्द्र को मुनिके दर्शन सेही ऐसा भय उत्पन्नहुआ कि मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा क्योंकि सवेरे से तो भोजन का ठिकानाही कहीं भी नहीं लगाथा अब दक्षिणा मुनिको कहां से दीजाय तब मुनिने थोड़ासा जल राजा के मुख में डालकर राजाको

सचेत किया और कहा थोड़ी देरमें मैं आताहूं आप दक्षिणा का बन्दोबस्त कररखिये ऐसे कहकर मुनि तो चलेगये मुनिकी वार्त्ता को सुनकर राजा चिंतातुर होकर विलाप करने लगे राजाको रुदन करते देख कर रानी भी रुदन करने लगी थोड़ी देर के पीछे रानी ने राजा से कहा महाराज धर्मकी रक्षाकरनी उचित है क्योंकि धर्म के बराबर कोई भी पदार्थ नहीं धर्मही उत्तम लोक की प्राप्ति का साधन है धर्मही सुखका भी कारण है आप अपने धर्मकी रक्षाके लिये मेरेको वेंचकर मुनि के प्रति दक्षिणा को देदीजिये॥ रानी की वार्त्ता को सुनकर राजा और अधिक रुदन करने लगे फिर रानी ने कहा महाराज रुदन करनेसे मुनि नहीं मानैगा अर्थात् वह दक्षिणाके लिये विना कभी भी-आपका पीछा नहीं छोड़ैगा फिर मुनिका स्वभावभी बड़ा क्रूर है ऐसा न हो कि मुनि क्रोधसे शाप कोही देदेवैं इसलिये आप मेरेको वेंचकर मुनि के प्रति दक्षिणा को देदीजिये इसी में आप की भलाई है अब विलम्ब करने का अवसर नहीं है थोड़ी देर में जब कि मुनि आन पहुँचेगा तब फिर क्या किया

जायेगा रानी के समझाने पर राजा ने कहा यह भी तो अयोग्य वार्त्ता है याने आपका बेंचना भी तो धर्मसे विरुद्ध है रानीने कहा हे राजन्! आपत्काल में मेरा बेंचना धर्मसे विरुद्ध नहीं है किन्तु धर्मही है क्योंकि ऐसा लिखा है कि स्त्री पुत्र और धनादिकों करके भी अपने वचन की रक्षा करनी चाहिये क्योंकि मिथ्या भाषणके तुल्य और कोई भी पाप नहीं है रानी के कहने पर राजा भी तिसके बेंचने को तैयार होगये और काशी के बाज़ार के बीच में खड़े होकर बड़े ऊंचे स्वर से पुकार करके राजा ने कहा हे काशीके लोगो! तुम हमारी वार्त्ता को श्रवण करो हमें एक ऋषिका कुछ ऋण देना है उस ऋण के चुकाने के लिये हम अपनी प्यारी स्त्री को बेंचते हैं जिस किसी को इस को ख़रीद करना हो वह हमारे सम्मुख आजावै एक वृद्धब्राह्मण राजा की वार्त्ता को सुनकर वहांपर प्राप्तहोगया और उसने कहा मैंने अभी दूसरा विवाह अपना किया है सो अपनी स्त्री की सेवा के लिये हम इसको ख़रीदकर लेवैंगे आप इसका दाम कहिये राजा ने कहा जो दाम तुम इसका सुना-

सिव समझो सो देदेवो उसने बहुतसा द्रव्य देकर शैव्य नामक राजा की स्त्री का पल्ला पकड़ लिया और तिसको लेचला तब राजाका छोटासा बच्चाभी माई २ कह के माता के पीछे दौड़ा ब्राह्मण ने उस लड़के को माता के पीछे आने से रोंका तब राजा की पत्नी के नेत्रों में जल भरआया और हाथ जोड़कर ब्राह्मण से कहा इसको भी तुम ख़रीद कर लेवो क्योंकि मेरे विना यह कैसे रहेगा ब्राह्मण ने और द्रव्य को देकर तिस लड़के को भी ख़रीद कर लिया और दोनों लेकर अपने घर को चलागया अब राजा इकल्ले रहगये और इतने में फिर विश्वामित्र पहुँचे राजा ने वह सब द्रव्य मुनिके आगे धर कर कहा राजसूययज्ञकी दक्षिणाको लीजिये उस द्रव्य को देखकर मुनि क्रोध से बोले अरे नीच दुष्ट! इतनी थोड़ी सी राजसूययज्ञ की कभी दक्षिणा होती है और द्रव्य को ला वरना भस्म करदेऊंगा मुनि की वार्त्ता को सुनकर राजाहरिश्चन्द्र फिर चिन्ता करके व्याकुल होगये और अपने मन में कहते हैं स्त्री पुत्र को भी हमने वेंचदिया तब भी मुनिकी दक्षिणा पूरी

न हुई अब क्या करैं अबतो केवल मेराही शरीर इसी को बेंचकर मुनिकी दक्षिणा पूरी करदेनी चाहि' नहीं तो मुनि शाप को देकर सब किया कराया मा' में मिला देवेंगे ऐसा विचार करके फिर राजा ने पुकार करके कहा मैं मुनिका ऋणी हूं कोई मेरे क॰ सेवा के लिये ख़रीद करलेवै इतने में एक भय ॰क सूरतिवाला चाण्डाल बोला तुमको हम ख़रीद करैंगे उस चाण्डाल के साथ बहुतसे कुत्ते भी थे और अनेक प्रकार के जीवों के मांस को भी वह कांधे पर लादे हुये था तिसको देखकर हरिश्चन्द्र ने कहा हम चाण्डाल के पास कैसे रहैंगे ऐसा मन में कह रहे थे कि इतने में विश्वामित्र ने राजा को डाटकर कहा जल्दी दक्षिणा को पूराकरो वरना भस्म करेडालता हूं तुम जल्दी अपने को इसी चाण्डाल के हाथ में बेंचो जिसमें दिनके होतेही हमको दक्षिणा मिलजावै राजा ने भी इस वार्त्ता को मान लिया और मुनिसे कहा मेरे को भी जिसके पास आपकी इच्छा हो सो बेंच दीजिये और अपनी दक्षिणा पूरी करलीजिये मुनि ने राजाको तिस चाण्डालके पास बेंचकर अपनी दक्षिणा

को पूराकरके कहा राजन् हम अव जाते हैं हमारी द-क्षिणा अव पूरी होगई है हे राजन्! अवतुम इस चा-ण्डाल के साथजाकर इसकी आज्ञाको पालनकरो ऐसे कहकर विश्वामित्र तो चलेगये अव राजाको वह चा-ण्डाल अपने साथ लेचला राजा अपने मनमें वड़ादुःखी हुआ एकतो स्त्री पुत्रका वियोग दूसरे नीचजातिवाले चाण्डाल के साथ सहवास इससे अधिक और क्या दुःखहोगा ऐसे भारी कष्ट में प्राप्तहोकरके भी राजाने धैर्य्यता का और धर्म्मका त्याग न किया किंतु अपने धर्म्मपर राजा ज्योंका त्योंही आरूढ़रहा राजा अपने मन में कहते हैं जो हुआ सो हुआ परन्तु मुनिके ऋणसे तो अव हम छूटे जव कि राजा चाण्डालके साथ उसके घर में पहुँचा तव चाण्डाल ने राजासे कहा अव आप हमारा यही काम कराकरैं गंगाके किनारे पर जो श्म-शान घाटहै उसीपर आप रहाकरैं और जो कोई वहां पर मुर्दको जलानेके लिये लावै उससे सवा रुपया घाट का कर और कफ़नको प्रथम लेकर पश्चात् उसको वहां पर जलाने दियाकरो और जो कुछ कि वहांपर आम-दनीआवै उसको मेरे घरमें संध्याको देजायाकरो अव

राजा गंगाके किनारे पर श्मशान घाटमें कुटीबनाकर रहनेलगे जहांपर कि चारोंतरफ़ मुर्दों के जलने का धुआँ उठता है और दुर्गन्ध आती है और रात्रि दिन हाहाकार शब्द होता है जो कोई मुर्देको जलाने के लिये लाता है उससे सवा रुपया लेते हैं और मुर्दे के कफ़नकोभी राजा उतारलेते हैं जो कि नहीं देतेहैं उनसे राजाका झगड़ा होताहै और फिर उस श्मशान में गृध्रोंके और स्यारों के झुण्डोंके झुण्ड हरवक्त मुर्दों को खानेकेलिये बैठेही रहते थे और राजाभी दिनभर मुर्दों के कफ़नों के बटोरनेमें रहते थे और किसी किसी समय में राजा अपने मन में विचार करतेथे कि वह जो हमारेको प्राणोंसे भी प्यारी स्त्रीथी वह क्या कहती होगी और वह जो हमारा प्यारा लड़का रोहितहै वह क्या कहता होगा न मालूम वह कैसे कष्टमें प्राप्तहुये होंगे जिस रानीकी सेवाकेलिये सैकड़ों दासियें हाज़िर रहती थीं वह रानी अब एक साधारण स्त्री की दासी बनकर तिसकी सेवाको करती होगी जिस रोहित की सेवामें सैकड़ों नौकर हाज़िर रहतेथे वह रोहित अब दूसरेका दास बनाहोगा फिर वह अपने मनमें कहते

होंगे कि राजा हमको इस आपत्ति से कब छुड़ावैंगे
हम बड़े अभागेहैं हमारे तुल्य दूसरा कोई भी संसार
में अभागा न होगा क्योंकि हमको बड़ीभारी विप-
त्ति पड़ीहै राजा कहते हैं हे विधाता ! तुम्हारी गतिका
कुछभी पता नहीं लगता है यह सबकष्ट हमको अप-
नेही कर्मोंके अनुसार मिला है इसमें तुम्हारा क्या
कसूर है फिर राजा कहते हैं हमारी इस विपत्ति के
दिन कभी पूरेभी होवैंगे या कि हम इसी विपत्ति मेंही
मरेंगे फिर राजा कहते हैं और लोग तो सब मरकरके
दूसरी योनी में जाते हैं परन्तु हमको इसी जन्म में
दूसरी योनी मिलगई है एकदिन राजा अपनी विपत्ति
की चिन्ताको करते करते सोगये तब राजाको एक
भयंकर स्वप्न आया और स्वप्न में राजा बड़े भयको
प्राप्तहुआ इतने में राजाकी नींद खुलगई तब राजा
अतिकष्ट से व्याकुलता को प्राप्तभी हुआथा तबभी
फिर उसी अपने नित्य के कामको करने लगा याने
कफ़नोंको उतारना मुर्दोंवालों से झगड़ा करना ऐसे
घोरकर्म्मको इधर तो राजा कररहा था और उधर रानी
के लड़के को एक साँपने काटखाया और ब्राह्मण ने

रानीसे कहा अब तू जल्दी इस बालक को श्मशान में लेजा रानी पुत्रके मरजाने से अत्यन्त व्याकुल हो कर रुदन करतीहुई श्मशान में पुत्रको लेकर पहुँची अतिकष्टों के सहनकरने से रानीके मुखकी सौंदर्य्यता सब जातीरही और महान् कुरूपवाली बनगई शिरके बाल जिसके खुलेहैं और मलिन और अतिजीर्ण फटे हुये वस्त्रोंको जिसने धारण किया है अत्यन्त विलाप को करती हुई रानी श्मशान में आकरके बैठगई और गोदसे मृत पुत्रको भूमिपर धरकर विलाप को करने लगी और कहने लगी हे नाथ! मुझको अनाथ करके अकेला छोड़कर अब तुम कहांको चलेगये हो हे नाथ! जिस अपने प्यारे पुत्रको तुम लाड़प्यार करते थे और अपने हाथसे खिलाते पिलातेथे और कोमल २ शय्यापर शयन कराते थे वह बालक आज साँपका माराहुआ श्मशान भूमि में पड़ा है इसप्रकार के विलापों को सुनकर राजा क़फ़न की लालच से रानीके समीप गया और रानी के शरीर की अवस्था बुरी होजाने से राजा ने तिसको न पहिचाना और राजा के भी शरीर की अवस्था बुरी होजाने से रानीने राजा

को भी न चीन्हा फिर जब कि राजा ने तिस मरेहुये बालक के मुख की तरफ देखा तब राजा अपने मन में कहते हैं यह तो किसी राजाका बालक है या किसी उच्चकुलका बालक जानपड़ता है क्योंकि इसका मुख चमकता है और बड़ा सुन्दर है इसका चेहरा इसतरह से मालूम होता है जैसे कि मेरे पुत्र रोहित का चेहरा है इधर तो राजा मन में विचार कर रहेहैं और उधर रानीफिरऊंचे स्वरसे विलापकरनेलगी रानी कहती है हे पुत्र! कौनसे महान्घोर कर्म का फल हम भोगरही हैं जिसका अन्त नहीं होता है कैसा हमको कष्ट होरहाहै प्रथम तो राजका नाशहुआ फिर माता पुत्रका विक्रयहुआ पश्चात् परस्पर राजा से और सम्बन्धियों से वियोगहुआ फिर पुत्रको सांपने काटखाया हे विधाता! तुमने राजाहरिश्चन्द्रके साथ कौन २ उपकार किये हैं यह पृथ्वी फट नहीं जाती जो मैं इसमें समाजाऊं जब कि रानी ने ऐसा विलाप किया तब राजा ने रानी और पुत्र को भी चीन्हलिया और व्याकुलहोकर भूमिपर गिरपड़ा और मूर्च्छितहोगया राजाकी दशा को देखकर रानीभी व्याकुल

होकर गिरपड़ी और मूर्च्छितहोगई किञ्चित्काल के पीछे जब कि राजा और रानी की मूर्च्छा खुली तब हा पुत्र ! हा पुत्र ! पुकार करके फिर दोनों रोनेलगे फिर राजा अपने पुत्र को गोद में लेकर कहते हैं हे पुत्र ! जब कि तुम तात २ करके पुकारते थे तब मैं तुमको अपनी गोद में लेकर प्यार करता था और खिलाता था हे पुत्र ! अब तुम क्योंनहीं तात तात करके पुकारतेहो हे पुत्र ! अब तुम क्यों नहीं बोलतेहो अब तुम मीठी मीठी बातों को क्यों नहीं करते हो हे पुत्र ! हमने बड़ाही नीचकर्म किया है जो तुमको और तुम्हारी माता को भी बेचदिया था इस प्रकार विलाप को करते २ फिर राजा मूर्च्छितहोगये राजा की आवाज़ को पहिंचानकर रानी मन में कहती है कि यह मेरेही स्वामी राजाहरिश्चन्द्र जी हैं परंतु यह इस श्मशानभूमि में कैसे आगये हैं ऐसे कह कर दोनों हाथों को राजा के गले में डालकर फिर रानी रुदन करनेलगी फिर राजा से कहती है हे राजन् ! यह स्वप्न है या कि सत्य है, राजा ने रानी से कहा यह स्वप्न नहीं है यह जाग्रत है यह हमारे

कर्म का फल है राजा ने चाण्डाल के पास अपने
बिकने का और श्मशानभूमि में निवास करने का
सबहाल कह सुनाया राजा के हाल को सुनकर फिर
रानी विलाप करने लगी रानी को देखकर राजाभी
विलाप करनेलगे दोनों को विलाप करते २ जब कि
बहुतसा काल बीतगया तब राजाने कहा अब हमारे
दुःख के छूटने का येही उपाय है कि पुत्रके शरीर
के साथ इसी चिता में हम भस्म होजायें रानी ने
कहा येही सलाह ठीक है मैं भी आपके साथ इसी
चितामें भस्म होजाऊंगी क्योंकि आपके बिना मेरा
जीना भी व्यर्थ है और दुःखरूप है ऐसा विचार
करके चिता को बनाकर पुत्र के सहित राजा और
रानी जब चितापर बैठगये और चाहते थे कि आग
को लगा दें इतने में धर्म मूर्त्ति को धारण करके सब
देवतों के सहित वहांपर प्रकट होगये और विश्वा-
मित्रभी आकर हाजिर होगये और राजाहरिश्चन्द्र
से सब देवतों और ऋषियों ने कहा राजन् तुम धन्य
हो क्योंकि तुमने बड़े २ कष्टोंको भी सहन किया तब
भी अपने सत्य को नहीं छोड़ा तुम धन्यहो २ विश्वा-

मित्र ने कहा राजन् हमने तुम्हारी परीक्षा के लिये यह माया फैलाई थी सो तुम धर्मात्माओं में अव्वल निकले विश्वामित्रजीने अपने कमण्डलु से जल को लेराजा के पुत्रपर छिड़का वह तुरंतही जीगया और राजा रानीपर भी जल को छिड़का वह भी पूर्व की तरह सुन्दर रूपवाले बनगये विश्वामित्रने कहा राजन् अब तुम जाकर निर्भय राज को करो विश्वामित्र ने राजा रानी को पुत्र के सहित फिर अपनेराजपर स्थापन करदिया और आप वन को चलेगये ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्दसमाख्याथ रेण पिशावरनगरनिवासिनाराजाहरिश्चन्द्रजीवनच रित्रंमध्यदेशीभाषायांकृतंसमाप्तम् ७ ॥

# अब राजाविक्रमाजीतके जीवनचरित्र को लिखते हैं ॥

राजाचन्द्रगुप्तका हाल पीछे भरथरीके जीवनंचरित्र में लिखचुके हैं कि भरथरीसे छोटे विक्रमाजीतथे जिसकाल में भरथरीको तीव्र वैराग्यहुआ और वह राज्य को त्यागकरके वन में जा बैठे तब मन्त्रियों ने राज्य करने के लिये भरथरीजी से बहुतसी प्रार्थना की परन्तु भरथरी ने फिर राजको स्वीकार न किया क्योंकि जो पक्षी जालकी क़ैद से निकल जाता है वह किसी तरह से भी फिर जालकी क़ैद में नहीं फँसता है इसीप्रकार भरथरी भी संसाररूपी जालकी क़ैदसे निकलचुके थे अब फिर वह कैसे फँसते कदापि नहीं भरथरी ने मन्त्रियों से कहा अब विक्रमाजीत राजगद्दी को चलावैं और हम अब तपकोही करैंगे ॥ और विक्रमाजीत को दो बातका बड़ाशौक था एकतो देशान्तर का सैर करना दूसरा परोपकार करना विक्रमाजीतजी देशाटन करते करते ढाका

बंगाला में चलेगये कुछकाल तक वहांपर रहकर एक विक्रमाजीत नाम करके नगरको इन्होंने बसाया वह नगर अबतक इन्हीं के नामसे प्रसिद्धहै और वहांपर इन्होंने बहुतसा उपकार भी किया इसीवास्ते उसदेशमें विक्रमाजीत का नाम अबतक प्रसिद्ध है फिर विक्रमाजीतजी गुजरातदेश में चले आये और वहां का सैर कुछकाल तक करते रहे जिसकाल में भरथरी जी ने राजका त्याग करदिया था उसकाल में विक्रमाजीतजी गुजरातदेश में थे मन्त्रियों ने इन के बुलाने के लिये आदमियों को भेजा जबकि वह विक्रमाजीत के पास पहुँचे और सबहाल भरथरीजीके त्यागका कहसुनाया तब तिसीकाल में विक्रमाजीत जी उज्जैन की तरफ को चल पड़े और थोड़ेही दिनों में उज्जैन में पहुँच गये मंत्रियों ने और नगर के निवासियों ने मिल करके बड़ी धूमधाम से विक्रमाजीत को राजसिंहासन पर विराजमान करदिया ॥ क्योंकि प्रजा इनके गुणों को पहिले सेही जानतीथी और इनसे जोकि छोटा भाई था वह मंत्री बना राजा विक्रमाजीत में इतने गुण स्वाभाविक थे एक तो परो-

पकार करना परोपकार की तो यह मानो एक मूर्त्ति थे दूसरे अनाथों की और दीन दुःखियों की पालना करनी तीसरे सत्य का प्रचार करना असत्य का दूरीकरण करना और चौथे धर्म की उन्नति करनी पांचवें भागी २ पंडितों को अपने दरबार में रखना और उनकी प्रतिष्ठा करनी इसी वास्ते इनकी सभा में संस्कृतविद्या के जाननेवाले ९ पंडित अजय रहते थे जिनको कोई भी शास्त्रार्थ में जय नहीं कर सक्ताथा॥ उन नव पंडितों के यह नाम थे एकका नाम धन्वन्तरि था १ दूसरे का नाम क्षपणकथा २ तीसरे का नाम अमरसिंह था ३ चौथे का नाम शंख था ४ पांचवें का नाम वेतालभट्ट था ५ छठे का नाम घटकर्पर था ६ सातवें का नाम कालिदास था ७ आठवेंका नाम वराहमिहिर था ८ नवें का नाम वररुचि था ९ इन्हीं नव विद्वानों करके राजा विक्रमाजीतकी सभा बड़ी शोभा को प्राप्त होती थी और इन्हीं नव पंडितों को लोग नवरत्न करके भी कहते हैं जैसे हीरे आदिक रत्नों में प्रकाशकत्व एक स्वाभाविक गुण रहता है तैसेही इन पंडितों में भी एक विलक्षणशक्ति

विद्या के चमत्कार की रहतीथी हीरे आदिक जड़ रत्न हैं यह चेतनरत्न थे और हरएक पंडित में एक २ विद्या विलक्षण थी जो कि उपकार करनेवाली थी विक्रमाजीत में उदारता भी बड़ी अपूर्व थी ॥ जिस वस्तुको बड़े परिश्रम से संपादन करते थे उसको जो कोई मांगता तब बातकी बातमें देदेते थे और उन नवरत्नों मेंसे जो कि वराहमिहिरनाम वाले पंडित थे इन्होंने सूर्य्यसिद्धांतनामक ज्योतिषके गणित का बड़ाभारी ग्रन्थ बनाया था जिसको कि इदानींकाल के सब ज्योतिषी प्रमाणिक मानते हैं और उसीसे ति-थिपत्रों को बनाते हैं और उसी वराहमिहिरका दूसरा नाम भास्कराचार्य्य करके संसारमें प्रसिद्ध है और वे-तालभट्ट पंडित ने विक्रमाजीत के विषय में कहा-नियों की एक पुस्तक बनाई थी जिसका नाम कि वैतालपच्चीसी करके प्रसिद्ध है और वेतालने कवित्तों की बहुतसी कविता भी की थी जो कि आजकल भी तिसी के नाम से प्रसिद्ध हैं और भी पंडितों ने अप-नी २ विद्या के बलसे वैद्यक वगैरह के अनेक ग्रन्थ बनाये थे परंतु सब पंडितों में कालिदासजी काव्य-

रचना में बहुतही प्रसिद्ध हैं क्योंकि कालिदास काव्यरचना में एक अपूर्व पंडित थे रघुवंश आदि काव्य उनके अब भी पाठशालाओंमें पढ़ाये जाते हैं और कालिदासको देवी के वरसे विद्या मिली थी कुछ पुरुषार्थ करके यह नहीं पढ़े थे इनका हाल इस तरह से सुना गया है स्वरोदानंदराजा की कन्या विद्यावती नाम करके बड़ी पंडिता हुई है उसने प्रतिज्ञा करली थी कि जो मेरे को शास्त्रार्थ में जय करैगा उसीको मैं वरूंगी अर्थात् उसीके साथ मैं अपना विवाह करूंगी जो पंडित उसके साथ शास्त्रार्थ करने को आता था वह पराजय होकर चलाजाता है राजा के अगवानी पंडित लोग बड़े तंग पड़े क्योंकि इतने पंडितोंको वह लाये जो अब बाकी पंडितही उनकी निगाह में कोई भी न रहा और राजा स्वरोदानंद भी चाहें कि जल्दी कन्या की शादी होजाये परंतु कैसे शादी हो विद्यावती अपनी प्रतिज्ञाको नहीं छोड़तीथी तब राजसम्बन्धी पंडितोंने आपसमें मिलकर सलाहकी कि इसको कोई महान् मूर्ख पति मिलाना चाहिये ऐसा विचार करके वह खोजने को निकले तब एक ग्रामके बाहर

उन्होंने देखा एक लड़का बैलके ऊपर पूंछकी तरफ मुख करके चढ़ा है और प्याजके गट्ठेसे रोटीको खा रहा है और यज्ञोपवीत को पहरे है और शिरपर तिसके चोटी भी रक्खी है उस लड़के को देखकर पंडितों ने विचार किया कि यहही महान्मूर्ख है और द्विज भी चिह्नों से जान पड़ता है पंडितों ने उससे पूछा तुम विवाह करोगे विवाह का नाम सुनकर वह बड़ा प्रसन्नहुआ और उसने कहा हां यानें करूंगा क्योंकि उस कालमें उसकी आयु भी वीसवरस के समीप थी फिर पंडितोंने उससे कहा हम राजाकी लड़की से तुम्हारी शादी करायेंगे परंतु जैसे हम तुमको सिखावें वैसेही करना होगा उसने इस वार्त्ता को भी मंजूर करलिया॥ उस लड़के को पंडितलोग अपने साथ ले आये और उसको वार इसी एक वार्त्ता को दो चार दिनमें सिखाया क्योंकि वह लड़का महागँवार था उसके मुखसे स्पष्ट अक्षर नहीं निकल सक्ताथा और राजाको जाकर इत्तिलादी कि एक बड़ेभारी पंडित विद्यावतीसे शास्त्रार्थ करने को आये हैं परंतु वह बहुतही कम बोलते हैं और समग्र प्रश्नका उत्तर दोही अक्षरों

में कह देते हैं राजाने सभा कराई विद्यावती आ करके बैठी और इधरसे पंडितलोग भी उस लड़के को स्नान करा सुंदर वस्त्रों को पहराकर सभामें लेगये और विद्यावती के सम्मुख तिसको बिठला दिया॥ प्रथम विद्यावतीने उस लड़केसे प्रश्न किया॥ अजीर्णस्यौषधंकिम्॥ अजीर्णताकी क्या औषध है॥ लड़केने कहा वार॥ क्योंकि वह वार इनहीं दो अक्षरों को सीखाथा झट एक पंडित बोल उठा॥ वमन विरेचन उद्गिरवार॥ वमन करना दस्तलाना गरमपानी का पीना यह सब अजीर्णताकी औषधियां हैं सोई वार शब्दका अर्थ है इसको सुनकर विद्यावती जरा सा विचार करने लगी कि इतने में पंडितोंने ताली पीटदी विद्यावती हारगई २ राजासे कहा अभी विवाह होजाना चाहिये क्योंकि अब जो लग्न उदय हुआ है सो बहुतही उत्तम है पंडितों के मनमें यह था कहीं ऐसा न हो जो हमारा पोल निकलजाये राजाने झटपट सामग्री होसकी मँगाई और पंडितोंने सटपट करके कन्यादान करादिया अब विद्यावती का विवाह होगया रात्रिको वह लड़का विद्यावती के कमरा में

तिसके पास बैठाथा कि इतने में एक ऊंट बोला, तब विद्यावतीने कहा "उष्ट्रोरौति" याने ऊंट शब्द करता है विद्यावती की वार्त्ता को सुनकर लड़का बोला उट २ लड़के के शब्दको सुनकर वह जानगई पंडितोंने हम से दगा किया है महान्मूर्ख के साथ मेरा विवाह क-रादिया है क्रोध में आकर विद्यावतीने एक लात जोर से तिसके मारी वह जीनेसे नीचे गिरा नीचे एक देवी की मूर्त्ति थी उसके आगे श्रीचक्र बनाथा उसका म-स्तक फटा और उसमें से रुधिर निकलकर श्रीचक्र पर और देवीपर गिरा और वह देवीकी मूर्त्ति के आगे जापड़ा देवी ने प्रसन्न होकर पूछा क्या चाहता है उसने व्याकुलतामें कहा विद्या २ याने विद्यावतीने मारा है देवी समझी विद्याको मांगता है देवीने कहा जावो तुमको सब विद्या विनाही पढ़ेसे आजायेगी उसीकाल में उसको संपूर्ण विद्याका स्मरण होआया और साथही तिसकी बुद्धि भी विशाल होगई तुरन्त वह विद्यावती के द्वार के बाहर जाकर खड़ा होगया और काव्य-रचना को करनेलगा विद्यावती किवाड़ बन्द करके बैठीथी उसकी काव्यरचनाको सुनकर जाना कि यह

तो महान्पण्डितहैं यह तो मेरी परीक्षाके लिये प्रथम अशुद्ध बोले थे तुरन्त विद्यावतीने किवाड़ खोलदिया और तिसको भीतर लेजाकर माफी मांगी॥ महाशय इनहींका नाम कालिदासथा येही महान्विद्वान् राजा विक्रमाजीत के नव रत्नों में हुये हैं और जो कि भोज के समय में कालिदास हुये हैं वह दूसरे कालिदास पण्डित हुये हैं राजा विक्रमाजीत आपभी बड़े पण्डित थे इसीवास्ते उनका पण्डितोंसे प्रेम भी अधिक रहता था केवल पण्डितही नहींथे किन्तु शूरवीर भी अव्वल दर्जा के थे हज़रतईसा से एकसौ वर्ष पहिले जब कि यूनानियोंने हिंदपर हमले करने छोड़दिये तब तातार के रहनेवाले हिमालयपर्वत के कंदरोंमें से इस देश में आकर हमले करनेलगे और बसनेलगे चुनाचे उनका दबाव बढ़नेलगा तब उस कालमें राजा विक्रमाजीत ने बड़ी बहादुरी के साथ उन लोगों को इस देश से निकाल बाहर किया उन लोगोंका नाम इस देशवालोंने सथीन रक्खा था वह विक्रमाजीत की बहादुरी और वीरतासेही निकालेगयेथे॥ विक्रमाजीतने उस काल में दुश्मनों के हाथसे अपने देशकी रक्षाकी थी

इसलिये उस समयमें इनका बड़ाभारी नाम हुआथा और एक संन्यासी तिसकाल में जिसकाल में कि वि-क्रमाजीतजी गद्दीपर थे नित्यही इनके पास आकर एक फलको इनकी भेंट कर जाता था विक्रमाजीत तिस फलको लेकर संन्यासीसे एक ताखेपर धरदेतेथे एकदिन राजाके मनमें आया देखें तो इन फलों में क्या रक्खाहै जब कि एक फलको राजा ने तोड़ा तब उसमें दो सच्चे मोती निकले दूसरे दिन जब कि वह संन्यासी फलको लाया तब राजाने उससे पूछा तुम कहांसे ऐसे फलोंको लातेहो उसने कहा एक देवता हमको नित्यही ऐसे फलोंको देते हैं यदि आप अकेले हमारे साथ चलैं तब मैं आपको बतादेऊं राजाने कहा कल फलाने समय तुम आना हम तुम्हारे साथ अकेलेही चलैंगे दूसरे दिन वह उसीनियत समयपर आया राजा तलवार ढाल को बांधकर उसके साथ अकेलेही चलपड़े क्योंकि वीरोंको किसी का भी भय नहीं होता है राजाको वह एक जंगलमें लेगया वहां पर एक देवताका मन्दिर था उस मन्दिर में राजाको लेजाकर उसने राजासे कहा तुम देवताके आगे शीश

को झुकाओ राजाने तिसकी आंखकी तरफ जब कि देखा तब उसकी आंख बदलीहुई राजाको दिखाई पड़ी क्योंकि उस संन्यासीके मनमें यह वार्त्ताथी कि जब राजा शिरको झुकावेंगे तब मैं तुरन्त खड्गसे इनका शीश काटकर देवता को बलिदान करदेऊंगा देवता मुझपर प्रसन्न होकर मेरे वश्यमें होजायेगा राजाने उस संन्यासीसे कहा आप बड़े हैं प्रथम आप शिरको झुकावें आपकोदेखकर फिर हम झुकावेंगे उस संन्यासी ने जब कि प्रथम देवताके आगे शिर झुकाया विक्रमा-जीतने ऐसी एक तलवार जोर से चलाई जो एकही हलामें उसका शिर कटकर धड़से जुदा होगया और तिसका रुधिर जो देवतापर गिरा वह देवता राजा के वश्य में होगया धर्म की जय और पापीकी क्षय वह संन्यासी दुष्ट अधम था अधर्मपर आरूढ़ होकर ध-र्मात्मा राजाको छलसे घात करना चाहताथा सो देवता भी न्यायकारी हैं उसी दुष्टका घात होगया॥ गीतामें भी कहा है "यतोधर्मस्ततोजयः" जिधर धर्म रहता है उधरकोही जय होती है इसलिये संपूर्ण पुरुषोंको धर्म परही आरूढ़ होनाचाहिये॥ वाममार्गी बड़े दुष्ट होते

हैं क्योंकि जितने कि हिंसा आदिक निंदित कर्म हैं सब उनमें बने रहते हैं राजाविक्रमाजीत का राज प्रथम मालवादेश मेंहीथा फिर अपनी वीरतासे और २ गुजरात वगैरह देशोंपर भी राजाने अपना अधिकार जमालियाथा राजाविक्रमाजीत केवल विद्वान्ही नहीं थे किन्तु जनकराजाकी तरह ज्ञानवान् भी थे जैसे जनकराजा राजभी करते थे और अपने आत्मज्ञान में दृढ़ थे अर्थात् आसक्ति से रहित थे तैसेही विक्रमाजीत भी राजभोग करते थे परन्तु अन्तर से उनमें आसक्त नहीं था इसी वास्ते जिस वस्तुको बड़े यत्नसे सम्पादन करतेथे उसको बातकी बातमें देदेते थे यदि आसक्त होते तब ऐसा क्यों करते और राजनीति में भी बड़े निपुण थे क्योंकि तातारवाली सथीयां कौम को एक बुद्धिमता से अपने देश से उन्होंने निकाल बाहर किया जिसहेतु से राजा विक्रमाजीत में अनेक गुण थे इसी हेतुसे इनका संवत् भी चला इन्होंसे पहले किसी राजाका संवत् नहीं मिलता है सन् ई० से सत्तावनवें ५७ वर्ष पहले इनका संवत् चला है जो चैत सुदी पड़वाको प्रारम्भ होताहै इसीके आश्विन

सन् तिथिपत्र बनते हैं राजा विक्रमाजीत का यश पृथिवीमें सदैवकाल चलाजायेगा जबतक इनका संवत् जारी रहेगा तबतक विक्रमाजीत को जीताही समझ-नाचाहिये ॥ एक कालमें विक्रमाजीतजी वनमें शिकार खेलने को गये तब वहांपर एक राक्षसीने आकर इन को घेरलिया और कहा यदि आप विद्वान्हैं तब हमारे प्रश्नों के उत्तर को दीजिये और जबतक आप हमारे प्रश्नोंके उत्तरको नहीं देवैंगे तबतक मैं आपको आगे को जाने नहीं देऊंगी ॥ विक्रमाजीत ने कहा पूछो हम तुम्हारे प्रश्नोंके उत्तरको देवैंगे ॥

राक्षसी ॥ वह कौनसा कर्म है जिसका फल इसी लोक में होताहै १ और वह कौनसा कर्म है जिसका फल परलोक में हो-ताहै २ फिर वह कौनसा कर्म है जि-सका फल इस लोक परलोक दोनों में होता है ३ फिर वह कौनसा कर्म है जिसका फल न इसलोक में है न पर-लोक में है ४ ॥

विक्रमाजीत ॥ जोकि विवाहादिकोंमें अपने नाम के

लिये बिरादरीवालों को खिलाना और देना है तिसका फल इसीलोक में भाइयों की ओरसे बाहेर है परलोक में इसका फल कुछ भी नहीं है १ और जो उपवासादिक व्रतों का या इन्द्रियों के दमनरूपी व्रतका करनाहै इसका फल परलोक मेंही है इसलोक में विना कष्टके कुछ भी फल नहीं है २ और जो द्रव्यकि परोपकारमें लगाना है अर्थात् अनाथों को और दीनोंको देना तथा विद्यालय औषधालय धर्मशाला वगैरहका बनवानाहै उसका फल दोनों लोकों में है इसलोक में यश परलोक में सुख है ३ और जो द्रव्य कि भांड़ और वेश्या वगैरह को देनाहै उसका फल न तो इसलोक में है और न परलोक में ही है ४ ॥

राक्षसी ॥ पृथिवी से गुरुतर क्या है १ आकाश से उच्चपद किसका है २ और तृणसे

भी लघुतर कौनहै ३ और पवनसे भी अतिशय करके वेगवाला कौनहै ४ ॥

विक्रमाजीत ॥ माता पृथिवीसे भी गुरुतर है १ पिता की पदवी आकाशसे भी उच्चतर है २ याचना करनेवाला तृणसे भी हलका है ३ मन पवन से भी वेगवाला अधिक है ४ ॥

राक्षसी ॥ धर्म क्योंकर जन्मता है १ धर्म क्योंकर फैलताहै२धर्म क्योंकर स्थिर होताहै ३ क्योंकर फिर धर्म नाश होता है ४ ॥

विक्रमाजीत ॥ दयासे धर्मकी उत्पत्ति होतीहै १ सत्य भाषण करनेसे धर्म फैलताहै २ क्षमा करनेसे धर्म स्थिर होता है ३ लोभसे धर्म नाशको प्राप्त होता है ४ ॥

राक्षसी ॥ महाराजा कौनहै १ वैतरणी नदी कौन है २ कामधेनु कौन है ३ मनकी तुष्टी कैसे होती है ४ ॥

विक्रमाजीत ॥ जो राजा धर्मपूर्वक प्रजाकी पालना करता है वही महाराजा है १ पदार्थों

की प्राप्ति की जो कि अतिशय करके तृष्णा है वही वैतरणी नदी है २ विद्याही कामधेनु रूप है क्योंकि विद्या सेही सम्पूर्ण कामना पूरी होती हैं ३ यथा लाभसे तुष्ट रहनेका नामही तुष्टी है अर्थात् यथा लाभसेही जोकि संतोष करलेताहै उसीको तुष्टि प्राप्त होतीहै४॥

राक्षसी ॥ स्वर्ग क्या वस्तु है १ कल्पवृक्ष क्या वस्तु है २ सुमेरु क्या वस्तु है ३ पारस क्या वस्तु है ४ ॥

विक्रमाजीत ॥ अत्यन्त सुखकी प्राप्तिका नामही स्वर्ग है १ धर्म का नामही कल्पवृक्ष है २ अपना शरीरही सुमेरुपर्वत है ३ और संत महात्माही पारस हैं जोकि मूर्ख अज्ञानियों को अपने समानही बना-लेते हैं ४ ॥

वह राक्षसी प्रसन्न होकर चलीगई ॥ विक्रमाजीत की कीर्त्ति जगत् में विख्यात है और ३०४४ वर्ष कलि के आनेपर और ५६ वर्ष सन् ईसा से पहले शालिवा-

हन राजा के साथ युद्ध करनेमें उसी युद्धमें राजा बि-
क्रमाजीत का स्वर्गवास हुवाथा परन्तु जिस शालि-
बाहनका शाका लिखा जाताहै यह वह नहीं है जि-
सके साथ युद्ध हुआ था यह दूसरा शालिबाहन है
ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानंद
समाख्याधरेणपिशावरनगरनिवासिनाराजा
विक्रमाजीतजीवनचरित्रंमध्यदेशीय
भाषायांकृतंसमाप्तम् ८॥

## अब भोजराजके जीवनचरित्र को लिखते हैं ॥

राजा विक्रमाजीत के कुलमें विक्रमाजीतसे दोसौ वर्ष पीछे उज्जैननगरीका सिंधुलनाम करके बड़ा बुद्धिमान् एक राजा हुआ है वह बहुत कालतक धर्मपूर्वक प्रजाकी पालनाको करता रहा वृद्धावस्था में तिसके घर में एक बड़ा सुन्दर और भाग्यशाली पुत्र उत्पन्न हुआ राजाने उसका नाम भोज रक्खा जब कि भोजकी उमर पांच वर्षकी हुई तब राजाने अपने अन्तके समय को जान मनमें विचार किया यदि मैं अपने जीतेही राजगद्दी भोजको देदेऊं- तो भोज अभी बालक है एक तो भोजकी उमर अभी पांचवर्ष की है राजका काज इससे चलैगा नहीं दूसरा लोक में मेरा अपवाद भी होगा कि छोटे भाई को राजगद्दी न देकर मोह के वशमें होकर राजाने छोटेसे बच्चेको राजगद्दी का अधिकार देदिया है और जोकि राजभार के उठाने योग्य राजाका छोटा भ्राता मुंज था उसको

न दिया यह राजा की मूर्खता है इस प्रकार लोक निंदाको करेंगे तीसरा राजका लोभ बड़ाभारी होताहै राजके लोभसेही पुत्र पिताका बध करदेता है भ्राता भ्राताका पिता पुत्रका और सम्बन्धियों का भी बध करदेता है देखो दुर्योधनने राजके लोभसे पांडवों के साथ अनेकप्रकार के छल किये अन्त में अपने कुल का नाशभी तिसने करदिया और राजके लोभ सेही अर्जुन ने द्रोणाचार्य्यादिक जोकि गुरु थे उनका भी वध करदिया और राजके लोभसेही कैकेयीने रामजी को चौदह वर्षका वनवास दिलवादिया बालिने राजके लोभसेही सुग्रीवको निकालदिया और फिर सुग्रीव ने बालिका बध रामजीसे कराया कंस ने राजके लोभसे देवकी के पुत्रों का वधकिया राज के लोभसे औरभी बहुतसे राजोंने बड़े २ अधर्मोंको कियाहै सो लोभही पापका बीज है ॥

लोभःप्रतिष्ठापापस्य प्रसूतिर्लोभएवच ॥
द्वेषक्रोधादिजनकोलोभःपापस्यकारणम् ॥१॥

लोभही पापकी प्रतिष्ठाहै और पापकी उत्पत्ति का स्थान भी लोभही है और द्वेष तथा क्रोधादिकों का

जनकभीलोभही है इसलिये लोभहीपापका कारणहै १॥

लोभात्क्रोधःप्रभवति क्रोधाद्द्रोहःप्रवर्त्तते ॥
द्रोहेणनरकंयाति शास्त्रज्ञोपिविचक्षणः ॥ २ ॥

लोभसे क्रोध उत्पन्न होता है और क्रोधसे द्रोह उत्पन्न होता है द्रोह करके पुरुष नरकको प्राप्त होता है चाहे वह कितनाही शास्त्रज्ञ और बुद्धिमान् भी हो २॥

मातरं पितरं पुत्रं भ्रातरं वा सुहृत्तमम् ॥
लोभाविष्टोनरोहन्तिस्वामिनंवासहोदरम् ॥ ३ ॥

माता पिता पुत्र और भ्राता तथा सुहृद्को भी लोभ करके युक्त पुरुष मारदेता है स्वामि और सहोदरभाई को भी लोभी पुरुष मारदेता है ३ इस प्रकार लोभको ही अनेक अनर्थों का कारण जानकर फिर राजा ने अपने मनमें विचार किया यदि मैं अपने छोटे भ्राता मुंजको राजसिंहासन को देकर भोजको उसकी गोद में बिठला देऊं तब तो बहुतही अच्छा होगा क्योंकि एक तो लोक मेरी निन्दा को नहीं करेंगे दूसराभोज के प्राण भी बचरहेंगे तीसरा क्या जाने मुंजभी अन्तसमय में भोजकोही योग्यजान राज-

सिंहासन पर विठला दे इसतरह का विचार कर के राजा ने अपने मन्त्री बुद्धिसागर को बुलाकर और पण्डित लोगोंको भी बुलाकर उनके सम्मुख राजसिं-हासन पर अपने छोटे भाई मुंज को बिठलाकर तिसकी गोद में भोज को विठला दिया राजा के इस प्रकारके व्योहारको देखकर सब अमात्य और नगर-निवासी साधु २ शब्द करने लगे कुछकाल के पीछे राजाका स्वर्गवास होगया राजा की मृतक क्रियाको करके मुंज जो हैं सो स्वतन्त्र होकर राजकाजको कर-ने लगे कुछकाल के वीतजाने पर मुंज ने बुद्धिसागर अमात्य को अपने पद से हटाकर उसके स्थान में वंगदेशी वत्सराजको करदिया एक दिन राजा की सभा में कोई विदेशी ज्योतिषी आकर के प्राप्तहुआ और राजा को स्वस्ति शब्द कहकर बैठगया और राजा से कहा राजन्! मेरेको लोक सर्वज्ञ याने ज्यो-तिष् शास्त्र का ज्ञाता कहते हैं सो आप मेरे से कुछ पूछिये तिसकी वार्त्ता को सुनकर राजा ने कहा यदि आप ज्योतिष् शास्त्र को जानतेहैं तब जन्मसे लेकर आजतक जो २ व्यवहार कि मैंने किया है सो सब हम

को बताइये ज्योतिषीने पत्रा निकालकर और लग्नको शोधकर के राजा को सम्पूर्ण पिछला बीताहुआ हाल बतादिया और गुप्त प्रश्नोंके उत्तर को भी ठीक २ कह दिया राजा तिसकी वार्त्ता को सुनकर बड़ा प्रसन्नहुआ और तिसकी विद्या के चमत्कार को देखकर राजा ने तिसको बहुतसा द्रव्य भी दिया जब कि ज्योतिषी राजा से विदा होकर चला तब तिसकाल में बुद्धिसागर ने राजा से कहा राजन्! भोज की जन्मपत्रिका को मँगाकरके इस ज्योतिषी को दिखलाकर भोजके भाग्यका वृत्तान्तइससे पूंछो राजा ने भोजकी जन्मपत्रिका को मँगाकर ज्योतिषीको देकर के कहा कि भोज के भाग्य को देखो ज्योतिषी ने राजा से कहा उस बालक को मेरे सम्मुख बुलाइये जिसकी कि यह पत्रिका है मैं भी उसका दर्शन कर लेऊं राजा ने उसी काल में भोजको पाठशाला से बुलवा भेजा राजा की आज्ञा को पाकर भोज तुरन्त ही वहांपर पहुँचा और आतेही मुंजको बड़ी नम्रता से भोज ने प्रणाम किया और हाथ जोड़कर कहने लगा कि पिता क्या आज्ञाहै मुंजने कहा पुत्र यह ज्यो-

तिषी आये हैं इनको आपकी जन्मपत्रिका हमनेदि-
खलाई है इन्हों ने कहा इस पत्रिकावालेका हम जन्म-
दर्श करना चाहते हैं इसलिये आप को बुलाया है
सो आप इस ज्योतिषी के सम्मुख होजाइये जो यह
आपको अच्छीतरह से देखलेवै भोज मुंज की आज्ञा
को पाकर ज्योतिषी के सम्मुख खड़ा होगया ज्योतिषी
भोज के चेहरे को देखकर मोहित होगया भोजका
चेहरा सूर्य्य की तरह चमकता था और नेत्र ना-
सिका आदिक अंग सब अतिही सुन्दर थे मस्तकखु-
लाहुआ था मानो साक्षात् विष्णुकीही मूर्त्ति प्रतीत
होते थे जो भोज की तरफ देखताथा उसका मन
देखने से तृप्तनहीं होताथा वह यहही चाहता था कि
इसी को देखता रहूं भोजकी मूर्त्ति ध्यान लगाने के
योग्य थी जब कि ज्योतिषी ने भोज के चिह्नोंको अ-
पने मन में बिठला लिया तब राजासे कहा भोजको
पाठशाला में भेजदीजिये राजाकी आज्ञा को पाकर
भोज पाठशाला में चलागया ज्योतिषी ने भोज की
पत्रिका की लग्नका विचार करके और उच्चग्रहोंको
देखकर राजा से कहा राजन्! भोजके भाग्यको ब्रह्मा

भी पूर्णरीति से नहीं कहसक्ता है ऐसे उत्तम ग्रह पड़े हैं तब हम उदरभरी कैसे कहसक्के हैं तथापि अपनी बुद्धिके अनुसार मैं भी कुछ थोड़ासा भोज के भाग्यका फल कहूंगा सो कहते हैं ॥

पञ्चाशत्पञ्चवर्षाणि सप्तमासदिनत्रयम् ॥
भोजराजेनभोक्तव्यः सगौडोदक्षिणापथः १

पचास और पांच याने पचपन वर्ष और सात दिनों तक भोजराज सहित गौड के दक्षिण देशके राजका भोग करैंगे ॥ १ ॥ फिर राजा ने ज्योतिषी से पूछा भोजको राजगद्दी कबहोगी ज्योतिषी ने उँग- लियों पर लग्न को गिन करके कहा कल सवेरे भोजको राजतिलक होजायेगा ज्योतिषी की वार्ता को सुनकर मनमें तो राजा दुःखीहुआ परन्तु ऊपर से हँसकर के ज्योतिषी को और द्रव्य को देकर विदाकरदिया और राजा सभा से उठकर राजभवन में चलागया और एकान्तस्थान में बैठकर अपनेमन में विचार करने लगा मेरे जीते भोजको कैसे राज- गद्दी मिलजायेगी क्योंकि मेरामन तो अभी भोगों से तृप्तहुआ नहीं विनामेरे मरनेके कैसे भोजको राज-

गद्दी होसकैगी दैवयोग से यदि कोई राजधानी से मेरे विरुद्ध खड़ाहोजाये और मेरेको क़ैद करके भोज को राजगद्दी पर विठला दे तब तो जीतेही मेरा मरण होजायेगा या कोई मेरे को मारकर भोज को राज-गद्दीपर विठलादे तब मैं क्या करूंगा और सि-वाय इस के और तो भोज को गद्दी होने का कोई रास्ता मैं नहीं देखताहूं और मेरे को यह भी नहीं जानपड़ता है जो कि मेरा मरण किसके हाथ होगा और विना मेरे मरने के भोजको गद्दीहोनीक-ठिन है जिसहेतुसे भोजकी राजगद्दीही मेरे मरने का हेतु है इसीहेतुसे भोजका वधकरवादेनाही हमकोउ-चित है जब कि भोजही को मरवादेऊंगा तब न ति-सको गद्दी होगी और न मैं मरूंगा ऐसा विचारकरके राजा ने बंगदेश के वत्सराज को बुलाया जो बुद्धि-सागरकी जगहपर नियुक्तहुआथा राजा की आज्ञाको पाकर वह नयामन्त्री तुरन्त राजा के पास पहुँचगया राजा ने तिसको एकान्तमें अपने समीप बुला करके कहा तुमको एक काम करनाहोगा वह काम यहहै नगर से कुछदूर जंगल में एक देवी का मन्दिर है

तुमभोज को पाठशाला से बुलाकर रथपर अपने साथ बिठलाकर उस जंगल में देवी के मन्दिर में लेजाकर उसका शिर काटकर रात्रीको मेरे पास लाओ परन्तु इस बार्त्ताका भेद तुम किसी को भी न देना राजा की वार्त्ताको सुनकर वत्सराजने कहा मैं कुछ प्रार्थना को करना चाहताहूं राजाने कहा अच्छा पूंछो जो तुम्हें पूंछना है परन्तु इसकाम को अवश्यही तुमको करना होगा॥ वत्सराज ने कहा राजन्! भोजका कसूर क्या है सो मेरे प्रति कहिये राजा ने कहा ज्योतिषी से जो २ वृत्तान्त मैंने पूछा था सो २ ठीकही निकला फिर भोजके भाग्य के विषय में जो मैंने पूछा तब उसने कहा भोजको कल राज-गद्दीहोजायेगी सो विनामेरे मरनेकेतो राजगद्दी भोज को हो नहीं सक्ती है इसलिये मेरी मृत्यु का कारण भोजही है सो मैंने विचार करलिया है भोजका वध कराने से मेराजीवन होसक्ता है नहीं तो मेराजीवन नहीं होगा इस लिये भोज का मरवा देनाहीमैंने अच्छा समझा है सो इसी काम के लिये तुम को बुलाया है तुम जल्दी से जाकर इस कामको करके रात्री को मेरे

पास आना बस अब देर मत करो भोजका शिरकाटकर किसी रूमाल में लपेट कर मेरे पास लाना जो कोई दूसरा उसको देखने न पावे ॥ वत्सराज ने कहा राजन्! भोज के पास न तो सेना है और न द्रव्य है आप करके ही उसकी पालना होती है फिर वह निर्बल बालक है उसको आप क्यों मरवातेहैं और ज्योतिषका कथन ठीक भी नहीं होता है ॥

त्रैलोक्यनाथोरामोऽस्तिवसिष्ठोब्रह्मपुत्रकः
तेनराज्याभिषेकेतुमुहूर्तःकथितोऽभवत् ।
तन्मुहूर्तेनरामोऽपिवनंनीतोऽवनींविना
सीताऽपहारोऽप्यभवद्वैरिञ्चिवचनंवृथा ॥१॥

त्रैलोकी के नाथ तो राम जी थे और ब्रह्मा जी के पुत्र वसिष्ठ उनके गुरु थे उस वसिष्ठ जीने राम जीके राजतिलक का मुहूर्त्त कथन किया था जिस मुहूर्त्त में वसिष्ठ जीने राम जीको राजतिलक होना कहा था उस मुहूर्त्त में राम जीको वनवास होगया वन में सीता का अपहरण भी हुआ ब्रह्मा का वचन भी जब कि मिथ्या होगया १ तब अल्पबुद्धिवाले

ज्योतिषी की बात का कौन विश्वास है इस प्रकार वत्सराज मंत्री नें जब कि राजा को बहुत सा समझाया और राजा न समझा तब तिसने कहा यदि आप भोज को मरवा देवेंगे तब भोज के जोकि इतर सम्बन्धी हैं वह सब तुम को राजगद्दी से प्रच्युत करदेवेंगे तब इसका परिणाम बहुतही बुरा होगा इस लिये आप इस बुरे संकल्प को दूर करें तभी आप के लिये अच्छा होगा वरना पछतावोगे फिर हाथ जोड़कर मंत्री ने राजा से कहा देवपुत्र का वध करना बड़ा भारी अधर्म है फिर भोज ऐसा पुत्र न भूतो न भविष्यतो न हुआ है न होगा सम्पूर्ण गुणों करके संयुक्त मानो गुणों की खान है फिर भोज निरपराधमी है फिर बड़े भ्राता ने तिस को आप के प्रति अपनी अमानत करके सौंपा है और अति रूपवान् भी है जिस स्थान पर भोज बैठ जाये वह स्थान भी सुशोभित होजाये ऐसे पुत्र का वध करना बड़ाभारी अधर्म है वत्सराज का एक भी उपदेश राजा के मन में न लगा किंतु राजा क्रोध से वत्सराज के प्रति बोला जो भृत्य कि स्वामीकी आज्ञा का पालन

नहीं करताहै उसका जीवन वृथाहै और वह दण्ड देने के योग्य है राजा के क्रोध को देखकर वत्सराज अपने मन में कहने लगा जब कि पुरुष के नाश के दिन आते हैं तब बुद्धि भी विपर्यय होजाती है उपदेश को नहीं सुनता है थोड़े कालतक मंत्री तूष्णीं होकर खड़ा रहा पश्चात् मंत्रीने कहा हे देव! मैंने तो आप की भलाई के लिये कहा था यदि आप की ऐसी ही मरज़ी है तब जैसी आप की आज्ञा होती है वैसीही मैं करूंगा ऐसे कहकर मंत्री रथ में आरूढ़ होकर पाठशाला की तरफ़ चला और वहां पर पहुँच कर पाठशाला से बाहर रथ को खड़ा करके भोज को पुकारा पंडित ने भोज से कहा भोज वत्सराज मंत्री बाहर रथ पर आरूढ़ खड़े होकर तुम को पुकारते हैं भोज चकित होकर शीघ्रही पाठशाला से बाहर आकर मंत्री के सम्मुख खड़ा होगया वत्सराज ने भोज को प्रणाम करके कहा हे भोज! तुम हमारे साथ रथ पर आरूढ़ होजावो तुम्हारे पिता की ऐसीही आज्ञा हम को हुई है कि भोज को पाठशाला से बुलालाओ ऐसे कह कर वत्सराज ने भोज को

हाथ थाम कर भोज को रथपर अपने पास बिठला लिया और रथ को वन की तरफ़ हांक दिया लोगों ने जब कि भोज को वन की तरफ़ लेजाते देखा तब परस्पर कानों में कहने लगे आज मंत्री भोज को वन की तरफ़ क्यों लिये जाते हैं पापकर्म किसी प्रकार से भी छिप नहीं सक्ता है बस भोज को वन की तरफ़ जाते देख कर सब के मन में भोज के वध का संशय उत्पन्न होगया और आपस में कहने लगे आज कुछ भोज के लिये बुरा मालूम होता है जान पड़ता है कि राजा ने भोजके मारने का हुक्म दियाहै क्योंकि राजसिंहासन तो भोज का है राजा चाहता होगा ऐसा न हो कि भोज बड़ा होकर मेरे से छीन लेवै इसलिये अभी से तिसको ख़तम करदें लोग परस्पर इस तरह की बातों को करते थे और भृत्यलोग भी इसी तरह का विचार करके सब रुदन करने लगे भोज की माता का नाम सावित्री था जिस काल में उसने इस वार्ता को अपनी दासी से सुना वह तो उसी काल में बेहोश होकर भूमिपर गिरपड़ी कुछ देर के पीछे जब कि वह होश में आई तब रुदन करने लगी

और नगर के लोग आपस में कहने लगे यदि भोज मारा जायेगा तब हम भी प्राणों का त्यागही कर देवेंगे अब भोज के हाल को सुनिये जिस काल में वत्सराज ने वन की तरफ़ रथ को हांका उसी काल में भोज ने क्रोध करके उससे कहा तुम वन की तरफ़ रथ को क्यों लिये जाते हो वत्सराज ने कहा तुम्हारे पिता की ऐसीही आज्ञा है भोज का मन भी कुछ २ वृत्तान्तको जान गया और क्रोध से भोजके नेत्र लाल होगये और भोज ने कहा हा तात! राजभवन से मेरे को वन में भेजवाने में तुम्हारा क्या तात्पर्य है ऐसे कहकर भोज ने अपने दहिने पांव की खड़ाऊं को उतार कर वत्सराज के शिर पर मारा तब वत्सराज ने कहा मैं तो राजा का भृत्य हूं जैसी मेरे को आज्ञा हुई है मैं वैसेही करताहूं इससे मेरा क्या दोष है बातों को करते २ ही देवीके मंदिर के समीप रथ पहुँचगया वहांपर रथसे वत्सराज उतर पड़ा और भोजको भी उतारकर दोनों हरे घास पर बैठे वत्सराजने भोजसे कहा जैसी तुम्हारे पिता की आज्ञाहुई है सो मैं आपको अब सुना देताहूं॥ राजाने हमसे कहा है

भोजको पाठशालासे बुलाकर रथमें आरूढ़ करके वनमें महामाया भुवनेश्वरी के मंदिर में लेजाकर तिसका शिरकाटकर मेरे पास लावो सो इसका कारण यह है ज्योतिषी को राजाने आपकी जन्मपत्रिका दिखलाकर पूंछाथा भोजको राज्य कबमिलेगा ज्योतिषीने कहा कल भोजको राजगद्दी होजायेगी इसवार्त्ताको सुनकर राजाके मनमें अपने मरनेका शकपैदा होगया कि मेरे मरे विना तिसको गद्दी कैसे होगी मेरे मरनेका निमित्तही भोज है इसलिये भोजको मारडाल मैंने राजा को अनेक युक्तियों से समझाया है परन्तु उस दुष्ट ने नहीं माना है अब बतावो इस में मेरा क्या कसूर है जैसी उसकी आज्ञा है सो मैंने आपसे कहदी है अब आप अपनी राय को मेरेसे कहिये ॥ वत्सराजकी वार्त्ताको सुनकर भोजने श्लोकको पढ़ा ॥

रामेप्रव्रजनं बलेर्नियमनंपाण्डोःसुतानांवनं
लक्ष्मीनांनिधनंनलस्यनृपतेराज्यात्परिभ्रंशनम् ॥
कारागारनिषेवणं च मरणं संचिन्त्य लङ्केश्वरं
सर्वःकालवशेननश्यति नरःकोवापरित्रायते १ ॥

भोजजी कहते हैं इसकाल भगवान् ने प्रथम रावण को वाली की क़ैदमें डाल दिया पश्चात् राम जी के हाथ से तिसका मरण करादिया और राम जी को वनवास करादिया पाण्डवोंको भी चौदहवरस काल ने वन में भेज दिया यादवों के कुलका भी इस काल ने नाश करदिया और नल राजा को अपने राज्य से च्युत करदिया सम्पूर्ण मनुष्य काल के वशमें होकर के नाशको प्राप्त होजातेहैं कालसे इस जीवकी कौन रक्षा करसक्ताहै किन्तु कोई भी रक्षा नहीं कर सक्ता है १ फिर भोज ने वत्सराज से कहा मृत्यु तो सब जीवोंके लिये आवश्यक है परन्तु मेरे मरने के पीछे राजा को पश्चात्ताप बहुत होगा और ऐसा न हो कि उसी पश्चात्ताप में फिर राजा तुम से कुछ बुराई करै एक तो तुम इस बातका अपने मन में विचार ठीक २ करलेवो क्योंकि मराहुआ आदमी फिर किसी तरह सेभी मिल नहीं सक्ता है दूसरे जिसकाल में तुम मेरा शिरलेकर राजाके पासजावोगे उस कालमें यदि राजा तुमसे पूछै कि भोज मरण काल में क्या कहताथा तब तुम हमारे लिखे हुये

श्लोकों को राजा के प्रति देदेना ऐसा वत्सराज से कहकर भोज ने एक पत्तों का दोना बनाया और अपने जंघाको छेदन करके उसमें से रुधिर तिस दोने में डालकर उस रुधिर से भोजपत्तोंपर आगेवाले श्लोकों को लिखते हैं॥

मांधाताचमहीपतिः कृतयुगेऽलंकारभूतोगतः
सेतुर्येनमहोदधौविरचितःक्वासौदशास्यान्तकः ॥
अन्येचापियुधिष्ठिरप्रभृतयोयातादिवंभूपते
नैकेनापिसमंगतावसुमती मुञ्जत्वयायास्यति १ ॥

सत्ययुग में मांधाता राजापृथिवी का एक अलंकार रूप करके होगया है और समुद्रमें जिस रामचन्द्रजी ने पुलको बांधाथा और जो कि महान् बली रावणथा वह भी कहां को चलेगये और जो कि युधिष्ठरादिक राजाहुये हैं वह भी सब स्वर्ग को चले गये परन्तु इस पृथिवीको अपने साथ कोई भी नहीं लेगया हैं परन्तु मैं जानता हूं हे मुञ्ज! तू इसको अपने साथ लेजायेगा॥ १ ॥

एकएवसुहृद्धर्मोनिधनेऽप्यनुयातियः ॥
शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धिगच्छति २ ॥

संसार में एक धर्मही पुरुषों का सुहृद्है जो कि मरणोत्तर भी पुरुष के साथही जाता है और सर्व पदार्थ शरीर के नाशकाल मेंही नाश को प्राप्त हो जाते हैं ॥ २ ॥

ननरोहिसहायार्थे मातामार्याचतिष्ठति ॥
न पुत्रमित्रे न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ३ ॥

परलोक में सहायता के लिये माता और भार्या और पुत्र तथा मित्र और ज्ञाति जितने हैं इनमें से कोई भी खड़ा नहीं होता है केवल धर्मही स्थित होता है ॥ ३ ॥

बलवानप्यशक्तोऽसौधनवानपिनिर्धनः ॥
श्रुतवानपिमूर्खश्च यो धर्मविमुखोजनः ४ ॥
इहैवाधर्मरूपाधेश्च चिकित्सांनकरोतियः ॥
गत्वानिरौषधस्थानं सरोगीकिंकरिष्यति ५ ॥

बलवान् हो अथवा दुर्बल हो धनीहो या निर्धन

हो पण्डितहो अथवा मूर्खहो इनमें से जो पुरुष धर्म से विमुख होकर इसी जन्ममें अधर्मरूपी व्याधिकी औषधको जो कि नहीं करेगा मरकरके वह रोगी औषधसे रहित स्थानमें जाकर फिर क्या करैगा॥४।५॥

जरांमृत्युंभयंव्याधिं योजानातिसपण्डितः ॥
स्वस्थस्तिष्ठेन्निषीदेद्वा स्वपेद्वाकेनाचिद्धसंत् ६ ॥

जरा और मृत्यु को और भय को तथा व्याधि को जो पुरुष जानता है वह पुरुष स्वस्थ होकर बैठ जाये वा लेट जाये वा सोजाये कहीं निवासकरै वह सुखी होता है ॥ ६ ॥

तुल्यजातिवयोरूपान्हृतान्पश्यातिमृत्युना ॥
नहि तत्रास्तिते त्रासो वज्रवद्धृदयंतव ७ ॥

तुल्यजाति और आयु तथा रूपोंवालों को मृत्यु करके हरयों को देख करके भी तुम्हारे को मृत्युका भय नहीं होता है इसी से जानपड़ता है कि तुम्हारा हृदय वज्रकी तरह कठिन है ॥ ७ ॥

भोज कर के लिखेहुये श्लोकों को देखकर वत्स-राज के मन में बड़ी दया उत्पन्न हुई और वैराग्य

करके तिसके नेत्रों में जलभर आया फिर तिस ने अपने चित्त को स्थिर करके अपने मन में विचार किया कि भोज को अपने घर में लेजाकर छिपाकर एक कृत्तिम शिर बनवाकर राजा को दूर से दिखा दियाजायेगा ऐसा विचार करके वत्सराज ने हाथोंको जोड़कर भोज से कहा हमारे पर आप क्षमा कीजिये भोज को रथपर लिटाकर कपड़े से छिपाकर अँधेरी रात्रिमें रथको अपने घरमें लेगया और अपने मकान के अन्दर सरदखानमें भोजको बिठलाकर एक कारीगर को बुलवाया और भोज की सूरतका एक कृत्तिम शिर उसी कालमें उससे तैयार कराकर उस मुसव्वर को भी उसी जगह में बिठला दिया और नौकर को भोज की सेवामें वहांपर रखकर बाहरसे ताला लगा कर वहांपर पहरा खड़ा करदिया और तिस कृत्तिम शिरको रूमालमें लपेटकर आधीरात्रिके समय मुञ्ज के पास पहुँचा और दूरही खड़ा होकर उस रूमाल को खोलकर भोजके शिरको दिखलाकर कहनेलगा महाराज आपकी आज्ञाको मैं पालन कर आया हूं मुञ्जने वत्सराजसे पूछा भोज मरतेसमय कुछ कहता

था वत्सराज ने कहा भोजने मरतेसमय यह श्लोक लिखकर दिये हैं कि राजाको देदेना ऐसे कहकर वत्सराजने उन श्लोकों को मुञ्जके आगे धरदिया॥ रानी दियाको उठालाई राजा बांचनेलगे॥ मुञ्जने जब कि उन श्लोकों को पढ़ा और उनके अर्थका विचार किया तब राजाके चित्तमें भी बड़ा वैराग्य उत्पन्नहुआ और हा पुत्र! हा पुत्र! करके राजा रोनेलगे और एकबारगी भूमिपर गिरपड़े रानी राजाको जब कि उठानेलगी तब मुञ्जने कहा रानी हमको स्पर्श मत कर हम पुत्र हत्यारे हैं ऐसे कहकर फिर राजा बड़े ऊंचे स्वर से भोज २ करके रुदन करनेलगे और अपने सब वस्त्रों को राजाने फाड़कर फेंकदिया और विलापको करनेलगे और विलाप करते २ राजा मूर्च्छा को प्राप्त होगये कुछ देर के पीछे राजाकी जब कि मूर्च्छा खुली तब फिर विलापको करनेलगे और राजा ने अपने भृत्योंसे कहा तुम शीघ्रही पंडितोंको बुला- लावो इधर तो भृत्यलोग पंडितों को बुलानेगये और उधर राजाके विलाप को सुनकर भीतर मंदिर के भी सब रानियां विलाप करनेलगीं और भोज के वधको

सुनकर भोजकी माता को मूर्च्छा आगई और नगरके लोग भी राजद्वार पर इकट्ठे होगये और बुद्धिसागर भी पहुँचगये जब कि पंडितलोग सब इकट्ठे होकर राजाके सम्मुख हाज़िर हुये तब राजाने उनसे कहा मैंने पुत्रका वध किया है मैं पुत्रघाती हूं मेरेको उस पापकी निवृत्ति का उपाय बताइये पंडितों ने कहा राजन् शीघ्रही अग्निमें दाह होजानाही इसका प्राय-श्चित्त है पंडितलोगोंको विदा करके राजाने जब कि चिताकी तैयारीकी तब बुद्धिसागर ने राजासे कहा जैसे तुम अधमहो वैसाही तुम्हारा मंत्री वत्सराज भी अधमहै क्योंकि बड़े भाईने तुमको राजगद्दी दी और अपने लड़के को तुम्हारी गोद में बिठलाया याने तुम्हारा पुत्र बनाया और तुम्हारे भाई ने ऐसा विचार किया था कि मुञ्जके संतति अभी नहीं हुईहै मुञ्ज भोजको अपना पुत्र जानेगा प्रथम राजका भोग मुञ्ज करैगा पश्चात् भोज करैगा वंश और राजगद्दी दोनों बने रहेंगे सो तुमने दोनोंका नाशकिया तब फिर तु म्हारे से बढ़कर और अधम पापी कौन होगा धिक्कार है तुम्हारी बुद्धिको और तुम्हारे कर्म को जिसने कि

ऐसा नीचकर्म किया है इधर तो बुद्धिसागर राज्यको धिक्कार देरहे थे और उधर राजभवन के बाहर सब नगरनिवासी जमा होकर कानों में राजाको धिक्कार देरहेथे और कोलाहल मचा रहेथे बुद्धिसागरने राज-द्वारपर पहरा बिठलादिया कि कोई भीतर आने न पावे इतने में वत्सराज मंत्रीने बुद्धिसागर के कान में कहा भगवन् भोज जीता है मैंने उसको छिपा करके रक्खा हुआ है बुद्धिसागर ने उसको एक वार्त्ता को सिखाकर राजभवनके वाहर निकालदिया और इधर राजा ने चिता बनानेका हुक्म दिया और जलकर मरनेकी तैयारी करी थोड़ीसी देर के पीछे एक जटा-धारी तपस्वी नग्न मूर्त्ति केवल कौपीन को लगाये हुये और जटाको बढ़ायेहुये भस्मको धारण कियेहुये चन्द्रमाकी तरह विशाल मूर्त्ति रक्त नेत्रवाला मृग-छाला और दण्डको लियेहुये द्वारके रास्ता से भीतर मन्दिर को प्राप्तहुआ तिस योगीन्द्रको देखकर बुद्धि-सागर ने कहा आप कहांते आते हैं और आपका निवास कहांपर है और आपके पास कोई सिद्धियां उत्तम औषध विशेष भी हैं योगीन्द्र ने कहा ॥

देशेदेशेचभवनं भवनेभवनेतथैवभिक्षान्नम् ॥
सरसिचनद्यांसलिलंशिवशिवतत्त्वार्थयोगिनांपुंसाम्, हरएक देशमें हम रहते हैं और जहां २ निवास करते हैं तहां भिक्षाका अन्न भी बहुतसा मिलता है तालों और नदियों से मधुर जलको पान करते हैं शिव २ इस तत्त्व वस्तुकाही योगी चिंतन करते हैं॥ १॥ और ग्राम २ में रमणीक कुटी बनाई मिलती हैं और विनाही प्रयत्नसे भिक्षाका अन्न भी हमको मिलता है ऐश्वर्यों से हमको क्या प्रयोजन है॥ योगीन्द्रकहताहै हे देव! हमारा कोई एक रहनेका नियत स्थान नहीं है सम्पूर्ण भूमंडल पर हम भ्रमण करते रहतेहैं सम्पूर्ण भूमंडलको करामलकवत् हम देखतेहैं और आति उत्तम २ ओषधियोंको हम जानते हैं सांप का काटाहो विषपानसे मराहो और अग्निमें जलकर पानी में डूबकर शस्त्र से कटकर मराहो उसको भी हम अपनी ओषधियों के बल से फिर जीता करसक्ते हैं क्योंकि हमारे पास अनेकप्रकार की उत्तम २ संजीवनी बूटियां हैं ॥ योगीन्द्रकी बातों को राजा भी भीतर बैठाहुआ सुनरहाथा जब कि योगीन्द्रने कहा

हम शस्त्र करके कटेहुये को भी फिर जिला देतेहैं तब राजा तुरन्त बाहरको निकल आया और आकर यो- गीन्द्र को भूमिपर पतित होकर राजाने प्रणाम किया और कहा हेभगवन्! आपका भ्रमण परोपकारके लि- येही होताहै सो मैंने बड़ाभारी पाप कियाहै अपने पुत्र का मैंने वध कराया है और तिस पापकी निवृत्ति के लिये मैंने अग्नि में जलकर मरजाने की तैयारी भी की है आप समर्थ और सर्वज्ञ हैं आप अगर कृपा करके अपनी शक्ति से और संजीवनी औषध के बल से भोजको जिलादें तब आपका मेरेपर बड़ा उपकार होगा और आपकी कीर्त्ति भी होगी मुझ को इस पाप से बचा दीजिये ऐसे कहकर फिर राजा रुदन करने लगा योगीन्द्रने कहा हे राजन्! भय मत करो मैं अभी आपके पुत्रको जिला देऊंगा राजा ने कहा यदि मेरा पुत्र भोज जीजाये तब मैं उसी- काल में राजगद्दी तिसको दे देऊंगा और अब मैं वन में तप करूंगा मैंने अपने मन में ऐसा दृढ़ संकल्प कर लियाहै योगी ने कहा हे राजन्! महादेव जीकी कृपा से मैं अभी तुम्हारे बालक को जिलादे-

ऊंगा परन्तु प्रथम होमकी सामग्रीको नदीके किनारे श्मशान भूमिमें भेजदीजिये मैं उसी जगह होम कर के महादेवजीका पूजन करके तुम्हारे बालकको जिलाकर तुम्हारे घर में भेजदेऊंगा राजाने बुद्धिसागरसे कहा तुमहीं सामग्री को लेकर इनके साथ श्मशान भूमि में जावो राजा की आज्ञा को पाकर बुद्धिसागर सामग्री को लेकर योगीन्द्र के साथ श्मशान भूमि में गया और वत्सराज भी भोजको छिपाकर उसीस्थान में लेगया और सब आदमियों को कुछ दूरपर खड़ा करदिया योगीन्द्र ने होमकिया और वत्सराजने भोज को उस के पास बिठलाकर जयध्वनि का शंख बजा दिया और भोजको स्नान कराकर सुन्दर वस्त्रों और भूषणों को पहराकर और एक सोने की अम्बारीवाले हाथीपर सवारकराके नगरकी तरफ लेआये उसकाल में अनेकप्रकार के बाजे बजनेलगे और ब्राह्मण वेद मन्त्रोंका उच्चारण करनेलगे और वेश्यादिक नृत्यकारी को करनेलगीं भाटलोग कवित्तों को पढ़नेलगे सर्व ओरसे जय २ ध्वनि होनेलगी राजभवन में मंगलके गायन होनेलगे भोजकी माता बड़ी प्रसन्न हुई और

उसने अपने सब भूषण उतारकर दान करदिये मुञ्ज को भी बड़ी प्रसन्नताहुई जिसकालमें भोजकी सवारी राजभवन समीप पहुँची मुञ्ज भीतर से नंगे पांव से दौड़ आया और भोजको हाथी से उतार कर अपनी छाती से लगाकर रुदन करनेलगा भोज ने राजाके आंसुओंको अपने रूमालसे पोंछकर राजाको दिलासा दिया इतने में सवेरा होगया राजाने राजगद्दी की सामग्री को मँगाकर बड़ी धूमधाम से भोजको राज-तिलक करदिया और छत्र चमर भोज पर होनेलगे नगर में घर २ मंगलाचार होनेलगे नगरके लोगोंने बड़ा उत्साह मनाया तीनदिन रात्रिको रोशनी आत-शबाजीवगैरह तमाशे होतेरहे अब मुञ्जने एकांत देश का सेवन और ईश्वरके स्मरणको अपना मुख्य कर्त्त-व्य बनालिया मुञ्ज संसार से उपराम होकर वनमें कुटी बनाकर ईश्वर के ध्यान में लगगये जब कि मुंजने भोजको राजतिलक करदिया तब भोजने बुद्धि-सागर को अपना मुख्य मंत्री बनाया और वत्सराज को दूसरे काम पर नियत करदिया अब भोज प्रजा की पालना को करने लगे एक दिन भोज सवेरे वनमें

शिकार खेलने के लिये जाते थे उसी धारा नगर का निवासी एक ब्राह्मण सामने से आ निकला उसने भोजको देखकर अपने मुखको कपड़े से ढांपलिया भोजने तिस ब्राह्मण से पूछा तुमने हमको देखकर अपने मुखको क्यों ढांप लिया है और स्वस्ति शब्द को भी तुमने हमारे प्रति नहीं कहा है॥ इसमें कारण क्या है ब्राह्मण ने कहा हे देव! तुम्हारे से हमारी प्रीति नहीं है क्योंकि एक तो तुम्हारे में उदारतारूपी गुण नहीं है दूसरे तुम आप विद्वान् होकर विद्वानों से प्रीति को नहीं करते हो जिन बातों के करने से संसार में यश पैदा हो वह बातें तुम्हारे में नहीं हैं यही कारण मुख ढांपने और आशीर्वाद को न करने का है हे भोजराज! ऐसा लिखा है॥

प्रसादोनिष्फलो यस्य कोपश्चापि निरर्थकः॥
नतंराजानमिच्छन्ति प्रजाःषण्ढमिवास्त्रियः॥ १॥

जिस राजाकी प्रसन्नता निष्फल हो और जिस राजाका शत्रुपर क्रोध भी निरर्थकहो तिस राजाकी प्रजा इच्छा नहीं करती है जैसे नपुंसक पुरुष की स्त्री इच्छा नहीं करती है १॥

अप्रगल्भस्य या विद्या कृपणस्य च यद्धनम् ॥
यच्च बाहुबलं भीरोर्व्यर्थमेतत्त्रयं भुवि ॥ २ ॥

जिसमें प्रगल्भता नहीं है उसकी जो कि विद्या है और कृपण का जो कि धन है और भीरु की भुजाका जो कि बल है यह तीनों निरर्थक हैं ॥ २ ॥ हे देव ! पूर्व युगों में बली और दधीचि तथा कर्णादिक दाता हुये हैं जिनका यश पृथ्वी पर आजतक चलाजाता है सो तुम भी इस पृथ्वी पर उदारता से और गुणवानों की प्रतिष्ठा करने से अपने यशको फैलावो यह संसार तो अनित्य है इस अनित्य संसार में धर्म करनाही नित्य है जो परलोक का भी साथी है हे देव ! कोई चारदिन के सफ़र के लिये जाता है तब वह भी खान पान की सामग्री तैयारी करके जाता है और जो कि परलोक का बड़ाभारी सफ़र है वहां के लिये जो कुछ भी सामान जमा नहीं करता है उससे बढ़कर और कौन मूर्ख होगा तिस ब्राह्मण के उपदेश को सुनकर राजा भोज के चित्त में भी विचार उठा और राजाने उस ब्राह्मण से कहा ॥

सुलभाः पुरुषालोके सततं प्रियवादिनः ॥
अप्रियस्यचपथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥१॥

इस संसार में प्रिय भाषण करनेवाले पुरुष तो सुलभ हैं परन्तु अप्रिय हो और पथ्य हो तिसके कथन करनेवाले दुर्लभ हैं १॥

मनीषिणःसन्तिनतेहितैषिणो
हितैषिणःसन्तिनतेमनीषिणः ॥
सुहृच्चविद्वानपिदुर्लभोनृणां
यथौषधंस्वादुहितं च दुर्लभम् ॥ २ ॥

भोज कहते हैं हे देवता ! संसार में बुद्धिमान् तो बहुत हैं परन्तु वह सब के हितैषी नहीं हैं और जो कि सब के हितैषी हैं वह बुद्धिमान् नहीं हैं पुरुषों में सुहृद् और विद्वान् पुरुष दुर्लभ हैं जैसे औषध स्वादु और हितकारी दुर्लभ है ॥ २ ॥ फिर भोजराजने उस ब्राह्मण से कहा कल सवेरे आप हमारी सभामें अवश्य आना और अपने नामको मेरे प्रति बतादीजिये ब्राह्मण ने अपने नामको भूमिपर लिखकर बतादिया ब्राह्मण के नामको जान करके और ब्राह्मण को प्र-

णाम करके राजा अपने गृहको लौट आये फिर वन की तरफ़ शिकार करने को नहीं गये ब्राह्मण अपने घरको चलागया दूसरे दिन सवेरे ब्राह्मण राजा की सभा में गया राजाने एक लाख रुपया तिस ब्राह्मण को दिया और कहा आप हमारी सभा में आया करिये और विद्वानों को भी लाया करिये मैं यथा योग्य आजसे लेकर विद्वानों का सत्कार करूंगा॥ राजाने मनमें विचार किया विद्याकी उन्नति करनी चाहिये सो विना द्रव्य और दण्ड के होनी कठिन है इसलिये राजा ने दोनों बातों को जारी किया प्रथम तो राजाने नीचेवाले श्लोकको मंत्री से कहा॥

विप्रोपियोभवेन्मूर्खः सपुराद्बहिरस्तुमे॥
कुम्भकारोपियोविद्वान्सतिष्ठतुपुरेमम॥ १॥

राजाने कहा यदि ब्राह्मण हो और मूर्ख भी हो तब तिसको मेरे नगर से निकास दिया जाये और जो कुम्हार जातिका विद्वान् हो सो मेरे पुरमें निवास करै॥ १॥ बुद्धिसागर ने कहा महाराज बहुत काल से विद्याका लोप होगया है प्रायः करके लोग विद्या हीन हैं सो ऐसा करने से तो सब नगरही उजाड़ हो·

जायगा इसलिये आप महल्ले २ और ग्राम २ में स्त्रियों के लिये जुदे और पुरुषों के लिये जुदे मदरसे बनवाइये और सबको पढ़ने का हुक्म दीजिये भोजराजने इसी तरह से किया और विद्याको पढ़कर घर २ पंडित होगये और जो कोई एक भी नया श्लोक बनालाता था तिसको भी राजा बहुत द्रव्य देता था भोजराज आप भी बड़े पंडितथे भोजवृत्तियोग सूत्रों पर उनकी बनाईहुई विद्यमान है पांडवों के पीछे विद्याका प्रचार भोजराजनेही किया है भोजके पश्चात् फिर धीरे २ विद्याका लोप होगया था फिर अब सरकार अंगरेज़ी ने विद्याकी उन्नति की है भोजराज में उदारतादिक सब गुण थे और ब्रह्मज्ञानी भी था इसी से बहुत सा द्रव्य विद्वानों को देता था॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिदंसदासशिष्येणस्वामिपरमानंद समाख्याधरेणशिशावरनगरनिवासिनाभोजराजजीवन चरित्रंमध्यदेशीभाषायांकृतंसमाप्तम् ॥ ६ ॥

## अब हम महात्मा गुरु नानकजीके जीवनचरित्र को लिखते हैं ॥

पुराने इतिहासों से विदित होताहै जिस २ कालमें धर्मकी हानि और अधर्मकी अधिकता होती है तिस २ काल में ईश्वर किसी न किसी महात्मा पुरुष को धर्म की मर्यादा के स्थापन करने और अधर्मियों के सुधारनेके लिये उत्पन्न करदेता है जिसकालमें कलियुग में पाखण्डियों ने अनेकप्रकार के वाममार्गादिक पाखण्डों को चलाकर लोगोंको कुमार्ग में लगादिया तब तिस कालमें धर्मकी बड़ीभारी हानिहुई फिर म्लेच्छोंने इस भारतवर्ष पर आक्रमण करके शेष जो कि बचा बचाया धर्मथा उसका भी नाश करदिया और म्लेच्छों ने जब कि अतिअत्याचार को किया तब परमेश्वर ने भारतवर्षीयलोगोंको म्लेच्छों के अत्याचारसे छुड़ानेके लिये और पुरातन धर्मकी रक्षा करने के लिये संवत् १५२६ सन् १४६९ ई० में कार्तिक सुदी पूर्णिमा को मौज़ा तिलवंडी ज़िला लाहौर सूर्य्यवंशी क्षत्रिय कुल

कल्याणचन्द के घरमें गुरुनानकजी का जन्महुआ सो आर्य्यावर्त्तवालों के कल्याणार्थ और धर्मकी वृद्धि के लिये गुरुनानकजी का जन्महुआ था सो गुरुनानकजीके नामको इस हिंदुस्तान में कौन पुरुष नहीं जानता होगा किंतु सब लोग जानते हैं बल्कि इङ्गलैण्ड वगैर २ देशोंमें भी सबलोग गुरु नानकके नाम को जानते हैं इस देशमें कोई भी ऐसा नगर नहीं है जिसमें कि गुरुनानकजी का स्थान न बनाहो और ऐसा इनका प्रताप हुआ है कि म्लेच्छों को भी इन्होंने अपना सेवक बनाया है और म्लेच्छलोग भी इनको गुरु करके मानतेथे इसलिये जगद्गुरु कहलाते हैं क्योंकि और किसी भी आचार्य्य के नामसे पूर्व गुरु पद नहीं जोड़ाजाता और इनके नामके पहले गुरुपद जोड़ाजाता है विना गुरुपद के इनके नामका उच्चारण नहीं किया जाता है इसीसे साबित होता है जगद्गुरुगुरुनानकजीही हुयेहैं और गुरुनानक सूर्य्यवंशी क्षत्रियकुलमें जिस हेतुसे हुये हैं इसी हेतु प्रथम हम इनकी वंशावली को दिखलाते हैं ॥ श्रीरामचन्द्र जीके लव और कुश दो पुत्र हुये हैं दोनों में से लवने

लाहौर नगर को बसाया था और कुश ने कसूरनगर को बसाया था बहुत कालतक दोनों का वंश चलता रहा पश्चात् लवके वंशमें कालकेतु नाम करके राजा हुआ और कुशके वंश में कालराय नाम करके एक राजा हुआ उन दोनोंका बहुत कालतक परस्पर युद्ध होतारहा अन्तमें कालकेतुकी जयहुई और कालराय अपने देश से भागगया और दूसरे देश में जाबसा वहांपर उसने एक राजकुलकी कन्यासे विवाह किया और उसी जगह पर रहनेलगा वहांपर उसका एक सोढ़ीराय नाम करके एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसी सोढ़ीराय के नाम से सोढ़ी जातिवाले क्षत्रिय अबतक पंजाब में प्रसिद्ध हैं उस सोढ़ीराय की पांचवीं पीढ़ीमें विजयराय नाम करके महान्‌प्रतापी एक राजा उत्पन्न हुआ ॥ जिसने फिर कुशके वंशवालों पर चढ़ाई की और युद्धमें उनको पराजय करदिया और महाभारत के प्रसिद्ध युद्ध में वेदीवंशी अभौजनाम करके एक सूर्य्यवंशी राजा हुआ है उसने शल्यराजाकी तरफ़से पांडवोंके साथ युद्धकिया था कालके हेरफेरसे इसके वंशवालोंके हाथसे राज्य जातारहा परन्तु थोड़ेसे ग्राम

बचगये थे वह ग्राम भी महमूद गज़नवी के हमलों से दूसरों के हाथमें चलेगये उसी वेदीवंशमें एक रामनारायण क्षत्रिय हुये हैं जिनके पुत्र शिवरामदासजी हुये हैं उनके फिर दो पुत्र हुये हैं दोनों में से एकका नाम कालूचन्द और दूसरे का नाम लालूचन्द था संवत् १४९३ में कालूचन्दजी का जन्म हुआ था और संवत् १५०० में लालूचन्दका जन्म हुआ था कालूचन्दका नामही कल्याणचन्द करके पीछे लिख आयेहैं वह कालूचन्द तिलवंडीनगरके हाकिम बुलार नामकके मोदी थे उसी कल्याणचन्दके घर में पूर्वोक्त संवत्में गुरुनानकजीका जन्महुआ उसकालमें कल्याणचन्दने बहुतसा दान पुण्यकरके अपने पुरोहित हरदयाल पंडित ज्योतिषी को बुलाकर गुरुनानकजीकी जन्मकुण्डली लिखवा उसका पाण्डितजीसेपूछा पण्डित जीने लग्नमुहूर्त्तका शोधन करके कल्याणचन्दजी से कहा तुम्हारा लड़का बड़ी शुभमुहूर्त्त में और उत्तम लग्नमें जन्माहै सब ग्रह इसके बहुत अच्छे पड़े हैं इन ग्रहों को येही फल जानपड़ता है कि यह बड़ा ज्ञानी महात्मा होगा और देशपर बड़ा उपकार करैगा

क्योंकि लोगों को भक्तिमार्ग का उपदेश करके सच्चे मार्ग में लगावैगा और भूत भविष्यत् वर्त्तमान तीनों कालकी बातोंको बतावैगा और इसका नाम संसारमें चिरकाल तक स्थायी रहेगा ज्योतिषी की वार्त्ता को सुन कल्याण बड़े प्रसन्नहुये और ज्योतिषीको बहुतसा द्रव्य देकर कल्याणचन्दने बिदा करदिया और पुत्रके जातकर्मादिकों को करके बड़ा उत्साह किया फिर सात वर्ष के जब कि नानकजी हुये तब कल्याण-चन्दने इनका यज्ञोपवीत कराकर पढ़ना लिखना सीखने के लिये गोपाल पंडित के पास गुरुनानकजी को बिठलाया तब पंडितजी गुरुनानकजी को प्रथम हिसाब सिखाने लगे गुरुनानकजी तो जन्मसेही सिद्ध थे और छोटी उमर में ही भक्ति तथा ज्ञानकी बातोंको करते थे इसलिये गुरुनानकजी ने पंडित से कहा संसारमें फँसानेवाला हिसाब तो हम नहीं पढ़ैंगे यदि आप उस हिसाब को जानते हैं जोकि जन्म म-रणसे छुड़ानेवाला है तब तो हमको बताइये अर्थात् कर्मोंके हिसाबको चुकानेवाली विद्याको यदि आपने पढ़ा है तब हमको भी उस विद्याको पढ़ा दीजिये

वरना पढ़ानेसे जवाब दीजिये पण्डितने कहा कर्मोंके हिसाव को चुकानेवाली विद्याको तो मैंने नहीं पढ़ा है यदि पढ़ा होता तब आपको भी मैं पढ़ा देता मैंतो वही-खाता का हिसाब किताब पढ़ाहूं उसीको पढ़ाता हूं गुरुनानकजी पण्डित से बिदा होकर अपने घरमें चले आये फिर इनके पिताने व्रजनाथ पंडित के पास इनको संस्कृत पढ़ने के लिये भेजा जिस कालमें पंडितजी इनको संस्कृत पढ़ाने लगे तब गुरुनानकजीने शब्द कहा॥

ॐ नमः अक्षरका सुनहु विचार।
ॐ नमः अक्षर त्रिभुवन सार॥
सुण पांड़े क्या लिखा जँजाला।
लिख रामनाम गुरुमुख गोपाला॥ १॥

गुरुनानकजी कहते हैं ॐकाररूपी जोकि अक्षर है उसीके प्रति मैं नमस्कार करताहूं और उसीका विचार करना और उसीको सुनाना हमारा काम है क्योंकि जिस ॐकाररूपी अक्षर के प्रति हम नमस्कार करते हैं वही तीनों भुवनोंका सारहै सुनो पंडितजी

किस जंजालको आप लिखवाते हैं और लिखते हैं रामके नामको लिखो जो रामकी गुरुमुख पुरुषों की गो जोकि पृथ्वी तिसकी पालना करनेवाला है १ अब गुरुनानकजी उस पाठशाला में सब लड़कोंको येही रामनाम सिखाने लगे तब पंडितजी ने गुरुजी के पितासे कहा हमसे यह नहीं पढ़ते हैं क्योंकि यह तो दूसरे लड़कोंको भी नामजपने का उपदेश करके खराब करते हैं पंडितकी वार्त्ता को सुनकर कल्याण-चंद्रने अपने लड़के को फिर मौलवी कुतुबदीन के पास पढ़ने को भेजा जब गुरुनानकजी मौलवी साहबके पास पढ़ने के लिये बैठे तब मौलवी इनको पढ़ाने लगा कहो अलिफ कहो बे तब गुरुजीने कहा॥

अलिफअल्लाहनूयादकर गफलतमनोबिसार॥
श्वासापलटेनामबिन धिगजविन संसार॥ १॥

गुरुजी कहते हैं एक जो अल्लाह याने खुदा है उसीको यादकरो और उसकी तरफ़से जोकि गफलतहै उसको दिलसे भुलादेवो जो सांस कि विना परमेश्वरके नामके लेनेसे बाहरको जिनका जाता है उनके जीनेको संसारमें धिक्कारहै गुरुनानकजीकी

बातों को सुनकर मौलवीने कल्याणचंदसे कहा आपका लड़का कोई औलिया है क्योंकि यह तो मेरेको भी राहेरास्तको बताता है याने खुदासे मिलनेवाली बातोंका उपदेश करता है ॥ गुरुनानकजी मौलवी को पढ़ाकरके अपने घरमें चले और लोगोंको नामके जपने का उपदेश करने लगे और आपभी नामके जपनेमेंही अपने समयको व्यतीत करनेलगे जब कि गुरुनानकजी १५ पंद्रहबरसके हुये तब इनके पिता ने विचारकिया लड़का कुछ पढ़ता लिखता तो है नहीं कोई व्यापार करनाही इसको सिखाना चाहिये प्रथम थोड़ासा रुपया देकर इनको किसी सौदाके ख़रीद करने के लिये भेजाजाये जब कि यह धीरे २ व्यापार करना सीखजावैंगे तब बहुतसा रुपया इनको दियाजावेगा ऐसा अपने मनमें विचार करके कल्याणचंदने कुछ रुपया गुरुनानकजीको सौदा ख़रीद करने के लिये देकर कहा कोई नफ़ेवाला खरा सौदा ख़रीदकरके लाना और भाई बालेजटको इनके साथ करके लाहौरको सौदा ख़रीदने के लिये गुरुनानकजीको भेजदिया जब कि रुपये को लेकर गुरुजी

चले तब रास्तामें एक बागथा उस बागमें गुरुजी भाईबालेको साथ लेकर दो घड़ी आराम करने के लिये चलेगये बागके अंदर जाकर क्या देखते हैं कुछ महात्मा वृक्षोंके नीचे आसन लगाकर ठहरे हुये हैं और परस्पर अध्यात्मिकविचारको कररहे हैं गुरुजी भी जाकर उनके पास बैठगये और उनसे सत्संगकी बातचीत करनेलगे जब कि सत्संग होचुका तब गुरुजीने उनसे पूछा महाराज आपका भोजन अभी होचुकाहै या नहीं तब महात्माने कहा भाई दोरोज़से वर्षा होरही है इसीसे कोई अन्नदेनेवाला भक्त नहीं आयाहै जब शरीरका भोग आनेको होगा तभी आवैगा उनकी वार्ताको सुनकर गुरुजीने भाईबाला से कहा पिताजीका हुक्महै कोई खरा सौदा ख़रीदना सो इससे बढ़कर और क्या खरा सौदा होगा महात्माकी सेवासे बढ़कर संसारमें कोई भी खरा सौदा नहीं है ऐसे कह करके जितने रुपये कल्याणचंदने नानकजीको दियेथे उनसब रुपयोंका सीधा खानेकेलिये और कपड़ा पहरनेकेलिये मँगाकरके उनके आगे धरदिया और अपने घरको चलेआये जब कि गुरुनानकजी

अपने घरमें आये तब पिताने पूछा क्या सौदा ख़रीद करके लायेहो गुरुनानकजीने कहा ऐसा खरा सौदा ख़रीदाहै जिसका नाश न होगा अर्थात् धर्मका सौदा लाये हैं जोकि इसलोक और परलोक में तुम्हारा सहायक होगा भाईबाला ने सब हाल महात्मा के खिलानेका कल्याणचन्दसे कहदिया वह सुनकर चुप होगये जब कि थोड़े दिन बीते तब कल्याणचन्द ने नव्वाबसे कहकर मोदीख़ाना नव्वाबका गुरुनानकजी के सिपुर्द करादिया कल्याणचन्दजीका यह तात्पर्य्य था कि नानक एक काम में लगे रहें नहीं तो कहीं फ़कीरों के साथ यह निकल न जायेंगे इसी विचार को करके कल्याणचन्दने गुरुको वहांपर मोदीख़ाना के काममें लगादिया गुरुनानकजीको जिसकालमें मोदीख़ाना सिपुर्द हुआ उसी काल में खूब गरीबों और महात्मोंपर लुटानेलगे जो कोई अतिथि आकर जो कुछ मांगता उसको तुरन्तही वही वस्तु देदेते॥ गुरुनानकजीकी उदारता को देखकर लोगोंने नव्वाब से कहा मोदीख़ानेको तो नानकजी खूब लुटाते हैं अगर थोड़े दिन और यह इसी कामपर रहजायेंगे तब

सब मोदीख़ानेको उजाड़ डालेंगे तब नव्वाबने गुरु से हिसाबमांगा। गुरुजीने जब कि हिसाब दिया तब हिसाब पूराही निकला एक पैसाभी कम न हुआ किन्तु किसी तरहका भी हिसाबमें फर्क न निकला फिर जब कि कुछ दिन बीते तब कल्याणचंदने अपने मनमें कहा जबतक इनका विवाह न कराया जायेगा तब तक यह गृहस्थाश्रमसे निकले हुये स्वतंत्रही भ्रमण करते रहेंगे इसलिये इनको बंधनमें डालदेनाही अ- च्छाहै और इनको बंधनमें डालने से वंशका भी अ- भाव न होगा वंशका चलानाही धर्म है ऐसा विचार करके संवत् १५४४ में सुलक्षणी नामवाली मूलचंद क्षत्रिय की कन्याके साथ गुरुनानकजीका पिताने विवाह करादिया और विवाहके उत्सव में कल्याण- चंदने बहुतसा द्रव्य भी ख़र्च किया और अपनी बिरादरीको खूब खिलाया पिलायाभी अब गुरुनान- कजी गृहस्थी बनगये गृहस्थी होजाने पर भी उनका मन विषयों में आसक्त नहीं हुआथा जैसी उदारता उनमें पहले थी फिर पहले से भी और अधिक उदारता होती जाती थी संतों की सेवाकरनी उन-

से सत्संग करना सब लोगों को धर्मका उपदेश क-
रना येही उनके मुख्यकाम थे और हरवक्त ईश्वरका
स्मरण और ध्यानही करते रहते थे फिर संवत् १५५१
में श्रीचंदजी पुत्र उत्पन्न हुये और संवत् १५५३ में
लक्ष्मीचन्दजी का जन्महुआ गुरुनानकजीके ज्येष्ठ
पुत्र श्रीचन्दजी भी जन्मसेही सिद्धहुये हैं जब कि यह
पांच. वर्षके हुये तबसे इन्होंने उदासीन वृत्तिको धारण
करलिया संसार से उपराम होकर रहनेलगे॥ फिर जब
कि कुछ और बड़े होगये तब इनका यज्ञोपवीत कराया
गया जबसे इनका यज्ञोपवीत हुआ तबसे इन्होंने ब्रह्म-
चर्य्यको धारण करके ब्रह्मचर्य्य के धर्मोंकी पालना को
करनेलगे फिर जिसकालमें इनकी उमर १५ या १६
वर्षकी हुई तब वनमें जाकर रहनेलगे और जन्मभर
ब्रह्मचर्य्यको धारण करके बनमेंही रहे और शास्त्रों में
जोकि आठप्रकार के मैथुन के त्यागका नाम ब्रह्मच-
र्य्य रक्खाहै उसको विधिपूर्वक धारण किया स्त्रियोंका
श्रवणदर्शन और कीर्त्तनादिकों का कभी स्वप्नमें भी
इनको स्फुरण नहीं होताथा नैष्ठिक ब्रह्मचर्य्य जिसको
कहते हैं उसीको इन्होंने धारणकिया शत वर्ष के स-

मीप तक यह जीते रहे दैवी संपद्के जितने कि गुण हैं वह इनमें पूर्ण रीतिसे घटते थे ॥ बाबा गुरुदित्ता जीने इनसे उपदेश लियाथा उनके आगे चार शिष्य हुये हैं फिर उनके शिष्यों की परम्परा बहुतसी चली है उदासीन वेष श्रीचन्द्जी सेही चला है उदासीन मतमें बड़े २ भारी ज्योतिस्स्वरूप और आत्मस्वरूप जैसे अनेक विद्वान् होचुके हैं और इदानींकालमें भी सैकड़ों बड़े २ विद्वान् और पूर्ण विरक्त इसी वेष के साधु मिलते हैं और काबुल खन्धार से लेकर सिंध पञ्जाब गुजरात दक्षिण रामेश्वर तैलंग मलेबार उड़ीसा बङ्गाला ढाका कमक्षा मगातिरोहि अवध मालवा वगैरःसब देशोंमें उदासियोंके स्थान विद्यमान्हैं कमसे कम इस वेषमें एकलाख महात्मा होवैंगे उदास और संन्यास शब्दका अर्थ एकही है क्योंकि यह पर्याय शब्द हैं और इन दोनोंका अद्वैतही मत भी है और जो कि छोटे लड़के गुरुनानकजी के लक्ष्मीचन्द्जी हुये हैं उनसे वेदीवंश चली है वह बावे साहबज़ादे कहलाते हैं पंजाब देशमें उनकी पूजा सब सिख और सेवक लोग करते हैं जब कि गुरुनानकजी ने देखा

कि हमारे पिताका मनोरथ पूरा होगया क्योंकि उनके पिताकी इच्छा थी कि वंश चले सोतो होगई अब गृहस्थाश्रमको त्याग करदेनाही उचितहै बिना इसके त्याग करने के लोगोंको परमार्थ की तरफ लगानेका उपदेश नहीं होसक्ताहै और उपकार करनाही बड़ा-भारी धर्म है सो लोगोंपर दयादृष्टि को लेकर गुरू नानकजी सब कुछ छोड़ छाड़कर बाहर जंगल में जाकरके बैठगये नव्वाब को जब कि मालूमहुआ कि नानकजी ने दुनियां को तर्क करदिया है तब अपने आदमियों को इनके बुलाने के लिये भेजा इन्होंने कहा हमको अब काम करना मंजूर नहीं फिर अपने दीवान को और क़ाज़ीको गुरूनानकजी के बुलानेके लिये भेजा तब गुरूजीने कहा हम अब मनुष्य की नौकरी नहीं करेंगे खुदाकी नौकरी को करेंगे नव्वाब इस वार्त्ता को सुनकर चुप रहगये पासके मौलवी ने कहा यदि वह खुदाकी नौकरी करनी चाहते हैं तब हमारे साथ मसजिद में चल करके वह निमाज़ को पढ़ें नव्वाब मौलवियों को साथ लेकर गुरुनानकजी के पासगये और नव्वाब ने कहा मौलवीलोग ऐसा

कहते हैं आपको मंजूरहै गुरूनानकजीने कहा अच्छा अब मसजिद में मौलवियों के साथगये वह लोग निमाज़ पढ़नेलगे गुरूनानकजी पास खड़े २ देखतेरहे जब कि नवाब और मौलवी सब निमाज़ पढ़चुके तब उन्होंने गुरूनानकजीसे कहा आप तो चुपचाप खड़े रहे निमाज़को आपने नहीं पढ़ा॥ गुरूजी ने नवाब से कहा आप खड़े तो शरीरसे निमाज़ पढ़तेथे परन्तु मन तो आपका काबुल में घोड़ों के ख़रीदने में लगा था और मौलवीसाहब को अपनी घोड़ी के बच्चेकी फ़िकर लगीथी कि कहीं कुयें में न गिरजाये क्योंकि प्रथमदिन में वह घोड़ी ब्याई थी॥ आप लोगोंके दिलका तो ऐसा हालथा तब हम किसके साथ निमाज़ पढ़ते नवाब और मौलवी ने इस बातको मानलिया गुरूजीने जब कि नवाब को वह सिद्धि दिखलाई तब नवाबने हाथ जोड़कर कहा कि मेरे क़सूरको आप माफ़ फ़रमावें और नवाबने हुकुम देदिया कोई भी मुसल्मान इनके पास न आनेपावे फिर वहांसे चलकर गुरूनानकजी इमनाबाद में चलेआये नगर के बाहर ठहरे वहांपर एक भाई लालूनाम करके

ईश्वरका बड़ा भक्त रहता था वह गुरूजी के पास आकर गुरूजी की सेवा करनेलगा वहांपर गुरूजी लोगोंको सच्चे धर्मों का उपदेश करनेलगे थोड़े दिन इमनाबाद में रहकर फिर गुरूजी लाहौर को चलेगये॥ लाहौर में एक दुनीचन्द नाम वाला बड़ा कृपणधनी रहताथा वहांपर गुरूके आनेकी खबर जब कि लोगोंको पहुंची तव लोग सव गुरूजीके पास आकर गुरूजीके उपदेशों को सुनने लगे और उस दुनीचन्द कृपणको भी प्रेरणाकरके गुरूजीके पास लेगये और गुरूजीसे उसके हालको कहकरके कहा महाराज इसको भी उपदेश करिये गुरूनानकजीने दुनीचन्दको एक सूई दी और कहा यह हमारी आपके पास अमानत है इस सूईको परलोक में हम तुम से लेवेंगे दुनीचंदने कहा महाराज इसको मैं क्योंकर परलोक में लेजाऊंगा मेरा तो यह शरीर भी इसी जगह में रहजायेगा गुरूजीने कहा जब कि तेरे को इतना बोध है कि एक सूई भी हमारे साथ नहीं जायेगी तब फिर तू जो दौलत को जमाही करता जाता है इतनी दौलतको तू अपने साथ क्योंकर ले-

जायेगा परमेश्वर के निमित्त कभी भी तू किसी दीन अनाथको नहीं खिलाता है तब फिर साथलेजाने के लियेही तो तू जमाकरता है गुरूजीकी वार्ताको सुकर दुनीचन्द बड़ा शर्मिन्दा हुआ और तिसके चित्त में गुरूजी का उपदेश बैठगया उसीदिनसे वह अपनी द्रव्यको परमेश्वर के निमित्त ख़र्च करने लगे गुरूजी कुछदिन लाहौर में रहकर फिर स्यालकोट को चलेगये आगे स्यालकोट में मीरहमज़ा ग़ौससय्यद एक मक़बरे में रहता था और नगरके लोगोंसे नाराज़होकर नगरके नाश करने के लिये वह अनुष्ठान करता था गुरूजी उसके पासगये परन्तु उसने गुरूजीसे भेंट भी न की तब गुरूजी अपने आसन पर चलेआये और उधर वह मक़बरा फटगया जिसमें वह रहताथा इसहालको देखकर वह तुरन्त गुरु नानकजी के पास दौड़ा आया गुरूजी ने पूंछा तू किसकाम के लिये अनुष्ठानको करता है उसने कहा एक आदमीने अपने लड़के को देनेको मेरे से कहा था और फिर नहीं दिया इस नगर के लोग बड़े झूंठे हैं उनको दण्ड देने के लिये मैं अनुष्ठान को कर-

ताहूं भाई मरदाना और भाई बाला दोनों गुरूजीके साथही रहतेथे गुरूजीने भाई मरदाने को दो पैसे देकरके कहा एक पैसेका सच्च और एक पैसेका झूठ बाज़ारसे ख़रीद करकेला भाई मरदाना पैसेको लेकर बाज़ारमें गया जिसके पासजाये वह हँसीको करै आख़िर ख़ाली लौटकर चलाआया गुरूजीने कहा फिरजा कहीं न कहीं मिलजायेगा फिर भाई मरदाना भाई मूलाके लड़के के पास जाकर कहने लगा एक पैसेका सच्च और एक पैसेका झूंठ हमको देओ उसने दोनों पैसे लेकर एक कागज़पर लिखदिया मरना सच्च है और दूसरे कागज़पर लिखदिया जीना झूंठ है दोनों कागज़ भाई मरदानाको देदिये भाई मरदाना लेकर चलाआया और गुरूजीके आगे धरदिये गुरूजीने मीरहमज़ाको दिखलाकर कहा देखो इस नगरमें ऐसे २ भी लोग रहते हैं फिर आप कैसे नगर के सब आदमियों को झूंठा बनाते हैं फ़क़ीर को दोस्त और दुश्मन के साथ समबुद्धि होना चाहिये फिर गुरु नानकजी ने भाई मूले को बुला भेजा और उसको अपने साथ लेकर वहां से चल दिया

और रास्ता में मालवा वगैरह देशों में लोगों को उपदेश करते हुये हरिद्वार में पहुँचे और वहां पर गंगाजी में खड़े होकर लोग पूर्वकी तरफ़ मुख करके जलको फेंक रहेथे अर्थात् तर्पण कर रहेथे गुरू नानकजी गंगा में पश्चिम मुख खड़े होकर जलको बाहर फेंकने लगे किसीने पूंछा-आप क्या करते हैं कहा पंजाब में हमारा खेत है उसको सींचते हैं लोगों ने कहा वहांपर यह जल कैसे पहुँचेगा गुरू ने कहा जैसे तुम्हारा जल पितरों को पितरलोक में पहुँचेगा तैसे हमारा भी पहुँचेगा अब इसमें लोग बाद बिवाद करने लगे गुरूजीने कहा जो कि मुख्य कर्त्तव्य पुत्रके लिये है जीते माता पिताकी सेवा करनी उनको स्नान कराना भोजन कराना उनके गोड़ दबाने उनके बिछौने को झाड़ना उनकी तन मन धन से सेवा करनी उनको ईश्वररूप देवतारूप गुरूरूप करके मानना इन बातों को तो तुम लोग नहीं करते हो और माता पिताके मरजाने पर उनके पीछे तुम जलको फेंकने लगते हो इससे क्या होताहै माता पिता पुत्रको इसे लिये उत्पन्न करता है जो कि हमारी सेवा को करै बृ-

द्धाऽवस्था में हमको कष्ट न हो इस लिये नहीं उत्पन्न करता है कि जीते पूंछे नहीं और मरे पीछे जलको फेंके मनुष्य जन्म का मुख्य कर्त्तव्य यही है कि जीते माता पिताकी सेवा करनी साधु ब्राह्मण की सेवा करनी सत्संग करना ईश्वर की भक्ति करनी किसी जीवको भी न सताना सत्य भाषण करना इस तरह के गुरूजीके उपदेशों को सुनकर वह लोग सब यात्री गुरूजीके सेवक बनगये फिर वहांसे गुरूजी अलीगढ़ मथुरा आगरा वग़ैरह नगरों में लोगोंको उपदेश करते हुये अपने वचनरूपी अमृतको बरसाते हुये बनारस में पहुँचे बनारस में गुरूजी बाहर बाग़ में ठहरे वह गुरूजीके नाम से प्रसिद्ध होगया अबतक वह गुरूकाही बाग़ बोला जाताहै वहांपर कुछ दिन गुरूजीने निवास किया तब एक दिन भाई मरदाना ने गुरूजीसे प्रश्न किया महाराज सब लोग परमेश्वर के हुक्मको क्यों नहीं मानते हैं अपने मनमाने कर्मों को सब लोग क्यों करते हैं जो कि धर्म्म वेदने और शास्त्रने बताये हैं उन्हीं को करना चाहिये गुरूजीने एक लाल निकालकर भाई मरदाने को दिया और

कहा इसको बाज़ार में लेजाकर वेंचलावो ॥ तिस लालको लेकर भाई मरदाना प्रथम एक कुँजड़े के पास गया वह कुँजड़ा तिसके बदले में थोड़ीसी तर-कारी को देने लगा फिर बनियांके पास गया वह तिस के बदले में सेरभर आटा को देने लगा फिर हलवाई के पास लेगया हलवाई मिठाई देने लगा तब फिर एक सराफ़ जवाहिरी को दिखलाया उसने एकसौ रु-पया तिस लालकी नज़र भेंटकी और कहा इसका दाम पूरा २ हम भी नहीं कहसक्ते हैं तब मरदाना लालको लेकर गुरूजीके पास चलाआया और सब हाल कह सुनाया तब गुरूजीने कहा भाई मरदाना जैसे लाल जवाहिरी के पास जाकरकेही क़दरको पाता है कुँजड़ा वगैरह के पास जाकर क़दरको नहीं पाता है तैसे परमेश्वरका हुक्मरूपी जो कि लाल है नाम काही स्मरण करना, चिंतन करना परमेश्वरका ध्यान करना स्मरण करना चिंतन करना यह लाल पूर्ण भक्तोंके पास जाकर क़दरको प्राप्त होताहै जो निष्काम संत महात्मा हैं वहीनामरूपीलाल की क़दर को जानते हैं जो कि भक्ताभासहैं या सकामी हैं वह तिस लाल

को कांच के बराबर जानते हैं इसी लिये तिस लाल को कांच से बदल डालतेहैं क्योंकि स्त्री पुत्रादि कांच रूपी विषयों की प्राप्ति के लिये वह नामरूपी लाल को जपते हैं मानो कांचपर बदलते हैं इसी लिये वह सदैव काल दुःखको प्राप्त होतेहैं बार २ जन्मते मरतेही वह रहते हैं कभी भी वह निवृत्ति मार्गको नहीं प्राप्त होतेहैं बनारस में बहुत से लोग गुरूजीके उपदेशों को सुनने को आते और बहुतसा लाभ उठाकर जाते फिर वहांसे गुरूजी पटना को चलेगये पटना में भी कुछ कालतक रहकर लोगोंको अपने उपदेशों से कृतार्थ किया फिर वहांसे गयाको गये और गयासे भागलपुर होते मुंगेर होते राजमहल मुर्शिदाबाद होते कामरू में जा पहुँचे वहांपर गुरूजीने देखा बहुतही भ्रष्टाचार है और मांसाहारी लोग भी हैं उनको मांस छोड़ने का उपदेश किया फिर कमक्षा में गये तो देखा कि वाममार्ग का बड़ा प्रचार है जो कि वेदशास्त्र से बाह्य है उनको गुरूजीने कहा जीवों की हिंसा करनी अधर्म है जैसे तुमको कोई मारै और काटै तब तुमको कितना दुःख होताहै और तुम्हारी संततिको

काटै तव तुमको अत्यन्त कष्ट होताहै तैसे जिनको तुम मारते हो वह भी तो किसी की संतति हैं उनको भी कष्ट होताहै यदि ज़रासा भी रुधिर तुम्हारे कपड़े में लगजाये तव तुम जानते हो कि हमारा कपड़ा पलीत होगयाहै तैसेही मांसके खानेसे तुम्हारा हृदय भी मलिन होगया है मनुष्यजन्म जीवहिंसा के लिये नहीं है बल्कि जीवोंकी रक्षा करने के लिये है मांसका खाना मनुष्यके लिये नहींहै किन्तु सिंह और स्यार वग़ैरह जानवरोंके लियेहै गुरूजी के वाक्योंको सुनकर जो नरमचित्तवाले थे वह बाममार्ग से बाहर होगये अर्थात् बाममार्ग का त्याग करके वह दक्षिण मार्गमें होगये उस कामरूदेश में खारापानी था भाई मरदाना ने कहा महाराज यह खारापानी नहीं पिया जाताहै तब गुरूजी ने धरती में बरछे को मारा मीठे पानीकी धारा निकली कहा ले मरदाना मीठेपानी को पी मरदाना ने मीठापानी पिया वह मीठेपानी का चश्मा अबतक वहां गुरूनानकजी के नामसे मशहूर है वहां से फिर गुरूजी आसाम वग़ैरह देशोंमें होते लोगों को उपदेश करते जगन्नाथपुरी में जा पहुंचे

वहांपर समुद्र के किनारेपर गुरूजीने आसन जमाया पानी वहां परभी सब खाराही था गुरूजीने वहांपरभी प्रथम बरछा मारकर मीठेपानी को निकाला फिरउसी जगहमें बावलीको बनवा दिया वह बावली बाबा नानकके नाम से अब भी वहांपर प्रसिद्ध है जगन्नाथ पुरीमें भी गुरूजी लोगोंको धर्म्मका उपदेश करते रहे फिर वहांसे समुद्र के किनारेके रास्ता से तैलंग देश को चलेगये वहांसे करनाटक मलेबार दक्षिणके देशों में अटनकरतेहुये फिर महाराष्ट्र गुजरात काठियावार होते द्वारकापुरीमें गुरुनानकजी चलेगये वहांपर थोड़ेदिन रहकर फिर सिंहलद्वीप की सैर करके फिर सिंधदेशसे होते हुये अरबदेशमें जोकि मुसल्मानोंका तीर्थ मक्काहै उस मक्कामें गुरूजी पहुंचे मक्के के मंदिर की तरफ़ पांवको फैलाकर गुरूजी सोरहे पुजारी देखकर बड़े नाराज़ हुये और इनसे कहा पांवको दूसरी तरफ़करो इन्होंने कहा हम बहुतही थके हैं आप हमारे पांवको उठाकर फेर दीजिये पुजारी पांव को उठाकर जब कि फेरनेलगा तब जिस तरफ़ वह गुरूजीके पांवको घुमावै उधरही मक्काभी घूमजावै

पुजारी लोगोंने बाबा नानककी सिद्धी को देखकर गुरूजीके पांवपर गिरे और वह जानगये यह कोई औलिया फ़क़ीर हैं गुरूजीने उनको भी सच्चे मार्गका उपदेशकिया फिर वहांसे मदीना को गुरूजी चलेगये मदीनामें उपदेशोंको करके फिर गुरूनानकजी ईरान देशमें चलेगये वहांपर भी इनके उपदेशों को सुनकर लोग बड़े प्रसन्न हुये फिर फ़ारस और रूम में होते बुग़दादमें जा पहुंचे वहांका ख़लीफ़ा पेशवाई आकर गुरूजीको लेगया ख़लीफ़ा गुरूजीके उपदेशों को सुन मोहित होगया कुछ कालतक ख़लीफ़ाने गुरूजीको रक्खा और गुरूजीकी बड़ी ख़ातिरकी और लंबा कुरता ख़लीफ़ाने गुरूजीको दिया जिसपर कि क़ुरानकी आयतें सूतसे निकाली हुई थीं और बहुत सा द्रव्य भी देचुका परन्तु गुरूजीने उस द्रव्यको नहीं लिया फिर रूम ईरान होते थोड़े दिनोंमें गुरूजी बुख़ारामें आपहुंचे वहां पर मरदाना की मृत्यु होगई यह मरदाना जन्मका मिरासी गायनकरनेवाला था गुरूनानकजी जिन भजनों को रागोंमें बनातेथे मरदाना उनको रागों में गायन करके सुनाता था छोटी

उमरसे मरदाना गुरूजीके साथही रहताथा इसकी गुरूजीपर बड़ी श्रद्धाथी अगरचे मरदाना ज्ञाति का मुसल्मान था तथापि मुसल्मानी मत को वह नहीं मानताथा अपने को हिंदूही मानताथा फिर बुखारा से चलकर काबुल खंधार होते फिर पंजाब में करतारपुर में आगये गुरू नानक जी ऐसे प्रतापी थे जिन्होंने बड़े २ कठिन देशों में जाकर और महान् जंगली लोगों को भी धर्म्म के रास्ता पर लगायाथा और मुसल्मानों के चित्तों में जो कि हिंदुओं की तरफ़ से घृणाथी उसको दूर कियाथा अर्थात् एकही निराकार निरवह व अकाल पुरुष का उपदेश करके उनको सूधे रास्ता पर लगायाथा और जिस काल में गुरू नानकजी हुये थे उस काल में मुसल्मानों ने हिंदुवों पर जुल्मकरने भी छोड़ दिये थे अब गुरू नानकजी करतारपुर मेंही रहने लग गये उसी जगह में गुरू नानकजीने एक अतिथिशाला बनवाई और उसमें लंगरको जारी करादिया जो कोईअतिथि वहांपर आवै उसकी अन्न जलादिकों करके खूब सेवा होवै गुरू नानकजी सबको भक्तिकाही उपदेश करते थे

क्योंकि भक्ति में सर्व पुरुषों का अधिकार है गुरू नानकजीने पंजाबदेशको सुधार दिया ग्राम २ में धर्म्मशाला बनगये और उनमें अतिथियों के सत्कार होने लगे और जगह २ में सत्संग और कथा वार्त्ता होने लगी जैसी चाल कि गुरूजीने चलाईहै वैसी अभीतक चली आती है संवत् १५६० में गुरू नानकजी की माता का स्वर्गवासहुवा और बीस २० दिन पीछे गुरूजीके पिताका स्वर्गवासहुवा और संवत् १५९६ में ६९ वर्ष और दस १० महीना की आयुको भोग गुरू अंगदजी को गुरुआई देकर गुरू नानकजी भी इस अनित्य संसारका परित्याग करके ब्रह्ममें लीन होगये ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामीपरमानंदसमाख्याधरेणपिशावरनगरनिवासिनाअनिसंज्ञकेनकृतंगुरूनानकजीजीवनचरित्रंसमाप्तम् १० ॥

## अब श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुजीकेजी-वनचरित्रको संक्षेपसे लिखतेहैं ॥

बंगाल देश में गंगाजीके किनारेपर नवद्वीप नामकरके एकप्राचीन प्रसिद्ध नगर है उसनगर में एकजगन्नाथनाम करके ब्राह्मणों में उत्तमब्राह्मण रहताथा उसके घर में सन् १४८५ ई० में फाल्गुन मासकी पूर्णिमा को संध्या के समय में याने निशारंभ काल में श्री गौरांग महाप्रभुका जन्महुआ तिसी जगन्नाथ मिश्र के घरमें एक नीमका वृक्षथा उसी नीमकेवृक्षके तले इनका जन्महुआ है इस वास्ते इनका दूसरानाम निमाई इनकी माता ने रक्खाथा और जिसकाल में इनके पिता ने इनका यज्ञोपवीत कराया था उसकाल में इनका एक और गौरहरि नामभी धरागयाथा और भक्तलोगों ने इनका नाम गौरांग और गौर भी धराथा फिर जब कि यह कृष्ण की उपासना करनेलगे तब उपासक लोगों ने इनका नाम श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु रक्खा इसी नाम से अपने उपासकों में यह प्रसिद्धभी हैं इनकेउ-

पासक लोग कहते हैं द्वापरके अन्तमें जबकि कृष्ण जी ने अवतार लेकर गोपियों के साथ कल्लोल कीथी और भोग भोगे थे उन भोगों के भोगने में कुछ कसर रहगईथी अर्थात् पूर्णरीति से उसकालमें भोग नहीं भोगेगये थे उन शेष भोगोंके भोगनेके लिये श्री कृष्णभगवान् ने नवद्वीप में जगन्नाथ मिश्रके घर में अवतार लेकर श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु नामको रखाया और उन भोगों की अवधि करके याने समाप्ति करके फिर अपने गोलोकमें चलेगये अब गौरांगजीके कर्त्तव्य को दिखातेहैं गौरांगजी के जन्म लेनेके समय इनके पिता जगन्नाथ ने बहुतसा दान पुण्य भी किया और जगन्नाथ के मन में बड़ा उत्साह उत्पन्न हुआ क्योंकि पुत्र के जन्म के समान संसारियों के लिये दूसरा कोईभी सुख नहीं है और इनकी माताको भी बड़ा हर्ष उत्पन्नहुआ इनकी जन्मकुण्डली में ग्रह भी अच्छे पड़े थे॥ और जब कि बचपन में यह रुदन करने लगते थे तब हरिबोल २ कहने से यह चुपकरते थे और किसी उपाय से भी चुपनहीं करते थे जब कि यह छःसातबरसके हुये तब इनका नाचने में अर्थात्

नृत्यकारीमें इनका मन बहुतही लगता था इसलिये नृत्यकारी यह बहुतही अच्छी तरह से करते थे और गानविद्या में भी इनका बाल्यावस्था सेही बड़ा प्रेमथा इसलिये गानभी बहुतही अच्छा करते थे फिर जिस-कालमें यह नाचते और गानभी करतेथे तिसकालमें इनके नेत्रोंसे प्रेमके आंसुओंकी धारा चलतीथी और वहधारा किसीप्रकार से भी रुक नहीं सक्तीथी और बाल्यावस्थामें ही कभी २ कोई एक सिद्धी भी लोगोंको दिखलादेते थे ऐसे लोग कहते हैं और गौरांगजी की माताका नाम शुचि था बाल्यावस्था में इनपर बहुत सी आपत्तियें भी आईथीं परन्तु उन सबसे यह हमे-शह बचतेही रहे एकबार इनको सांपने पकड़लिया था परन्तु थोड़ी सी देर के पीछे आपसे आपही सांपने इनकोछोड़ भी दिया एक दिन भूषणोंके लोभसे चोर इनको उठाकर लेगया और दूर लेजाकर फिर इनको छोड़कर आप कहीं को चलाभी गया बाल्यावस्था में यह लिखते पढ़ते कुछभी नहीं थे किन्तु गाने और नाचने मेंही इनका प्रेम था और बंग देश में इन के जन्म से पूर्व वैष्णवों की अर्थात् विष्णुके उपासकों

की संख्या बहुतही कम थी इन्हीं के प्रताप से जिस-
प्रकार बंग देश में वैष्णवोंकी संख्या बढ़ीथी सो आगे
दिखलावेंगे॥ और जगन्नाथ के बड़े पुत्रका नाम
विश्वरूपथा इसने सोलह बरस की अवस्था मेंही
सब शास्त्रों का अध्ययन करलियाथा और अद्वैताचा-
र्यजी से विश्वरूपने विद्या पढ़ीथी जगन्नाथ ने जिस
काल में विश्वरूप जीके विवाह की तैयारी की तब
तिसकाल में विश्वरूप के मन में विचार उठा स्त्रीही
बन्धन का हेतु है बन्धन में पड़ने से परलोक नहीं
सुधरेगा इसलिये यहां से भागजानाही अच्छा है
ऐसा विचार करके विश्वरूप ने लोकनाथ अपनेमित्र
से कहा हम विवाह को नहीं करेंगे विवाह करने से
बन्धायमान होजायेंगे क्योंकि स्त्रीही बन्धन का हेतु
है इसलिये हम यहां से भागकर संन्यास को धारण
कर के संसार में विचरेंगे लोकनाथ आयु में कुछ
इन से बड़ाथा उसने कहा मैं भी आपके साथहीभाग
चलूंगा दोनों ने आपस में पक्की सलाह कर सङ्केत
करादिया जब कि थोड़ी सी रात्रि बाकीरही तब अमु-
क स्थान में दोनों इकट्ठे होकर भागजायेंगे आख़िर

उन दोनों ने ऐसेही किया जब कि एक प्रहर रात्रि बाकीरही तब दोनों उस संकेत स्थानपर इकट्ठेहो-कर चलेगये और गंगा के पार जाकर एकपुरी संप्र-दाय के संन्यासी से दोनों ने संन्यास को धारणकर-लिया थोड़े दिनही दोनों गुरू के पास रहे फिरवहां से दक्षिण की तरफ दोनोंने चल दिया कहते हैं कि पूना के समीप पाँडरपुर में जाकर दोनों अन्तर्द्धान होगये फिर इनका पता किसी से भी कुछ न मिला॥

अब निमाई का हाल सुनिये॥ जिस कालमें निमाई की उमर बारहवर्षकी हुई और इनकी माता शचीकी उमर पचपन वर्षकी हुई तब तिसकाल में निमाईके पिताका शरीर पातहोगया जब कि शची भर्त्ताके क्रिया कर्मसे छुट्टीपागई तब एक दिन अपने लड़के निमाईको विद्या उपार्जन करानेके लिये गङ्गा-दास पण्डितके पास लेगई और निमाईको पण्डितजीके प्रति सौंपकरके शचीजीनेकहा अब आपहीइसके बड़ेहैं इसको सिखाइये पढ़ाइये और अपनापुत्र जानकर इस की पालनाको करिये गङ्गादास पण्डितने शचीसे कहा जहांतक होसकेगा मैं इसके पढ़ानेमें यत्नको करूंगा।

शचीतो अपने घरको चलीआई और निमाई वहांपर विद्याको पढ़नेलगे थोड़ेही कालमें निमाई पूर्ण पंडित होगया उस पाठशाला में ऐसालड़का कोई नहीं था जो निमाई से शास्त्रार्थ करसकै क्योंकि निमाई षट्-शास्त्रोंमें पूर्ण विद्वान् होगये थे जब कि शचीने देखा कि निमाई पण्डित होगये हैं और विवाह करने के योग्यभी होगये हैं तब लक्ष्मीनामवाली वल्लभाचार्य्य की कन्यासे निमाईका विवाहकरादिया विवाहहोजाने पर कुछकाल घरमें रहकर फिर निमाई पूर्व्व दिशाको चलेगये वहांके लोगोंने इनकी विद्याको देखकर इन से बड़ाप्रेमकिया वहांपर एक तनयमिश्र नाम करके पण्डित रहताथा वह एकदिन इनके पासआया और इनको दण्डवत् प्रणाम करके कहनेलगा मेरेको आज रात्रिमें स्वप्नआया है उस स्वप्नमें एक देवताने मेरेसे कहाहै कि गौराङ्गजी पूर्णब्रह्महैं सो आप पूर्णब्रह्मरूप हैं फिर सब लोगोंके बीचमें कहा मैं आपको सनातन ब्रह्मरूप जानकर अपने उद्धारके लिये आपके पास आयाहूं अब आप मेरेको संसार से तरनेका तरीका बताइये उस पण्डित के प्रति निमाई ने कहा मैं तो

जीव हूं जीवमें ईश्वर वुद्धिकरने से पापहोताहै इस-
लिये ऐसामतकहना और तुम्हारे कल्याणके लिये हम
तुमको कृष्णके मन्त्रका उपदेश करदेते हैं ऐसेकहकर
निमाई ने उसको कृष्णके मन्त्रका उपदेशकरदिया
और यहभी कहा तुम काशी में जाकर निवासकरो
वहांपर तुमको हमारादर्शन होगा॥ निमाईकी वार्ता
को सुनकर और निमाई से कृष्णका मन्त्रलेकर वह
काशीको चलागया और निमाई कुछकाल तक वहां
पर रहे और लोगोंसे भेंट पूजा लेकर फिर अपने घर
को चलेआये इधर इनकी स्त्रीको सर्पने काटखाया
और वह उसी विषसे मरगई निमाई को कुछ क्षण-
मात्रही स्त्रीकाशोक हुआ अधिक नहींहुआ क्योंकि
विचारवान् थे अब नवद्वीप में निमाई अध्यापक बन-
कर विद्यार्थियोंको पढ़ाने लगे एकदिन निमाई नगर
में भ्रमणकरतेहुये श्रीवासके मकान के आगे से जा
निकले श्रीवास ने कहा तुम इतने बड़े पण्डितहोकर
भगवत् श्री कृष्णजीका स्मरणनहीं करतेहो निमाई ने
कहा मैं बालकहूं जब कि कुछ और बड़ा होजाऊंगा
तब मैं वैष्णव बनकर कृष्णका स्मरण करूंगा और

ऐसा स्मरण करूंगा जो ब्रह्मा विष्णु आदि देवताभी आकर मेरे द्वारपर खड़े हुआ करेंगे तब श्रीवासजीने कहा तुम किसी देवता और ब्राह्मण को नहीं मानते हो निमाई ने कहा सोहम् वह जो कि देवता और ब्राह्मण हैं सो मेराही रूप हैं निमाई की वार्त्ता को सुनकर श्रीवासजी ऊपर से तो हँसे परन्तु भीतर से दुःखी हुये क्योंकि उनके मन में वैष्णवों की संप्रदा-य को बढ़ाने का संकल्प था फिर दूसरा विवाह नि-माई का सनातन मिश्रकीकन्या विष्णुप्रिया से हुआ विवाह होने के कुछ काल पीछे माता की आज्ञा को लेकर निमाई गया जी में गये वहांपर पितरोंकीगया को करके उसी स्थान में निमाईकी मुलाकात ईश्वर-पुरीसे हुई तब निमाई ने ईश्वरपुरी जीसे कहा हम को मन्त्र दीजिये ईश्वरपुरी ने दशार्णव विद्या का मन्त्र निमाई के प्रति उपदेश किया और ईश्वरपुरी को निमाई ने अपना गुरू बनाया गयाजी में गदाधर जी का प्राचीन मन्दिर है जिस काल में निमाई ने जाकर गदाधरजी के मन्दिरमें चरणपादुकाका दर्शन किया उसीकाल में निमाई की भक्ति श्रीकृष्णचन्द्र

जी में होगई अर्थात् कृष्णजी में उनका अति स्नेह होगया और निमाई के मन में ऐसा प्रेम उठा जो मारे प्रेमके रुदन करने लगे और पुकार २ कर के ऐसा कहने लगे हे कृष्ण ! तुम कहां चलेगये हो हे कृष्ण ! तुमही तो मेरे प्राण हो मैं तुम्हारे बिना बड़ा व्याकुलहोरहाहूं तुम्हारा वियोग मेरेसे नहीं सहाजाता है आप जल्दी मेरे को दर्शन दीजिये इसप्रकार निमाई बार २ विलाप को करते थे जो कि उन के संग में थे वह उनको वहुत समझाते थे परन्तु वहकिसी की एक भी नहीं मानते थे आखिरकार निमाई गया जी से वृन्दावन को जाने के लिये तैयार होगये जब कि निमाई गया से वृन्दावन की तरफ चल पड़े तब लोगोंने इनको पकड़ लिया और बहुतसा समझाबुझा कर इनको नवद्वीप में लोग अपने साथ फेरकर ले गये ॥ जिस दिन से निमाई ने गया में ईश्वरपुरी से मन्त्र को लिया उसी दिन से इनका स्वभाव वदल गया अर्थात इनके मनकी चंचलता सब जातीरही और कृष्णजी के प्रेम के इनके नेत्रों से जलकी धारा वहने लगी नवद्वीप के लोग सब इनके स्वभावको

देखकर बड़े आश्चर्य को प्राप्तहुये कहां वह इतनी बड़ी चञ्चलता और कहां अब ऐसी शान्तिवृत्ति अब निमाई कृष्णजी के प्रेम में ऐसे मग्न होगये जो कि कृष्णजी की कथा को कहते २ गिर पड़ते थे और मूर्च्छित होजाते थे जब कि लोग इनको सचेत करते थे तब फिर इनके नेत्रों से प्रेम की धारा बह-तीथी इतना जल इनके नेत्रों से गिरताथा जिसका थाँभना कठिन होजाता था निमाई की माता शची ने जब कि निमाईका ऐसा हाल देखा तब वह चिंता करके व्याकुल होगई क्योंकि तिसको निमाई के इस हालका कोईभी कारण जान नहीं पड़ताथा और निमाईकी स्त्रीभी निमाई के हालको देखकर बड़ी व्याकुलहोगई निमाईकी माता शची देवी ने निमाई से रोने का कारण पूछा निमाई ने अपनी माता से कहा मैंने श्यामवर्णवाले श्रीकृष्णचन्द्रजी का रूप स्वप्न में देखा है वह जो श्रीकृष्णचन्द्रजी का सुन्दर रूपहै सो मेरे मनको हर कर लेगया है और अब मैं जाग्रतमें तिस रूपको नहीं देखता हूं इसीसे मैं रुदन करताहूं मैं चाहता हूं कि वह कृष्ण जी जाग्रत् में

भी मेरे को फिर अपना दर्शन देवैं शची माता ने कहा वह कृष्ण कैसेहैं तब निमाई अपनी माता और अपनी स्त्री के प्रति कृष्णजी की कथाको सुनानेलगे निमाई को कृष्णकी कथोंके करते करतेही रात्रि व्यतीत होगई सवेरे फुलवाड़ी में श्रीमान् पण्डितजी जब कि फूल तोड़ने को गये तब श्रीवास ने उनसे पूंछा क्या निमाई वैष्णव होगये हैं हमने ऐसासुना है क्या यह बात सच्चहै यदि सच्चहै तबतो बड़ाही अच्छाहुआ भला वहकैसे वैष्णव होगये हैं हमसे इस वृत्तान्तको तो तुमकहो श्रीमान् पण्डितने निमाई के वैष्णव हो जानेका सब वृत्तान्त श्रीवाससे कह सुनाया निमाई के वैष्णव होजाने के वृत्तान्त को सुनकर श्रीवास अपने मनमें बड़े प्रसन्नहुये कि अब वङ्गदेश में वैष्णवोंकी संप्रदाय बढ़ेगी क्योंकि एक महान्पण्डितके वैष्णव होजाने मे अब वह लाखोंको वैष्णव बनायेगा जब कि सबेराहुआ तब निमाई जहां तहां घूमते फिरते कृष्ण कृष्णकरके पुकारते हैं और कभी नाचने लगते हैं और कभी गान करने लगते हैं और प्रेमसे आँसुओं की धाराको बहाते हैं बस अब निमाई का

प्रेमकृष्ण में दृढ़होगया है क्योंकि अब निमाई जिधर को जातेहैं उधरही हा कृष्ण ! हा कृष्ण ! करके पुकारते हैं और आँसुओंको बहाते हैं और सब पढ़ना पढ़ाना निमाई ने छोड़दिया और रात्रिदिन कृष्ण के वियोग सेही व्याकुल होकर जहांतहां घूमते फिरतेहैं निमाई ने अब अपने मनमें दृढ़ विश्वास करलिया. जो कि जीवोंकी कल्याणका हेतु कृष्णहीकी भक्तिहै इसीसे निमाई जहांतहां कृष्ण कृष्णही करते फिरते हैं एकदिन निमाई के चारोंतरफ आकर शिष्यगण वैठगये तब निमाई बड़े प्रेमसे कृष्णके गीतोंको गान करनेलगे और शिष्योंसे भी कहा तुमभी ताली बजाकर याने तालको देकर मधुरस्वर से कृष्णजीके गीतों को गानकरो ॥ शिष्यगणभी उनके साथ तालियोंको बजाकर मधुरस्वर से कृष्णके गीतोंको गान करनेलगे निमाई कृष्णजी के प्रेममें उनमत्त होरहे हैं संसार उनको नहीं दिखाता है निमाईकी ऐसी अद्भुतलीला को देखकर सब लोगोंके मनमें कृष्णकी भक्ति उत्पन्न होगई निमाई के प्रतापसे अब बङ्गदेश में कृष्णधर्म की उन्नति होनेलगी इससे पहले बङ्गदेश में कृष्ण

की उपासना बहुतही कमथी किन्तु सब लोग शाक्तथे कोई एक हज़ारों लाखोंमें राम कृष्णका भक्तथा एक वहांपर श्री अद्वैताचार्य्य कृष्णके भक्तरहते थे॥ एक दिन वह गीताके श्लोकोंके अर्थको विचारते थे एक श्लोकका अर्थ उनसे नहींलगा तब वह उसका विचार करते करते सोगये तब स्वप्नमें एक महात्माने उनको गीताके श्लोकका अर्थ वताकर कहा अव तुम चिंता मतकरो जल्दउठो क्योंकि अव बङ्गदेश में श्रीकृष्ण भगवान् प्रकट होगये हैं श्री अद्वैताचार्य्य ने सवेरे अपनी सभामें रात्रिवाले स्वप्नको कह सुनाया और यहभी कहा यदि निमाई ही श्रीकृष्णका अवतार हैं तव मेरे घरमें आकर कृष्णका कीर्त्तन करेंगे॥क्योंकि मैं उनका भक्तहूं कुछदिन पीछे एकदिन निमाई श्री-अद्वैताचार्य्य के घरमें जाकर अकस्मातही कीर्त्तन करने लगे॥

वरदवान ज़िलेके एक नित्यानन्द नाम करके संन्यासी श्रीकृष्णजीके दर्शनकी आकांक्षा करके वृन्दावन में विचरतेथे और वृन्दावनकी कुञ्जोंमें कृष्ण जीको खोजते फिरते थे ईश्वरपुरीने इनसे पूछा तुम

किसको खोजते फिरतेहो उसने कहा मैं कृष्णजीको खोजेता फिरताहूं ईश्वरपुरी ने उनसे कहा जिसकी खोजमें तुम फिरतेहो उसनेतो बङ्गदेशके नवद्वीपनगर में अवतारलियाहै और इदानींकालमें वह निमाई नाम करके वहांपर प्रसिद्ध हैं तुमको यदि कृष्णके दर्शन की इच्छाहै तब वहांपर जाकर उनका दर्शन करो॥ नित्यानन्द संन्यासी उनकी बातोंको सुनकर नवद्वीप की तरफचला और थोड़ेही दिनोंमें नवद्वीपमें पहुंच-कर निमाई का दर्शन करके बड़ा प्रसन्नहुआ और निमाईभी नित्यानन्दको मिलकर बड़े प्रसन्नहुवे और बड़े प्रेमसे मिले अब दोनों मिलकर कृष्ण के गुणों को नित्य गानकरनेलगे और लोगोंके दिलोंमें कृष्ण की भक्तिको उत्पन्न करनेलगे फिर एक दिन निमाई ने श्रीवास के छोटे भाई से कहा तुम शान्ति पुर में जाकर अद्वैताचार्य्य से कहो जिसकी तुम उपासना को करते हो वही भूमिपर निमाई नाम करके प्रकट हुये हैं॥ श्रीवास के छोटे भाई का नाम श्रीरामथा उसने जाकर के जिसकाल में अद्वैताचार्य से कहा जिसकी तुम उपासना करते हो वह नवद्वीप की

भूमिपर प्रकटहुये हैं इसवार्ता को सुनकर अद्वैता-
चार्य्य अपनी स्त्रीके सहित वहांसे चलपड़े और अपने
मनमें उन्हों ने ऐसा सङ्कल्प करलिया हम नवद्वीपमें
जाकर दूसरे मकान में छिप रहैंगे यदि वह ईश्वर का
अवतार होवेंगे तब वह आप आकर हमको बुला-
कर लेजायेंगे उन्हों ने ऐसेही किया याने नवद्वीप
में जाकर एकमकान में जाकर छिप रहे निमाई उन-
के मनकी वार्त्ता को जानकर आप जाकर उनको
बुला लाये ॥ तब उनका निमाई के अवतारपर पूरा
विश्वास होगया अब निमाई बंगाल के सब नगरोंमें
घूम २ कर के लोगों को कृष्णकी भक्ति का उपदेश
कर के लोगों को वैष्णव बनाने लगे और बहुतलोग
कृष्णके उपासक बनगये प्रथम तो बहुतकाल तक
बङ्गाल देश में रहे फिर उड़ीसा में जाकर जगन्नाथ
की भक्तिको इन्हों ने फैलाया और अन्तमें उड़ीसामें
ही गुप्त होगये चौबीस वर्षकी उमर में इन्हों ने घर
का त्याग करदिया था और अठारह वर्षतक इन्हों
ने कृष्णकी भक्तिको बंगाल देश में फैलाया पश्चात्
लुप्तहुये कुल ४२ वर्ष तक जीतेरहे सन् १४८५ में

जन्मे और सन् १५२७ में गायवहुये इनका मत बंगाल में अबभी वहुत है इन के मतके साधुभी संन्यासी कहलातेहैं और स्त्रियें संन्यासिनी होती हैं ॥

इतिश्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासाशिष्येणपरमानन्दसमाख्याथरेणपिशावरनगरनिवासिनामध्यदेशीयभाषायांकृतं श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुजीवनचरित्रं समाप्तम् ११ ॥

## अथ यवनदेशस्थमहात्माओंका जीवनचरित्र लिखते हैं ॥

यवनों में भी वेदांतीहुये हैं जिनमें कि दया क्षमा और शान्ति आदिक गुण थे और एक आत्मकोही सब में देखते थे और अपने विश्वासपर दृढ़ थे जैसे कि मनसूर ने शूलीपर चढ़ने को क़बूल किया परंतु अनलहक़ याने मैं खुदा हूं इस विश्वास को न छोड़ा यूनान देश में प्रथम सब हिन्दूजाति केही लोग रहते थे काल के हेर फेर से फिर वहांपर औरही क़िस्म के मत चलगये वह लोग मुसल्मानी मत के नहीं थे क्योंकि मुसल्मानी मत बहुतही पीछे चला है उस यूनान देश में भी प्रथम बड़ेर वेदान्तीहुये हैं जो कि उस देशमें हकीमकरके बोलेजातेथे जिनको हुये अरसा तेईससौ और चौबिससौ हुआ है सन् ई० से अढ़ाई सौ बरस पहिले सिकन्दर बादशाह उस देश में हुआथा उसके ज़माने में और उससे पहिले जो कि यूनान देश में वेदान्ती हुये हैं उनके जीवन चरित्र को भी हम इस ग्रन्थ में लिखेंगे प्रथम इस देश में लाहौर शहर में जो कि बुल्लाशाह वेदान्ती हुये हैं उनके जीवन चरित्रको हम लिखते हैं ॥

# बुलाशाहका जीवनचरित्र ॥

पंजाब देश के लाहौर नगर को सब लोगजान-ते हैं क्योंकि यह नगर प्राचीन काल से राजधानी कर के प्रसिद्ध है अरसा अढ़ाई या तीनसौ वर्ष का हुआ है लाहौर के पूर्व की तरफ तीनमीलपर जंगल में कुटी बनाकर मियांमीर नाम कर के एकप्रसिद्ध वेदान्ती फक़ीर रहतेथे अब उसी जगहमें सरकार अंगरेज़ीकी छावनी भी मियांमीर नाम करके बोली जातीहै याने मियांमीरकी छावनी ऐसे लोग कहतेहैं उसी मियांमीरके एक बुलाशाह नाम करके चेलेहुये हैं यह पहले बलख शहर के जो कि बुखारासे कुछ दूरपरहै वहांके हाकिमथे याने बलखके बादशाहथें एकदिन इनके मनमें विषय भोगोंकी तरफसे कुछ ग्लानि हुई तब इन्होंने अपने वज़ीरोंसे पूछा इसका-लमें कोई सोफी मतका फकीर भी कहीं है ॥ मियां मीरका नाम दूर दूरके देशोंमें भी मशहूर होगयाथा वज़ीरोंने कहा इसवक्त लाहौर शहरमें मियांमीरनाम करके एक महात्मा बड़ेभारी सोफी रहते हैं वज़ीरोंकी

इसवार्त्ताको सुनकर बलखके बादशाहने अपने लड़के को राजगद्दी पर बिठलादिया और सौ पचास आदमियोंको तथा अपने वज़ीरको और कुछ ख़र्चके लिये ख़ज़ानेको साथलेकर लाहौरकी तरफ़ चलदिया और मंज़िलोंको काटताहुआ दोमहीना गुज़रजाने पर वह लाहौर में पहुँचा वहांपर उसने लोगोंसे सियांमीर के रहनेकी जगहको पूंछा लोगोंने जंगल में उसको बताया वह उसी जंगल में जाय पहुँचा जिसमें कि वह कुटी बनाकर रहते थे जातेही उनकी कुटीके बाहर हाज़िरहोगया आगे सियांमीर का यह क़ायदा था आपतो कुटीके अन्दर रहतेथे बाहर कुटीके और फ़क़ीर लोग पड़ेरहते थे जब कोई उनके दर्शनको आता तब पहले फ़क़ीर लोग अन्दर इत्तिला करते जब कि अन्दर से मीर साहिब का हुक्महोता तब वह भीतरजाने पाताथा इसहाल से वाक़िफ़ होकर बलख के बादशाहने भी फ़क़ीरों से अपने आनेकी इत्तिला कराई फ़क़ीरों ने भीतर जाकर मीर साहिब से कहा बलख के बादशाह आपके दीदारके लिये आये हैं मीर साहिब ने पूंछा कि वह किसहालतमें हैं फ़-

क़ीरों ने कहा सौ पचास आदमी और बहुतसा सामान घोड़े वग़ैरह भी उन के साथ हैं याने वह अपनेबादशाही ठाठ से आये हैं मीर साहिब ने फ़क़ीरोंसे कहा उनसे जाकरके तुम कह देवो अभी तुमको मीर साहिब का दीदार नहीं होगा फ़क़ीरों ने जाकरके बाहर उस से कह दिया मीर साहिब कहते हैं अभी तुम को दीदार नहीं होगा फ़क़ीरों की बात को सुनकर कुछदूर चलागया और इसने अपने वज़ीर से कहा तुमसब सामान और आदमियों को लेकर अपने वतन को चलेजाओ हम अब नहीं जायेंगे वज़ीर ने कहा यह कैसे होसक्ता है जो आप को छोड़कर मैं चलाजाऊं वहां शाहज़ादा जो पूंछेगा तब क्या जबाब दूंगा बादशाह ने कहा मैं फिर घरको वापस जाने के लिये यहां पर नहीं आया हूं मैं तो खुदा के साथ मिलने के लिये आया हूं अगर तुम हमाराकहना नहीं मानते हो तब मैं सब सामान को लुटवा देऊंगा वज़ीर ने कहा जैसी आप की मरज़ी हो वैसेही करिये बादशाह ने हुक्म दिया कि इस सामानको लूट लीजिये सब नौकरोंने लूट लिया सबको कहा अपने २

अपने घरों को चलेजावो सब चलेगये वज़ीर भी लाचार होकर चलागया बादशाह ने एक चद्दर को अपने ऊपर रखलिया और सबकुछलुटवा दिया अब फिर बादशाह मीरसाहिब के द्वारपर आये और फ़क़ीरोंसे कहा मीर साहिबको इत्तला दीजिये फ़क़ीरोंने भीतर जाकरके मीरसाहिबसे कहा बल्ख़के शाहज़ादा आपके दीदारको आये हैं उन्होंने पूंछा वह किस हालतमें हैं फ़क़ीरों ने कहा उन्हों ने सब कुछ लुटा दिया है केवल एक चद्दर को अपने ऊपर ओढ़ेहुये हैं मीर साहिबने फ़क़ीरों से कहा उससे जाकरके तुमकह देवो अभी तुमको दीदार नहीं होगा तुम यहांसेबारह कोसपर रावीके किनारे पर एक जङ्गलमें एक फ़क़ीर रहताहै उसके पास जाकर बारहबरस तपस्याको करो जब कि बारहबरस बीतजायें तब यहांपर हमारे पास आवो तब तुम्हें दीदार होगा फ़क़ीरोंने जाकरके वैसे ही कह दिया जैसे कि मीर साहिब ने उन से कहाथा बल्ख़का बादशाह उनकी वार्ता को सुनकर रावी के किनारे पर जो कि जंगल था उस जंगल में जो कि फ़क़ीर रहता था उसके पास चलागया जब

उस फ़क़ीर ने इसको देखा तब इस से कहा तुम बलख के बादशाहहो इसने कहा आपने हमको क्योंकर पहिंचाना उसने कहा मैं एक दिन मीर साहिब के पास गयाथा उन्हों ने हमसे कहाथा कि फलाने रोज़ बलख़ के बादशाह तुम्हारे पास आवैंगे तुम उनको अभ्यास की युक्ति बताना जिसके करनेसे उनका दिल साफ़ होजाये सो आज वही दिन है जिस दिनको कि उन्होंने बतायाथा सो उनकाकथन मिथ्या नहीं होता है मेरे को यक़ीन है कि आपही बलखके बादशाह हैं इन्हों ने कहा हां मैंहीं हूं और मेरे कोही मीर साहिब ने आप के पास भेजा है सो जो अब मेरे को करना वाजिब है सो बताइये उस फ़क़ीर ने बादशाह को योगाभ्यास की युक्ति बतादीं अब उसजङ्गल में बादशाह अभ्यास को करने लगे और बन के कन्दमूल खानेलगे जब कि बारह बरस बीतगये तब बादशाहकाशरीर सूखगया और चेहरेका रंगभीबदल गया फ़क़ीरने बादशाहसे कहा अब तुम मीरसाहिब के पास जाओ अबतुमको उनकादीदार होगा फ़िर बादशाह आकर मीरसाहिब की कुटीपर

हाज़िर हुये फ़क़ीरों ने मीरसाहिब से उनके आने की इत्तिला की मीरसाहिब ने पूछा अब उनका कैसाहाल देख पड़ताहै फ़क़ीरों ने कहा उनका चेहरातो ऐसासूख गयाहै कि अब वह पहिंचानेही नहीं जाते हैं और शिरके बाल उनके बड़े २ बढ़गये हैं नाखून बढ़गये हैं सब बदन में माटी लगी है इसतरह का उनका हालहै मीर साहिबने कहा उनको भीतर बुलावो फ़क़ीर आकर तिसको मीर साहिब के पास लेगये उसने मीर साहिब को दण्डवत्की और उनके हुकुमको पाकर- बैठगया मीरसाहिब ने उसकाल में उनको अद्वैत आत्मा का उपदेश किया और कहा अब तुम्हारानाम आजसे बुलाशाह हुआ फिर मीरसाहिब ने उस से कहा और तो जोकुछ कि हमको तुमसे करानाथा सोतो करा लिया मगर एककाम अभी तुमसेकराना बाकी है वह यह है इन दो झोलियों को लेकर तुम सबेरे नित्यही लाहौर शहर में टुकड़े मांगने को जायाकरो औ शामकोलेकर यहां कुटीपर चले आयाकरो मगर एक कामकरना एक झोली में हिंदुओंके घरोंके टुकड़ों को डालना और दूसरी झोलीमें मुसल्मानों के घरोंके

टुकड़ों को डालना दोनोंको जुदा जुदाही रखना मि-
लने न देना अब बुलाशाह दोनों झोलियोंको लेकर
नित्यही नगर में टुकड़े मांगने के लिये जानेलगे
और शामको कुटीपर पहुँच जाते दोनों झोलियों में
जुदा जुदा टुकड़े मांगकरलाते मीर साहिब कुछ आप
खाते और कुछ फ़क़ीरों को खिलाते कुछ दिन तो बु-
लाशाह इस तरह करते रहे एक दिन उनको टुकड़े
जुदा जुदारखना भूलगये किन्तु एकही झोलीमें वह
सब टुकड़ों को डालगये जब सन्ध्या के समय कुटी
के समीप पहुँचे तब उनको टुकड़ों के जुदा करने
वाली बात यादआई वह कुटीके बाहर बैठकर रोने
लगे मीर साहिबने फ़क़ीरों से पूंछा यह कौनरोता है
फ़क़ीरोंने कहा बुलाशाह रोताहै मीर साहिब ने कहा
उनको भीतरबुलावो फ़क़ीर बुलाशाह को भीतर बु-
लालेगये मीर साहिबने पूंछा आप क्योंरोतेहैं बुलाशाह
नेकहा हमसे आज टुकड़े सब एकही झोलीमें डालने
से मिलगये हैं मीर साहिब इस वार्त्ताको सुनकर बड़े
प्रसन्नहुये और बुलाशाहको अपनी छाती से लगाकर
कहने लगे बस आजसे लेकर तुम फिर टुकड़े मांगने

को मतजाना अबहम तुमको पिछलाहाल सब सुना-
तेहैं जिस लिये कि हमने तुमसे बहुतसी तितिक्षा
कराई है सो इसीदिनके लिये कराई थी सो अबसुनो
जब कि तुम अपने नौकरों को साथलेकर बादशाही
ठाठसे हमारे पास आयेथे तब तुम्हारे दिलमें बाद-
शाही की बोयथी उसके निकालनेके लिये हमने कहा
तुमको अभी दीदार नहीं होगा फिर जब कि तुम
सब कुछ लुटाकरके आयेथे तब तुम्हारा दिल विषय
भोगोंके भोगने से मैलाहोरहाथा जैसे मैले कपड़े पर
रङ्गनहीं चढ़ताहै तैसे मैले दिलमें भी उपदेश नहीं
लगता है तुम्हारे दिलको शुद्ध याने साफ़करने के
लिये हमने तुमको जंगल में भेजा वहांपर इबादत
करने से तुम्हारा दिल साफ़ होगया और भोगोंकी
वासना तुम्हारे दिलसे जातीरही जैसे धोयेहुये साफ़
कपड़े पर रंग बहुत जल्द और अच्छाआताहै तैसेही
साफ़ दिलमें भी उपदेशकिया हुआ ठीक २ जम
जाताहै इसलिये तुमसे इबादत कराकर तुमको हम-
ने उपदेशकिया फिर तुम्हारे दिलमें हिंदू मुसल्मान
का भेद बनाथा कि हिंदू जुदाहैं और मुसल्मान

जुदाहैं उसभेद के दूरकरने के लिये तुमसे हमने टु-
कड़े मंगाये सो वह भेदभी आज तुम्हारे दिलसे जाता
रहा हिंदूका आत्मा और मुसल्मान का आत्मा एकही
है केवल शरीरोंका और दिलोंकाही भेदहै आत्माका
भेद नहीं है आत्मा जीवमात्रमें एकही है तुम्हारे को
एकात्म दृष्टि होजानेके लिये हमने सवयत्न किया है
सो तुम्हारी अव एक आत्मदृष्टिहोगई है अव तुम
को कुछभी कर्त्तव्य वाकी नहीं है अव तुम अपने
आसन परही वैठकर आत्म चिन्तनको कियाकरो और
फ़क़ीर लोग रोटी-मांगलाया करैंगे तुम अपना आ-
नन्दसे खायाकरो कहींभी जानेआनेका कुछ कामनहीं
है वुलाशाह अव अपनेको कृतकृत्य मानकर वहांपर
रहने लगे महाशाह यह वुलाशाह वड़ेभारी वेदांती
और त्यागी हुयेहैं इनकी कविताको पञ्जाव में लोग
सव गान करते हैं पञ्जावमें हिंदूलोग इनकी कविता
को वहुतही प्रमाणिककरके मानतेहैं क्योंकि इनकी
कविता में पक्षपातकी वातकोई भी नहींहैं किंतु केवल
शुद्ध वेदान्त काही वर्णन है इन्हों ने अद्वैतमें सहर
फ़िये वनाई हैं उनमें से सहरफ़ीको हम लिखकर

अर्थके सहित दिखातेहैं उसीतरहकी औरभी जानलेना

सहरफी बुल्लाशाह ॥

अलद आपणे आपनू समझ पहलेकी वस्त है तेरडारूप प्यारे ॥ बाझ आपने आपदेसही कीतेरह्यों विच्च विसूरे देदुख भारे ॥ होरलख उपाय न सुखहै वै पुछ्वे खस्यानडे जगसारे ॥ सुखरूप चैतन अखण्डहै तूं बुल्लाशाह पुकारदे वेदसारे ॥ १ ॥

पहले तू अपने आपको जान किमैं क्या वस्तु हूं और मेरा क्यास्वरूप है अर्थात् मैं जड़हूं या चेतनहूं नित्यहूं या अनित्यहूं देहादिक इन्द्रियों से रहित हूं या कि देहादिक इन्द्रियों वालाहूं ऐसा विचार करके तुम प्रथम अपने-आपको जानो जो कि तुम्हारा असली स्वरूप है उसीकी तुम पहिंचानकरो ॥ क्योंकि अपने आत्माके स्वरूपके जानने विना तुम रात्रिदिन भारी २ दुःखोंके शूलोंमें पड़े रहतेहो ॥ और लाखों उपायों करकेभी नित्य सुखनहीं मिलता है विना आत्मज्ञानके यदि तू इसवार्त्ता को न मानै तब संसारके सम्पूर्ण बुद्धिमान् पुरुषों सेभी तू इसवार्त्ता को पूंछ करके देखले ॥ बुल्लाशाह कहते हैं चारोंवेद इस

वार्त्ता को पुकार पुकार करके पढ़े कहते हैं सुखरूप चैतन रूपभेद से रहित तूही है अर्थात् तुम्हाराही अपना आत्मा सुखरूप और चैतन्य स्वरूप है और अखण्डहै याने भेदसे रहित व्यापकभी है वेदही ऐसे कहतेहैं॥१॥महाशय यवनों मेंभी जो कि वेदांतीहुयेहैं उन्होंने भी वेदोंकोही ईश्वर कृत मानाहै क्योंकि पुरुष की कल्याणके साधन वेदोंसे हीसे उनकोभी मिले हैं कुरान और शराको तथा पैगंबरोंको वह नहीं मानतेथे क्योंकि कुरान और शराकी किताबों में इतरमतवालों को मारना काटना लूटना ऐसी२अधर्मकीहीबातें भरीहैं इसलिये यवन वेदांतीभी कुरानादिकोंको नहीं मानतेथे बुल्लाशाह एक दिन बाजार में जातेथे किसी शरईमु-सल्मान ने बुल्लाशाह से पूछा बुल्लाशाह तुम कौनहो बुल्लाशाह ने कहा मैं खुदा हूं शरावाले बुल्लाशाहको पकड़कर बादशाह के पास लेगये और बादशाह से कहा यह फ़क़ीर कुफ़र करता है कहता है मैं खुदा हूं बादशाह ने पूछा बुल्लाशाह तुम कौनहो बुल्लाशाह ने कहा मैं बन्दाहूं बादशाहने शरावालों से कहा यह तो कहता है मैं बन्दा हूं यह तो नहीं कहता मैं

खुदा हूं इसको छोड़ दे बुलाशाहको उन्हों ने छोड़ दिया फिर एक दिन बाज़ार में बुलाशाहसे पूछा तुम कौन हो कहा मैं खुदा हूं फिर पकड़कर बादशाहके पास लेगये बादशाह ने जब पूछा तब कहा मैं बन्दा हूं फिर छूटगये इसीतरह तीनचारदफ़ा जब कि हुआ तब शरावालों ने बादशाह से कहा बाज़ार में तो यह कहता है मैं खुदा हूं और यहांपर आकर कहता है मैं बंदाहूं बादशाह ने पूछा बुलाशाह यह ठीककहते हैं बुलाशाह ने कहा हां ठीक कहते हैं बादशाह ने कहा आप बाहर खुदा कैसे बनजाते हैं और यहांपर आकर फिर बन्दे कैसे होजाते हैं बुलाशाह ने कहा आपखुदा और बन्देके अर्थको सुनिये जोकिशराकीक़ैद में है वह बन्दा कहलाताहै क्योंकि अपनेको निमाज़ और रोज़ा के कर्त्तव्यवाला मानताहै और जो कि शरा की क़ैद में नहीं है वह खुदा है खुदमुख़्तार है जब किमैं बाज़ार में शराकी क़ैदसे रहित होकरके फिरता हूं तबतो मेरेखुदा होने में कोईभी शकनहीं है फिर जब मैं शरैइयों करके पकड़ाहुआ शराकी कैदमें हो-जाताहूं तब मैं बन्दा बनजाता हूं क्योंकि खुदमुख़-

तारी उस कालमें नहीं रहतीहै फिरजैसे खुदापर शरा का हुक्मनहीं है तैसेमेरे परभी नहीं इसलिये भी मैं खुदाहूं बादशाह ने कहा आपसच्च कहते हैं सलाम करके बादशाहने बुलाशाहको छोड़दिया ॥ फिर एकदिन बाज़ारमें बुलाशाहसे शरावालों ने पूछा आप कौनहैं बुलाशाह ने कहा मैं बादशाह हूं फिर शरावाले बुलाशाह को पकड़कर बादशाह के पास लेगये पहले तो यह खुदाई दावाकरता था अब बादशाही का दावाकरताहै कहता है मैं बादशाहहूं बादशाह ने पूछा बुलाशाह तुमकौनहो कहा मैं बादशाहहूं बादशाहने कहा बादशाहके पास ख़ज़ाना रहताहै सो तुम्हारे पास खज़ाना कहांहै बुलाशाह ने कहा जिस बादशाहका बहुतसा ख़र्चहोताहै वह ख़ज़ाना रखता है हमारा ख़र्च कुछभी नहीं हम क्यों ख़ज़ाना रक्खें॥ फिर बादशाहके पास फ़ौज रहती है बिना फ़ौजके तुमकैसे बादशाहहोसक्तेहो बुलाशाहने कहा जिसका दूसराकोई दुश्मनहोताहै वह फ़ौजको रखताहै हमारा तो कोईभी दुश्मन नहीं है हम क्यों फ़ौजको रक्खें हमारे बादशाह होने में क्याशकहै बादशाहने कहा

फिर इनको कभी भी कोई न पकड़े ॥ शरई लोग बहुतही बुरे होते हैं क्योंकि महात्मालोगों को हमेशाही यह सताते हैं इसदेशमें शरावालोंने बड़ी भारी हानि पहुंचाई है शरावालों ने लाखों मंदिरों को गिरादिया और लाखों हिन्दुओं को क़तल करवादिया परमेश्वरही इनको घोरनरक रूपी दण्डको देवैगा महाशय कभी भूल करके भी शरावालों की संगत नहीं करनी सोफियों की संगत करनी शरावालोंके जुलम को मैं आगे मनसूरके जीवन चरित्रमें दिखलाऊंगा॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानंदसमाख्याधरेणपिशावरनगरनिवासिनाबुलाशाहवेदांति जीवनचरित्रमध्यदेशीयभाषायांकृतंसमाप्तम्-१२ ॥

# अब मनसूरके जीवनचरित्रको लिखते हैं ॥

मुलतानके ज़िलामें एकबड़ा आलिम और फ़ाज़िल मनसूर नाम करके फ़क़ीर हुआ है मनसूर हिन्दुस्तान भरमें बड़े सोफी और मारफतमें याने वेदांतमें नशावाले मशहूर हुये हैं और यह चलते फिरते उठते बैठते खाते पीते हमेशामुखसे अनहलहक़याने मैं खुदाहूं ऐसाही कहते थे और अपनी खुदमस्ती मेंही मस्त रहतेथे अर्थात् अपने आत्माके आनन्द करकेही आनंदको प्राप्तथे विषय भोगोंसे जन्य आनन्द करके यह आनन्दवाले नहींथे इसीसे यह निर्भय भी थे किसी शरावाले का भयभी इनके मनमें नहीं था इसलिये बेधड़क मैं खुदाहूं ऐसाकहते थे क्योंकि शरीरादिकों में इनकी ममतानहीं थी किन्तु सर्वत्रही इनकी आत्मदृष्टि थी इसीतरहसे कहते इनको जबकि बहुतसा समय वितीत होगया तब एकदिन शरावालोंने मनसूरको बाज़ारमें पकड़ करके कहा आप शरासे बाहर कलमेंको मुखसे न निकालिये वरना

शराके मुताबिक आपको सज़ा दीजायेगी मनसूर ने शरावालों से कहा मैं शराकी कैद में नहीं हूं किन्तु शराकी कैदसे मैं बाहर हूं जो आदमी कि शराकी कैद मेंहो उसके लिये ऐसा कलमा मुखसे निकालना मना है मेरे लिये मना नहीं है इसीवास्ते मैं अनलहक्को कहताहूं मैं इसको कदापि नहीं छोडूंगा मनसूर की बातोंको न समझकर शरावालों ने मनसूर को पकड़ लिया और बादशाह के पास लेगये और बादशाह से कहा मनसूर मुसल्मान होकर मुंह से कुफ़के कलमा को निकालता है अर्थात् मैं खुदाहूं ऐसे कहता है पैग़म्बरोफ़र जोकि अपने को खुदा बतलाये उसको शराके रूहसे सज़ा देनीचाहिये बादशाहने भी मनसूरसे कहा तुम इस कलमाके कहने से बाज़ आजावो वरना तुमको सज़ा दीजायेगी मनसूर ने कहा मैं सच्च कहताहूं मैं झूठ कभी भी नहीं बोलताहूं सज़ा झूठ बोलनेवाले को दीजातीहै सत्यवादी को सज़ा नहीं दीजाती अगर आपका खुदा कोई मेरेसे जुदा है तब आप उसको बुलाकर पूछिये या वह मेरे सामने आकरके कहदे कि तुमसे मैं जुदाहूं तुम झूठ कहते हो

ऐसा तो तुमसे नहीं होसक्ता है फिर जब कि खुदाने अपने रूहपाक से आदमी के रूहको पैदा किया है तब फिर खुदाके रूहका और आदमी के रूह का फ़रक़ कहां होसक्ता है तुम्हारे कुरान में ही यह बात लिखी है तुम कुरानको नहीं मानतेहो तुमहीं झूठेहो और सब शराबाले भी झूठेहैं यदि तुम अन्याय करने कोभी तैयार होजावो तब भी मैं अपने कलमे को नहीं छोड़ूंगा क्योंकि जब तुम झूठे होकर अपने झूठ को नहीं छोड़तेहो तब फिर मैं सच्चा होकर अपने सत्य को कैसे छोड़ देऊंगा। किन्तु कदापि नहीं छोड़ूंगा जो कि असत्यवादी हैं उन्हीं को खुदा सज़ादेगा क्योंकि खुदा न्यायकारी है अन्यायकारी नहीं है जो कहता है मैं बन्दा गुनाहगार हूं वह ज़रूर गुनाहोंसे भरा है और कदापि वह खुदासे नहीं मिलसक्ता है क्योंकि झूठ कहता है और जो कहता मैं खुदा हूं वह अब भी खुदासे मिला है और मरकरके भी मिलही जाता है मनसूर की बातों को सुनकर बादशाह ने अपने दिलमें कहा यह फकीर तो सच्च कहता है मगर शरावाले तो इसकी बातको नहीं मानते हैं अब क्या

करनाचाहिये एकवार फिर भी इसको समझाना चाहिये फिर बादशाह ने कहा तुम इस अनलहककलमा को मतकहो अगर्चे शरावाले तुम्हारी बातोंका जवाब नहीं देसक्ते हैं तवभी उनको अपने शराकी पाबंदी का बड़ाभारी हठहै मनसूरने कहा इनको झूठे शरा की पाबंदी का हठ है तो हमको अपने सच्चे शराकी पाबंदीका हठ है बादशाहने मनसूर को कैदखाना में भेजदिया मनसूर कैदखानाके अन्दर जाकर बैठगये॥ कैदखानामें एक आदमीने मनसूर से कहा यदि तुम खुदाहीहो तब कैदसे छूटना तुमको क्या मुश्किल है इस बातके सुनतेही मनसूर सब के देखते देखतेही गायब होगये फिर दूसरे दिन किसी और जगह में किसीको दिखाई पड़े और वही अनलहक को जोरसे पुकार २ करके कहतेजायँ और रास्तामें चलेभी जायँ जो आदमी जिस वस्तुको मनसूर से आकर के मांगता उसको वह वस्तु उसी काल में बराबर देतेभी जायँ शरावालों ने फिर मनसूर को पकड़लिया और लेजाकर कैदखानाके अन्दर देदिया फिर वह वहांसे गायब होगये और दूसरीजगहमें किसीको अनलहक पुकारते

हुये दिखाई पड़े उसने जाकरके शरावालों से कहा शरावालों ने फिर मनसूर को पकड़कर कैदखाना में देदिया फिर वह कैदखाना से सब के सामने गायब होगये इसीतरह कईएकबार कैदखानासें मनसूर गायब होगये और फिर शरावालों ने उनको पकड़कर कैदखानामें देदिया तब शरावालों ने जाकरके बादशाह से कहा हम मनसूरको कैदखाना में लेजाते हैं और सिपाहीलोग उनको छोड़देते हैं बादशाहने कैदखाने के सिपाहियों को कहभेजा अगर अबकी दफा तुम मनसूरको छोड़देवोगे तब मैं तुमको सज़ा करूंगा सिपाहियोंने बादशाह से जाकरके कहा हजूर वह करासाती फकीरहै वह अपनी करामातसे गायब होजाता है हम नहीं उसको छोड़ते हैं वह जब जाता है तब हमको दिखाई भी नहीं पड़ता है जो हमको दिखाई पड़ै तब तो हम उसको रोकैं इसतरहसे बादशाहको सिपाहियों ने बहुतसा समझाया परन्तु बादशाह ने एकभी उनकी न सुनी और येही कहा अगर अबकी बार जातारहेगा तब मैं तुमको सज़ाकरूंगा लाचार होकर सिपाहियों ने आकरके मनसूरसे रोकरके कहा

यदि अबकीवार आप चले जायेंगे तब हम सब मारे-जायेंगे आप खुदाहैं तब हमको बचालीजिये मनसूर ने कहा अब मैं नहीं जाऊंगा तुम खातिर जमारक्खो मनसूर अब अपनी खुशीसे जेलखानामें रहकर अन-लहक कलमा को पुकार २ करके कहने लगे और कैदखाना में घूम २ करके मैं खुदाहूं इस कलमा का शोरमचानेलगे तब जेलखाना के दारोगाने मनसूर के पांवमें बेड़ी लगाकर कैदियों में मनसूर को विठा-दिया उस जेलखाना में पांचसौ कैदीथे एक दिन सब कैदियोंसे मनसूर ने कहा तुमलोग कौनसे कसूर से कैदहुयेहो सभोंने अपने २ कसूरोंको मनसूर से कहा और फिर सब कैदियों ने मनसूर के आगे हाथजोड़ करके कहा यदि आप खुदाहैं तब हमको इस जेल-खानासे छुड़ादीजिये मनसूर ने कहा हमने तुम सब को छोड़दिया कैदियोंने कहा यदि आपने हमको छोड़ दियाहै तब हमारे पांवकी बेड़ियें टूटजायें मनसूर ने कहा टूटजायेंगी ऐसा कहतेही सबकी बेड़ियें टूटगईं फिर कैदियोंने कहाहम अब कौनसेरास्तेसे निकलकरके जायें फाटककी तरफ तो सिपाहियों के पहरे बैठेहैं ॥

मनसूरने दीवारकी तरफ देखकरके कहा यह दीवारही तुमको रास्ता देदेगी दीवार में उसीकाल में पांचसौ सूराख़होगये और एक २ सूराख़से एक २ कैदी निकल करके भागगया जेलखाने का दारोगा दूर खड़ाहुआ इस वार्त्ताको देखरहा था जब कि दारोगा ने देखा कि सब कैदी तो भागगये हैं अब खाली मनसूरही रह-गयाहै तब दारोगा ने मनसूर से कहा अब आपभी जाइये जो कुछ कि मेरे शिरपर बनैगी मैं उसका ज-वाब करलेऊंगा या जो कुछ कि मेरेको सज़ा मिलैगी मैं उसको भोगलेऊंगा मनसूरने दारोगासे कहा आप मत डरिये मैंहीं इसकी ज़वाबदेही करूंगा और जो कुछ कि सज़ा मिलैगी उसको मैंहीं भोगूंगा दारो-गाने उसीवक्त सब हाल बादशाह से जाकरके कहा मनसूर के हालको सुनकर बादशाहका दिलभी डरा कि ऐसे सच्चे फकीर को सज़ादेनी मुनासिब नहीं है फिर बादशाह ने अपने मनमें विचार किया यदि मैं मनसूर को छोड़देऊंगा तब शरावाले लोग मिलकर बलवा करके मेरेको मारडालैंगे या राजमें खलल पैदा करैंगे अब क्या करनाचाहिये इसी शोचमें बाद-

शाह तो कितनेही दिनोंतक विचार करते रहे और इधर एक दिन क़ाज़ी मनसूर के पासगया और मनसूर को समझाने लगा आप इस कलमें को कहना छोड़ दीजिये क्योंकि इस कलमे को जो कहता है उसको शरावाले लोग काफ़र कहते हैं अगर तुमको इसके कहनेपर हठहै तब अपने दिलमें इस कलमें को कहिये ऊपर अपने मुँहसे न कहिये मनसूर ने कहा जो आदमी सच्चको छिपाता है और झूठ को ज़ाहिर करता है वही काफ़र होता सो क़ाज़ीसाहिब आप तो खुदही काफ़र हैं क्योंकि सच्चको आपने छिपा रक्खा है और झूठे शरा ज़ाहिर कर रक्खा है और अधर्म को तुमने धर्म बना रक्खा है फिर जो कि कुछ तुम अपने मुँह से कहतेहो उसको मानते नहीं हो तुम मुँहसे कहतेहो खुदा ला शरीक है और मुहम्मदको उसका शरीर बनाते हो फिर कहतेहो खुदा हाजिर है नाजिर है और तिसको सातवें आसमानपर बैठाहुआ मानतेहो जोकि सातवें आसमान पर बैठा है वह सब जगह हाजिर कैसे होसक्ता है फिर आप खुदाको करीम और रहीम कहते हैं और

कुरान को खुदाका बनाया हुआ आप मानते हैं भला जोकि कर्म याने बख़शिशकरनेवाला और रहीम याने दया करनेवाला होगा वह क्यों ऐसा किताब में लिखेगा कि काफ़रों को मारो काटो लूटो और जीवोंको हलाल करो इन बातों का हुक्म देनेवाला जालिम कहा जाताहै फिर न्यायकारी भी नहीं होसक्ता न्यायकारी उसको सबलोग मानते हैं इसीसे साबित होता है कुरान खुदाका बनाया हुआ नहीं है मुहम्मद का बनाया हुआहै मुहम्मदने अपने मजहबके फैलानेके लिये खुदाका बनाया हुआ मशहूर करदिया था क्या खुदामें इतनी ताक़त नहीं थी जोकि सब आदमियों के दिलोंपर अपने दीनका असर पैदा करदेता जिस वास्ते खुदाका कोई भी दीन नहीं है इसीसे साबित होता है कुरान खुदाका भेजा हुआ नहीं है फिर जब कि तुम उसको रब्बुल्आलमीन कहते हो सब जहानका रब तब काफर कौन है जो इस बातको न माने वही काफर है तुम इस बात को नहीं मानतेहो तुमहीं काफ़रहो क्योंकि जब सारी दुनियां का मालिक रब है तब फिर तुम कौनहो दूसरे को

काफ़र कहकर सज़ादेनेवाले मनसूर कहते हैं काज़ी-साहिब ज़ुल्मको छोड़ो सच्चे कलमे को पकड़ो वरना दोज़खकी आगमें तुमको जलना पड़ैगा मुँहसेकहतेहो, बुतपरस्ती करनेवाला काफ़र है और आप तो बुतपरस्ती करतेहो मक्कामें जाकर काले पत्थर के आगे सैदा करतेहो क्या मक्का बुत नहीं है फिर तबूतों और क़बरोंके आगे जाकर तुम हाथ जोड़कर उनसे अपनी मुरादको क्या वह मट्टीकी कबर खुदा है जो तुमको मुराद देगी काफ़रों के सब काम तुम करतेहो तुमहीं काफ़रहो मनसूर कहता है मैं न मक्काके बुतके आगे और न किसी क़बरके आगे और न किसी आदमी के आगे हाथ जोड़ता हूं और न मैं किसीसे कुछ मांगताहूं मैं कैसे काफ़रहूं मैं काफ़र नहीं हूं किन्तु तुमहीं काफ़र हो जो खुदाह सो मैंहूं जो मैं हूं सो खुदाहमनसूर के एक सवालकाभी जवाब काज़ी न देसका और चुप चाप होकर अपने घरको चलागया और काज़ी ने अपने दिल में कहा मनसूर सच कहता है मगर शरावालों को कौन समझावै जो उनको समझाये तो वह मारजाये कौन अपनी जानदे जो होगा सो

देखाजायेगा एकने मनसूरसे कहा तुम निमाज़को क्यों नहीं पढ़तेहो मनसूरने कहा सबलोग तो मेरी निमाज़ को पढ़ते मैं किसकी पढ़ूं मैं अपनीही निमाज़ को पढ़ता हूं॥

निमाज़पर मनसूर की ग़ज़ल है॥

बोलाअपनेआपपढ़ताहूंनिमाज़। निमाज़ से अपनीही है मुझको नियाज़ १ आपतालिब आपही मतलूब हूं। खुदहबीब और आपही महबूब हूं २ आपज़र्रा आपही बैज़ा हूं मैं। आपक़तरा आपही दरया हूं मैं ३ जो फ़ना होकर मिलादरया से जा। दरया से फिर दूईका ज़िकर क्या ४ है उसीकी ज़ातका हरजा ज़हूर। जिसजगह देखूं वहीं है उसका नूर ५ उससे ये खाली नहीं दीवारोदर। सब में है वह क्या शजर है क्या हजर ६ दरमियां से उठगया जिसदम हजाब। दूईका फिर उस जगह है क्या हिसाब ७ बस यहकहकर आरा मारानाहक्काजोशमें आकर अनलहक़कहउठा८॥

एक दिन फिर काज़ीके दिलमें आया कि एकबार फिरभी मनसूरको समझादेना चाहिये क्योंकि शरावाले नहीं मानेंगे काज़ीने मनसूरसे आकरके कहा मैं आपके अच्छेके लिये कहताहूं आप अनलहक कलमा के कहने से बाज़ आजाइये वरना शरावालेलोग आपको क़तल करवा देवेंगे मनसूर ने कहा आप जिस हमारे जिस्म को क़तल से बचाने के लिये हम से झूठ को बुलवाते हैं उस जिस्मको तो मैं अपना नहीं समझता हूं वह ख़ाकका बनाहुआ है एक दिन फिर ख़ाकमेंही मिलजायेगा दो चार दिन पहले मिलजाये या वह चारदिन पीछे मिलजाये और रूह तो पाक है और नित्यहै वह न पैदा होताहै और न नाश होताहै किंतु हमेशा एकही हालतमें रहताहै चारदिन जीनेकेलिये मैं अपने सच्चको कभी भी नहीं छोडूंगा शरावालोंकी तरह हम नादान नहींहैं जो कि झूठपर कमरबांध झूठ बोलकर और जीवोंपर ज़ुलम को करके जो अपनी नजातको चाहताहै वह अपने परलोक को बिगाड़ता है और दोज़ख़ में जाताहै काज़ी साहब शरावालों के पीछे लगकर तुमनेभी अपने को गुनाहों में फँसादिया

तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये इसीपर काज़ी को मनसूर अपनी ग़ज़ल कहकरके समझाते हैं॥

अगरहैशौक़मिलनेका। भजनकीरमुज़पाताजा१
जलाकरखुद्नुमाई को। भस्ममें घसलगाताजा २
पकड़कर इश्कका झाडू। सफ़ाकरहुज़्रयेदिलको३
दुई की धूल ले करकर। मुसल्लोंपर उड़ाताजा ४
न पगड़ीबांध शेखोंकी।नखिलकापहनशेखीका५
मशाइख होके क्यालेना। मशालेंले जलाताजा६
नरखरोज़ा न मरभूखा। नजामसजिद्नकरसैदा ७
फोड़दे वज़ूका कूज़ा। शराबेशौक़ पीता जा ८
कहेमनसूर सुनक़ाज़ी। निवालाकुफ़्रका मतखा ९
अनलहक़ कलमाको। हमेशाही बुलाताजा १०

मनसूर के उपदेशों को सुनकर फिर काज़ी अपने घरको चलागया काज़ीने अपनी तरफ से मनसूर के बचाने के लिये बहुतसी कोशिश की मगर कालको कौन हटाये एक दिन शरावाले मुअल्लमलोग सब मिलकरके काज़ी के पासगये और काज़ी से उन्होंने

कहा मनसूर की क़तलका फ़तवा दीजिये जैसे कि शराकी किताब में लिखाहै वैसेही लिखकर हुकुमको दीजिये उनकी बातको सुनकर काज़ी रोनेलगा कुछ देरके बाद काज़ीने शराकी किताब को निकाला और उसमें देखकरके जब कि काज़ी लिखनेलगा तब काज़ी के हाथ कांपनेलगे और काज़ीसे उसदिन मनसूरकी क़तलका हुक्म न लिखागया तब काज़ीने उनसे कहा कलको मैं लिखदेऊंगा दूसरे दिन सबेरे काज़ी फिर मनसूर के पासगया और मनसूर से कहनेलगा तुमने खुदाके भेदको क्यों ज़ाहिर किया अनलहक यह एक बड़ाभारी खज़ाना है वह खज़ाना सबके सामने खो-लने लायक नहीं है किन्तु सबसे छिपाने लायक है इस ख़ज़ाने को तुमने सबके सामने ज़ाहिर करदिया है सो मूर्खलोग इस ख़ज़ाने की कदर नहीं जानते हैं इसलिये वह कल मेरेपास आयेथे और तुम्हारी क़तल का फ़तवा हमसे मांगतेथे मैंने उनसे कहा कल लिख-देऊंगा मैंने कल उनको टालदियाहै मगर आज वह नहीं मानेंगे और हमको तुमपर बड़ीदया आतीहै इस-लिये मैं आपको बार २ समझाताहूं आप इस कलमे

के कहने से बाजआजायें मनसूर ने कहा मैं आपसे कहचुकाहूं कि मैं कभी भी इस कलमे के कहने से बाज नहीं आऊंगा मैं मरनेसे नहीं डरताहूं आप जैसा चाहे वैसा फ़तवा दें आपका मैं कुछ भी कसूर नहीं देखताहूं फिर आप पर के अधीनहैं आप बेशक मेरी क़तलका हुक्म दीजिये जब कि काज़ी अपने घर में आया तब मुअल्लमों ने काज़ी से पूंछा मनसूर क्या कहताहै काज़ी ने कहा मनसूर सचकहता है क्योंकि वह खुदा के भेद से वाक़िफ है इसीसे वह मरने से भी नहीं डरताहै मुअल्लमोंने कहा जल्दी फ़तवा को लिखो काजी ने फ़तवा लिखकर उनके हाथ में दे दिया मुल्लालोगोंने एक बड़े भारी मैदान में शूली को खड़ा करदिया और हजारों लोग उस शूली के चारों तरफ़ जमाहोगये और बहुत से सोफी फकीर भी वहां पर पहुंच गये जिसकालमें मनसूर को क़ैदखाना से शूली के पास लाकर खड़ा किया तब उसवक्त मनसूर का चेहरा इसतरह से चमकेताथा जैसे कि सूर्य्य चमकताहै मनसूर उसवक्त वहां पर इसतरह से खड़ा था जैसे बकरियों में सिंह खड़ा होता है फिर सब के

देखते२ही मनसूर गायवहोगया तब शरावाले जो कि वहां पर सोफी फ़कीर खड़ेथे उनको पत्थर मारनेलगे मनसूर ने देखा कि मेरे पीछे यह लोग मुफ़्त में मारे जाते हैं तब फिर मनसूर प्रकट होगये याने सब को दिखानेलगे और मैदान में मनसूर बैठगये तब शरा-वालों ने उन पर पत्थर मारने शुरू किये और जल्लादने पहले मनसूर के हाथोंको काटा फिर पैरोंको काटा फिर मनसूरको शूलीपर रक्खा जब कि मनसूरको शूलीपर जल्लादोंने रक्खा तब मनसूरजोरसे अनलहककलमा को पुकार२करके कहनेलगा तब सब देखनेवालोंकेभी मुखसे वहीकलमा निकलने लगा और मनसूरके मर-जाने से पीछे चार घड़ीतक शूलीसे अनलहकका आ-वाज़ आता रहा उस आवाज़को सुनकर सब लोगोंके दिलोंमें खौफ़ उठा कि नाहक मनसूरको शूली दीगई है इस पापका फल सबको मिलेगा सब लोग अपने २ घरों को भाग गये और मनसूर अपने आत्मामें याने खुदा में मिलगये॥ और जिन लोगों ने मनसूर के मरवाने में कोशिश की थी वह सब थोड़ेही दिनों में भारी २ दुःखों में गिरफ्तारहोकर मरगये॥ महाशय

मनसूर के किस्सा से आपको खूब मालूम होगयाहो-गा अगर दुनिया में दयाहीन और जालिम फिरका कोई है तो शरावालों काही है जिन्हों ने नगरों के न-गरोंको उजाड़ करके जङ्गल बना दियाथा फिर जिन्हों ने नादान बच्चों और स्त्रियोंपरभी बड़े २ जुल्म कियेथे इनकी सोहबत से बचे रहना और नेकस्वभाववाले औ दयालु सूफियों की सोहबतकरना ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येण स्वामिपरमानन्द समाख्यावरेणपिशावरनगरनिवासिनामनसूरजीवन चरित्रंभाषायांकृतंसमाप्तम् १३ ॥

## अब यूनानदेशकेवेदान्तियों के जीवन चरित्रोंको दिखलाते हैं ॥

---

प्रथम उस देश के शुकरात के चरित्र को लिखतेहैं ॥

यूनानदेश में शुकरात के पैदा होनेसे पहले सब लोग देहात्मवादी थे याने शरीरकोही आत्मा मानतेथे और मरने के पीछे आत्मा का लोकान्तर में या देहान्तर में गमन भी नहीं मानतेथे जिसकालमें यूनानदेश में शुकरात पैदाहुआ और शुकरात विद्याको पढ़कर बड़ा आलिमफ़ाज़िल होगया तब इनके मनमें विचार उठा यह शरीर तो आत्मा नहीं है क्योंकि मरेपर यह शरीर तो इसी लोक में ख़ाक होजाता है और शरीरको सत्ता स्फूर्त्ति देनेवाला कोई दूसरा ही है जबतक वह इसमें बैठा रहता है तब तकही शरीर सब काम को करसक्ता है जब कि वह इससे निकल जाता है तब शरीर मुर्दा होजाता है यदि शरीरही आत्मा होता तब फिरभी सब कामोंको करता ऐसा तो नहीं देखते हैं इसी से साबित होता है कि शरीरसे आत्मा कोई जुदा वस्तु है. जबतक रथके चलानेवाला कोई रथपर सवार बैठारहे-

ताहै तबतक रथ चलताहै रथका चलानेवाला रथरूप नहीं है किन्तु रथ से जुदाही है तैसे इस शरीर का चलानेवाला भी कोई शरीर से जुदाहीहै और दुनियां में पैदाहोतेही कोई सुखी और कोई रोगादिकों करके दुःखी रहता है यदि शरीरकोही आत्मा माना जावै तब सब शरीर पृथ्वी आदिकों के कार्य बराबरही हैं सब को सुख दुःखादिक बराबरही होना चाहिये ऐसा तो नहीं देखते हैं तब इस से यह भी साबित होता है वह जोकि शरीर से भिन्न आत्मा है वही लोकांतर में और जन्मान्तर में गमनभी करता है जैसे जीव अपने व्यवहार के लिये जड़ पदार्थों से अनेक तरह के पदार्थों को बना लेता है आप से आप कुछ बनता नहीं है तैसे सारी दुनियां का बनानेवाला कोई दुनियां से जुदाही है ऐसे विचारोंवाली बहुतसी किताबें शुकरातने बनाई और लोगोंको देहसे भिन्न आत्माका उपदेश करनेलगे और साथही तिसके अच्छे २ कर्मों के करने का भी उपदेश करने लगे शुकरात लोगोंसे कहते यह देह आत्मा नहींहै इस देहसे आत्मा जुदाही है अच्छे कर्मों के करने से उस आत्मा को

जन्मान्तर में सुख मिलता है और बुरे कर्मों के करने से उस आत्मा को जन्मान्तर में दुःख मिलता है इस लिये तुम सब लोग अच्छे २ कर्मोंकोही किया करो जो तुमको दूसरे जन्ममें सुख मिलै इनके उपदेशों का लोगोंके दिलों में बड़ा असरहुआ बल्कि बादशाह से लेकर सब लोग इनकी इज्ज़त भी करनेलगे और यह नित्यही लोगों को अच्छे २ उपदेशों को सुनाते थे शुकरात एक दिन लोगोंको उपदेश करनेलगे जवानी में अपने दिल को भोगोंकी ख़्वाहिशों से रोको और बुढ़ापेमें दिलकी हिरसको याने तृष्णा को दूरकरो और इस जहान को याने दुनियां को ख़्वाबका ख्यालकरके जानो अर्थात् स्वप्न के तुल्य जानो क्योंकि दुनियां सब फ़ानी है और दुनियां के लोग सब अपने २ मतलब के यार हैं और कोई भी ऐसा समय नहीं है जिसमें आदमी खुशीको हासिल न करसके किंतु सब ज़मानों में आदमी खुशी को हासिल करसक्ताहै और खुशी के हासिल करने का कारण दुनियां से तरक है अर्थात् वैराग्य है जिसने दुनियां से तरक करली है वह हमेशाही खुश रहता है और जो दुनियां से

तरक नहीं करता है किन्तु दुनियां मेंही फँसारहताहै वह हमेशाही दुःखी रहता है और भारी दरजेपर प-हुँचने की सीढ़ी आदमी के लिये इल्म सौफी याने वेदान्तविद्या है इस दुनियांमें जो आदमी कि नेक और बदकाम की तमीज़ नहीं रखता है वह ज़िन्दा नहीं कहाजाता है बल्कि वह जीतेही मुर्दा कहाजाता है दुनियां में वही ज़िन्दाहै जिसको नेक और बदकाम की अक़्ल है और दुनियां में जिसका शरीर आरोग्य रहता है वही दौलतमन्द है शरीर की आरोग्यता के बराबर और कोई भी दौलत नहीं है फिर जिस कर्म के कथन करने से शर्म लगती हो उस कर्म के क-रने से भी शर्मही करनी चाहिये और जिस कर्म करने से लोगों में निन्दा होती हो उस कर्म को न करना चाहिये इसतरह शुकरात बहुतसे उपदेशोंको लोगोंके प्रति नित्यही सुनाते थे और सदैवकाल वह संसारसे वैराग्य होनेकेही उपदेशोंको करते थे और निष्काम तथा त्यागी भी अव्वल दरजे के थे और तितिक्षुभी बड़ेभारी थे प्रायः करके गर्मी के दिनों में धूप में जाकर बैठजाते थे एक दिन धूप में बैठे थे कि इत-

ने में बादशाह इनके पास पहुँचे और बादशाह ने शुकरात से कहा जिस चीज़की आपको ज़रूरत हो उसी चीज़को आप के पास भेज देऊं अगर हुक्म हो तो कुछ जवाहिरात को आप के पास भेज देऊं और थोड़े से रेशमी कपड़े भी आप के पास भेज देऊं शुकरातने कहा जवाहिरात पत्थरहैं उनसे तो मेरा कुछ भी काम सिद्ध नहीं होता है और रेशम के कपड़े कीड़ों के गूं से बनते हैं उनसेभी हमारा काम नहीं निकलताहै और पलीत रेशमको लेकर मैं क्याकरूं फिर जिस में कोई ऐवहो वह उस एक के छिपानेके लिये रेशमी कपड़ों को पहने हमारे में कोई ऐव नहीं है हम क्यों उनको पहनें फिर बादशाह ने बहुत कुछ देने को कहा परन्तु शुकरात ने एक पैसे की चीज़ का ग्रहण नहीं किया इतना बड़ा त्याग होना यह सब वैराग्य काही प्रताप है जिस ज़माना में शुकरात हर एक बात में बहुतही मशहूर होचुका था उस ज़माना में अफ़लातून की उमर बीसवर्ष की थी और इल्म को भी कुछ इसने पढ़ लियाथा इसने जब कि शुक-रात की तारीफ़ सुनी कि इस कालमें शुकरात के

बराबर दुनियां में आलिमफ़ाज़िल और वैराग्यवान् तथा त्यागी कोई भी नहीं हैं तब अफ़लातून के मन में उनके शिष्य बनने का शौक़ हुआ और शुक-रातकी परीक्षा के लिये अफ़लातून ने एक ख़त शुक-रातकी तरफ़ लिखा और ख़त में यह बात लिखी अगर आप हमारे तीन सवालों के जवाबको दें तब मैं जन्म भर के लिये आपका शिष्य बनूंगा॥ स-वाल पहिला यह है दया किस आदमी पर करनी चाहिये॥ सवाल दूसरा॥ आदमीके लिये काम में ख़राबी कब आतीहै॥ सवाल तीसरा॥ आदमी किस काम के करने से परमेश्वर से मिलसक्ता है॥ इन तीनों सवालों को ख़त में लिखकर उस ख़तको अफ़-लातून ने शुकरात की तरफ़ भेज दिया शुकरात ख़त में से तीनों सवालों को पढ़कर अब उनके जवा-बों को लिखते हैं॥ जो अक़्लमन्द आदमी किसी मूर्ख के पेंच में फँसगयाहो उसपर दयाकरनी चाहिये और जिस आदमी का रोज़गार न हो और जो अनाथ हो और जो रोगी और जो भूखा और प्यासाहो और जो किसी तकलीफ़ में फँसाहो इन सबपर दयाकरनी

चाहिये ॥ और जो नौकर मालिक का खैरख्वाहहो और मालिक भ्रांति करके उसके साथ बुराई करने को तैयारहो उसपर भी दया करनी चाहिये ॥ १ ॥ जिस काम को जो आदमी करना नहीं जानता है उसके सिपुर्द जो आदमी काम को करदेता है उसके काम में ख़राबी ज़रूर आती है और जो आदमी अपने काम को लोभी तथा लालची के सिपुर्द करता है और फिर जो कि अपने कामको चोर या रंडीबाज़ तथा ज्वारी और असत्यवादी के सिपुर्द करता है फिर जो अपने काम को आलसी और बुज़दिल तथा भीरुके सिपुर्द करता है उसके काम में ज़रूर ख़राबी आती है ॥ २ ॥ और पापकरने से डरना परमेश्वर को हरएक जगह में हाज़िर नाज़िर देखना जीव मात्र को भी न सताना यथालाभ सन्तुष्ट रहना सब से मैत्री करनी सम्पूर्ण प्राणियों पर क्षमा और दया को करना क्रोधादिकों के वशीभूत न होना इन कामों के करने से आदमी परमेश्वर से मिलसक्ता है ॥ ३ ॥ शुकरात ने इन जवाबों को लिखकर अफ़लातून के पास भेज दिया अफ़लातून शुकरात के जवाबों को

पढ़कर बड़ा प्रसन्नहुआ और तुरन्त शुक्रात के पास पहुँचा और तिसका शिष्य बनकर तिस से इल्म को पढ़ने लगा जबतक शुक्रात जीतारहा तबतक अफ़्लातून तिसकी शागिर्दी में रहा अब शुक्रात के कुछ और उपदेशों को लिखते हैं शुक्रात कहते हैं बुरे आदमी का मरजाना जो है सो नेक आदमियों की भलाई का कारण है जिसकी आंख में मुरव्वत नहीं है उससे मांगना अच्छा नहीं है और अगर अपना मतलब नष्ट भी होजाये तब भी बे मुरव्वत के आगे अपने दिल के हाल को न कहे जिस आदमी ने ऐसा जान लिया है जो ज़माना हरवक्त बदलताही रहता है वह अपने वक्त को व्यर्थ नहीं खोताहै जो काम कि तुम्हारे करने के लायक़ नहीं है उसका ख़्यालभी कभी तू अपने मन में न कर जो आदमी अपने गुस्से को अपनेही ऊपर झल लेता है वह दूसरों के गुस्से से बचजाता हैं जिसकी सोहबत से तुम्हारे में अहंकार पैदाहो उसकी सोहबत को तुम मत करो जो आदमी तुम्हारे ऐबों को तुमको दिखलाता है उसकी तुम खुशामद को करो एक आदमी शुकरात से कहा फलान

बूढ़ा बूढ़ी उमर में भी इल्म को पढ़ता है उसको शर्म नहीं आती है शुकरात ने कहा शर्म उसको आना चाहिये जो कि बूढ़ीउमरतक मूर्ख रहजाता है शुकरात से किसीने पूछा खुदाने आदमीको कान तो दो दो दिये और ज़बान एक किसलिये दी शुकरात ने कहा बोलने से सुनने की अधिक ज़रूरत है इसलिये कान दो दिये हैं एक आदमी ने शुकरात से कहा आप फ़लाने हाकिम की ताज़ीम क्यों नहीं करतेहैं शुकरातने कहा वह ख़्वाहिशों का गुलाम है और ख़्वाहिश सब हमारे गुलाम हैं वह हमारे गुलामोंका भी गुलाम है हम उसकी ताज़ीम इस लिये नहीं करते हैं इसी तरह के हज़ारों उपदेश शुकरात के हैं शुकरात सन् ईसासे ४५९ वर्ष पहिले पैदा हुआथा और एक सौ वर्षतक जीतारहा और एक सौ से ऊपर किताबों को भी इसने बनाया पश्चात् इस अनित्य संसार से कूच करगया ॥

इति श्रीस्वामिगिरिमदृत्शिष्येणपरमानन्दसमाख्याचरेण गुरुमानश्रीरामनरसिंहभाषायांकृतंसपात्तम् १४ ॥

## अब अफ़लातून के जीवनचरित्र को लिखते हैं ॥

यूनानदेशमें सन् ईसा से ४३० वर्ष पहिले अफ़लातून हकीम पैदाहुआ था और हकीम शब्दका अर्थ फ़ुलासफ याने वेदान्ती है अफ़लातून ने अपनी बीस वर्ष की उमर को खेलकूदमेंही व्यतीत किया मगर कुछ थोड़ासा इल्म भी इसने बीसवर्ष की उमर में पढ़ाथा फिर जब कि इसको पढ़ने का शौक़हुआ तब शुकरात के पास जाकर इसने फिर बहुतसा इल्म पढ़ा शुकरात के मरने के बाद इसने मिसरमें जाकर और बहुतसा इल्म पढ़ा जब कि भारी आलिमफ़ाज़िल बनगया तब फिर अपने देशमें आकर इसने एक मदर्सा बनाया और उसमें यह शागिर्दों को पढ़ाने लगा सैकड़ों शागिर्दों को इसने पढ़ाया और इल्म को खूबही फैलाया अफ़लातून के सब शागिर्दों में से अरस्तूनामवाला जो कि शागिर्द था वह बड़ा तेज़ निकला बल्कि यह अफ़लातून से भी बढ़गया अफ़लातून कहताथा तमाम दुनियां दो चीज़ोंसे बनी है

दोनोंमेंसे एक वह चीज़है जिससे कि तमाम पर्वतादिक और आदमियों के शरीर बनते हैं वह जड़है दूसरी चेतनवस्तुहै जिसका नाम खुदाहै उसीकी बनाईहुई सब दुनियांहै जीवका रूह भी उसी खुदाकाही अंश है जो वस्तु कि महदूद याने हदवाली हो और घटने बढ़नेवाली हो और जिसकी सूरतशक़ल भी हमेशा बदलती रहतीहो एक हालतपर न रहती हो वही जड़वस्तु कहीजाती है और दूसरी जो कि चेतनवस्तु है वह बेहद है अर्थात वह अनन्त है जिसका अन्त याने नाश कदापि न हो वह अनन्त कहीजाती है और वह चेतनवस्तु कदापि बदलती भी नहीं है किंतु हमेशाही ज्योंकी त्यों एकरस रहती है न वह कभी पैदा होती है और न कभी उसका नाशही होता है ऐसी सिद्धान्तकी बातोंका यह लोगोंको उपदेश करते थे शुकरातसे भी इसने अधिक किताबों को बनाया था अफ़लातून का परमेश्वर के भजन में बड़ा प्रेम था इस लिये भजन बहुत करता था जब कि अफ़लातूनका मन भजन करने को चाहताथा तब जंगल में एकान्त देशमें बैठकर भजन करते थे और प्रेमसे

रुदनभी करते थे इनके रोनेकी आवाज़ बहुत दूरतक जातीथी जिस आदमी से इनका मिलनाहोता था वह रोनेकी आवाज़पर चलाजाता था इनके दिलमें हमेशाही वैराग्य बनारहता था और सिवाय परमार्थ की वार्ताके और दूसरी वार्ताको भी यह नहीं करते थे और २८१ वर्ष के होकर इन्होंने इस दुनियां को छोड़दिया था याने शरीर का त्यागकरदिया था इन्हों ने जोकि लोगोंको उपदेश कियेथे और जिन उपदेशों को इन्होंने अपनी किताबों में लिखाहै उनमें से थोड़े से उपदेशोंको भी यहांपर दिखलाये देतेहैं ॥ अफ़लातून कहते थे दुनियां की तमाम चीज़ें शरीरकी आरोग्यता से हासिल होतीहैं मगर उसी चीज़का हासिल करना मुक़द्दम है जिसके हासिल करनेसे परलोक बिगड़े नहीं किन्तु बनजाये और जो आदमी असबाब मौजूदहमें सब्रनहीं करताहै वह हमेशा दुःखी रहताहै और जो आदमी दूसरोंको नेककाम करनेका उपदेश करता हैं परन्तु आप नेक कामको नहीं करता है वह आदमी ऐसे करता है जैसे कोई हाथमें दियालेकर औरोंको तो चांदनी दिखाताहै परन्तु आप अँधेरा में

जाताहै और मालदार वह है जो कि अक़्लमन्दी से जमा ख़र्च करता है जो कि जमाही करता रहता है और ख़र्च नहीं करताहै वह मालदार नहीं है किसीने अफ़लातून से पूछा ऐसाभी कोई है जिसका कहना और करना ऐबसे रहितहो॥ अफ़लातूनने कहा जिस आदमी ने अक़्लको अपने ऊपर हाकिम बनाया है उसका कहना और करना बेऐब होताहै फिर कहते हैं जिस इल्म के हासिल करने से दोनों जहानों में आराम मिलता है उसका क़दर करना चाहिये गुस्से को पास न आने देना चाहिये क्योंकि इससे आदत बिगड़जाती है ख़ाली अक़्लमन्दी की बातोंके करने से आदमी अक़्लमन्द नहीं होसक्ता है अमल करने से अक़्लमन्दहोताहै अगर कोई आदमी भलाईकरने के लिये रंजको उठायेगा तब उसका रंज बाक़ी नहीं रहेगा किन्तु भलाईही बाक़ी रहेगी अगर कोई बुराई करके आराम पायेगा तब आराम बाक़ी नहीं रहेगा किन्तु बुराईही बाक़ी रहजायेगी सफ़रके जानेके लिये सामान सफ़रका तैयार रक्खो क्योंकि कूचकेवक़्त का हाल मालूम नहीं है कि किसवक़्त कूच होजाता

हैं अफ़लातून के ऐसे अच्छे २ उपदेश हैं जिनके धारण करनेसे आदमी को बड़ा लाभ होताहै तमाम उमर अफ़लातून की बन्दगीमेंही गुज़री और वैराग्य में भी यह पूर्णथे ॥

इति श्रीब्रह्मर्षिहंसदासशिष्यस्वामिपरमानन्दसमाख्या
धरेणविरचितमफलातून जीवनचरित्रं
समाप्तम् १७ ॥

## अब अरस्तू के जीवनचरित्र को लिखते हैं ॥

यूनानदेशके किसी ग्राममें एक काहर नाम करके हकीम रहतेथे उसीके लड़के का नाम अरस्तू था वह अरस्तू सन् ईसासे ३८४ वर्ष पहिले पैदाहुआथा और बचपनमेंही इसके मा बाप मरगये थे इसीकारण से यह छोटी उमरमें कुछभी नहीं पढ़ाथा और १७ वर्ष की उमर तक यह खेल कूदमेंही रहाथा पश्चात् इस को विद्या पढ़ने का शौक़हुआ तब यह अफ़लातून के पासगया और उनसे यह पढ़नेलगा बीसवर्षतक इस ने विद्या को पढ़ा तब ३७ वर्षकी उमरतक यह अ-फ़लातूनके पासरहा और बड़ाभारी आलिमफ़ाज़िलहो-गया क्योंकि बुद्धि इसकी बड़ी तीव्रथी इस लिये इस ने बहुत ज़िल्मके इल्मको हासिल किया तमाम यूनान देशमें इसकी विद्याका चर्चा फैलगया उस काल में अरस्तूके बराबर दूसरा कोई भी आलिम यूनानदेश में नहींथा जबतक अफ़लातून जीते रहे तबतक तो वह उनके साथही रहा जब कि वह मरगये तब अरस्तू

बलादहुकमा नाम करके जो कि मशहूर शहरथा वहांपर चलागया और उस शहरमें एक मदर्सा बन-वाकर वहांपर शागिर्दों को यह पढ़ानेलगा अब इस के इल्म की चर्चा फैलसूफ़ बादशाह तक पहुँची तब बादशाह ने अरस्तू को बुलाकर कहा हमारा लड़का जो कि सिकन्दर नामवालाहै उसको आप पढ़ाइये इस ने भी मंजूर करलिया अब वहांपर यह सिकन्दर को पढ़ानेलगा सिकन्दरकी बुद्धि तेज़थी और पढ़ानेवाला भी बड़ा आलिमथा इसलिये थोड़ेही कालमें सिकन्दर ने इनसे बहुतसा इल्म पढ़लिया फिर अरस्तू कूतोंनाम करके छोटासा नगर था उसमें जारहा और वहांपर इसने यतीमोंको पढ़ाना शुरूअकिया अब यूनानदेश के सब बादशाहोंके यहांभी इसके इल्मकी चर्चा फैल गई और एक बादशाह के यहांसे इसके लिये नज़रें आनेलगीं और साथही बुलाने के लिये पैग़ाम भी आनेलगे और जिस ग्राम में अरस्तू रहता था वहांपर धीरे २ बड़ाभारी नगर बसगया और सब लोग अरस्तू के इल्मसे फ़ायदे को उठानेलगे जब कि अरस्तू ने सिकन्दर को थोड़ेही कालमें आलिम बनादिया तब

फ़ैलसूफ़ने इनकी तसवीरोंको बनवाकर इनकी याद-
गारीकेलिये जावजा लटकादीं और इसके ग्रामको फिर
से नया बनवादिया अरस्तूनेभी वहुतसी किताबें बनाईं
और इनकी किताबोंसे लोग फ़ायदा उठानेलगे सिक-
न्दरका अरस्तू से बड़ाप्रेम था इसलिये वह हरवक्त
इनको अपने साथही रखताथा एकदिन भी इन से
जुदा न होताथा जब कि अरस्तू बूढ़ाहोगया तब बुढ़ापे
की कमज़ोरी के सबबसे इसने सिकन्दर से जुदाहोना
मांगा सिकन्दरने भी लाचारहोकर इनको जुदा रहने
का हुक्म देदिया उसी दिनसे अरस्तू एक जगहमेंही
रहनेलगा फिर थोड़ेही दिनोंके पीछे सिकन्दरने वलाद
आज़म शहरको फ़तहकिया और जब कि तिसशहरपर
सिकन्दर ने क़ब्ज़ाकरलिया तब सिकन्दरने देखा जो
कि उस शहरमें बड़े २ बहादुर और अक़्लमन्द आ-
दमी रहते हैं तब सिकन्दरने अपने मनमें सोचा अगर
इनको मैं मरवाडालताहूं तब अन्यायहोगा और अ-
न्यायकरना बादशाहका धर्म नहींहै और अगर मैं इन
को नहीं मरवाताहूं तब हमारे राजमें ख़लल आता है
इसमें सिकन्दरकी अक़्लने जब कि कुछ कामनकिया

तब सिकन्दरने अरस्तूको सब हाललिखा और साथही यहभी लिखा जिसतरह होसके आप मेरेपास आइये क्योंकि आपके आने बिना मेरा बड़ा हर्जहोता है जब कि सिकन्दर का ख़त अरस्तूके पास पहुंचा तब अरस्तूने सिकन्दरको जवाब लिखा कि मैं अपनीखुशी से आपसे जुदानहीं हुआहूं किन्तु बुढ़ापेकी कमज़ोरी के सबब से मैं जुदाहुआहूं और मेरे बदन में अब ताक़त बिल्कुल नहींहै और ज़िन्दगीका कुछ भरोसा भी नहींहै ऐसा न हो जो रास्तामेंही मेरा दम निकल जाये और आपका फिर मतलबभी पूरा न हो इस लिये मैं एक किताब लिखकर आपके पास भेजताहूं अगर आप उसपर अमलकरैंगे तब आपको किसीतरहकी भी तकलीफ़ न होगी अरस्तूने एक किताबको लिख कर सिकन्दर के पास भेजदिया जब कि वह किताब सिकन्दर के पास पहुंची और सिकन्दर तिसको खो-लकर पढ़नेलगे तब उसमें लिखाथा ऐ सिकन्दर अ-गर तुम उन बहादुर और अक़्लमन्दलोगों को मर-वावोगे तब उनकेपीछे जोकि उनके दोस्त और संबंधी होवैंगे या जो कि उनकी औलाद होगी वह ज़रूर

तुम्हारे राज्य में ख़लल पैदा करेंगे इसलिये मरवाना उनका ठीक नहीं है वल्कि उन के साथ अहसान करना मुनासिव है उनकेसाथ भारी अहसान को करो जिसके करने से उन के दिलों से दुश्मनी निकल जाये और वह सब तुम्हारे दोस्त वनजायें अरस्तु लिखते हैं ऐ सिकन्दर दुनियां में चार क़िस्म के बादशाह होते हैं एक वह बादशाह होते हैं जो कि अपने और अपनी रिआया के हक़ में उदार होते हैं दूसरे वह होते हैं जोकि सिर्फ़ अपने लियेही उदार होते हैं रिआया के लिये कृपण होते हैं तीसरे वह होते हैं जो कि अपने लिये तो कृपणहोते हैं परन्तु रिआया के लिये उदार होते हैं चौथे वह होतेहैं जो कि अपने लिये और रिआया के लिये भी कृपण होते हैं चारों मेंसे पहलेवालेही अच्छे होते हैं और तीसरे औसत दरजे के होते हैं दूसरे और चौथे अच्छे नहींहोते हैं और जो कि मज़हबके तअस्सुबवाले बादशाह होते हैं वह रिआया को तकलीफ़ देते हैं वह डाकू दोज़ख़ी कहेजाते हैं वह बादशाह नहीं कहे जाते हैं बादशाह को मुनासिवहै रिआया के माल लेने

की कदापि इच्छा न करे किन्तु रिआया के माल की हिफ़ाज़त याने रक्षा को करे और रिआया की लड़कियों और स्त्रियों की तरफ़ कभी भी बुरी निगाह से न देखे और रिआया पर कभी भी जुल्म को न करे बल्कि रिआया को ज़ालिमों और डाकुओं से बचावे और रिआया की औरतों को अपनी मा बहनकरके जाने रिआयाकी लड़कियों को अपनी लड़कियां करके जाने॥ बादशाह को लाज़िमहै हमेशा नेकनामी का ख़याल रक्खे और सबमज़हबवालों को बराबर देखे जो बादशाह रिआया पर जुल्म करता और मज़हबके तअस्सुबवालाहोताहै वह जल्दी तबाहहोजाता है और दुनियां में हमेशाके लिये बदनामीको छोड़जाताहै और ख़ुदाभी उसकोभारी सज़ा देताहैइसलिये रिआयापर हमेशाहीरहमकरनाचाहिये और बादशाह को हमेशा बलन्दहिम्मतवाला होना चाहिये और बादशाह को हमेशा शीरींज़बां तथा कम बोलना और विचारवान् होना चाहिये जो लोग कि झूठबोलने की आदत रखते हैं उनकी सुहबत से नफ़रत करनी चाहिये और झूठीतारीफ़ को सुनना

ने चाहिये और विदेशी सौदागरों की और विदेशी मुसाफ़िरों की ख़ातिर करनी चाहिये जो बादशाह ऐसा करता है वह सौदागर और मुसाफ़िर अपने देश में जाकर तिसकी तारीफ़ करते हैं और विदेशियों के साथ मुहव्वत करने से मुल्क आबाद होता है क्योंकि अपने आराम के लिये विदेशी सब उसीके मुल्क में आ बसते हैं और विदेशियों के रहने के लिये मुसाफ़िरख़ाने बनवाने चाहिये और विदेशियों के मालका महसूल आधा लेना चाहिये ताकि विदेशी बहुतसा माल लावें और क़सूर में देशी से विदेशी की आधी सज़ा करनीचाहिये हमेशा ग़रीबों की परवरिश में ख़याल रखना चाहिये और बादशाहको लाज़िम है कि साल के साल नयाअन्न जमाकरै और पुराने को बेचडाले ताकि अकाल के समय में वह अन्न काम दे ऐ सिकन्दर! बादशाह को हमेशा वह काम करना चाहिये जिस काम के करने से बुरे आदमियों के दिल में डर पैदाहो और नेक आदमियों के दिलसे डर जातारहे और जिस आदमी से जैसा क़रार कियाजाये उस अपने क़रार को पूरा करना चा-

हिये उस में फ़रक़ न पड़ै और झूटी क़सम को कदापि नहीं खाना चाहिये और दुनियां में नेक बादशाह से बढ़कर रिआया के लिये कोईभी चीज़ नहीं है और बद बादशाह से बढ़कर रिआयाके लिये कोई भी बुरीचीज़ नहीं है ऐ सिकन्दर! दुनियांएक बड़ाभारी जिस्म याने शरीर है और बादशाह तिस-का शिर है और रिआया तिसके हाथ पांव वग़ैरहः जुज़ याने अवयव हैं हाथ पांव के सलामत रहने से शिरभी सलामत रहता है और बादशाह को मुनासिब है जिसवक्त अदालत पर बैठे प्रथम ईश्वर से ऐसी प्रार्थना कर लेवै कि मेरे से अदल हो मेरेसे किसी की भी हक़तल्फ़ी न हो ऐ सिकन्दर! इल्म एक शीशा है जिस में हरएक ऐब और हुनर की सूरत नज़र आती है इल्म को हासिल कर के भी अगर दिल के ऐब दूर न हों तब इल्म पढ़ने का कुछ भी फ़ायदा न होगा इल्म को हासिलक-रके जिसने अपने को और खुदाको न पहिंचाना तब उसका इल्मकापढ़ना बे फ़ायदाहै ऐ सिकन्दर! यह दुनियां और दुनियां की चीज़ें सब फ़ानी हैं

इनका ऐतबार कभी भी न करना चाहिये कि यह सब कलतक रहेंगे क्या जानै रातकोही सब फ़ना होजायें दुनियां की चीज़ोंको मरतीबार कोईभी साथ अपने नहीं लेगया है और न लेजायेगा बल्कि अपना शरीर भी साथ नहीं जाता है तब और क्या जायेगा॥ अकेलाही रूहआयाहै और अकेलाही जायेगा फ़क़त बुरे और नेक काम कियेहुयेही इस के साथ जायेंगे ऐ सिकन्दर ! मरने को कभी भी न भूलना जो अपने मरने को भुला देताहै वह दोनों जहानों में तकलीफ़ उठाता है हमेशा खुदा को हाज़िर नाज़िर जानकर सब कामों को तुम करना और खुदा से डरते रहना इस तरह के बहुत से उपदेश अरस्तूने अपनी किताबमें लिख करके भेजे और सिकन्दर ने उस किताब से बहुतसा फ़ायदा उठाया अरस्तू में त्याग और वैराग्यभी पूरा २ था और ६८ वर्ष की उमर को भोगकर अरस्तू ने इस दुनियां से कूच करदिया॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्दसमाख्यधरेणपिशावरनगरनिवासिनामध्यदेशीयभाषायां अरस्तूजीवनचरित्रंकृतंसमाप्तम् १६ ॥

## अब हपीमफलूतर के हाल को दिखाते हैं ॥

हपीम फलूतर बड़ेदयावान् थे जीवहिंसा से बड़े डरते थे इन्हों ने अपनी आयुभर में कभी भी किसी जीवको नहीं सताया था और दुनियां की तरफ़ से हमेशाही उदासीन चित्तहोकर रहते थे और संसार के भोगों की तरफ़ से हमेशाही इनको वैराग्यही बना रहता था और यूनान के जिस शहर में यह रहते थे उस शहर के बाहर जंगल में एक पुराना मन्दिर था और एक दफ़ा सालमें वहांपर एक बड़ाभारी मेला होता था और शहर के सब लोग मेलेके दिन वहांपर जाकर मन्दिर में जो कि मूर्त्तिथी उस मूर्त्तिके आगे बकरा वग़ैरह जीवों की कुरबानी अर्थात् बलिदान करते थे जब कि मेलेका दिन आया तब लोगों ने फ़लूतर से भी चलने के लिये कहा इन्हों ने नहीं माना फिर जब कि बहुत से आदमियों ने इनकी खुशामद की तब इन्हों ने भी उनके साथ चल दिया लोग सब वहां

पर जाकर जीवहिंसा को करनेलगे अर्थात् अपना २ वलिदान करनेलगे इन से लोगों ने कहा तुम भी कुरबानी को करो इन्हों ने भी एक माटी का बकरा बनाकर तिसके आगे तिसकी कुरबानी को करदिया लोगों ने इन से कहा आप ऐसा क्यों करते हैं इन्हों ने कहा बेजान के आगे बेजानकीही कुरबानी करनी चाहिये जो आदमी बेजान के आगे जानदार की कुरबानी करता है वह गुनहगार याने पापी होता है उस जीवहिंसा का पाप तिस को लगता है क्योंकि जड़बुत तो तुम्हारा खाता पीता नहींहै खाते पीते तो तुम आपही हो अपने खाने का बहाना एक कुरबानीका तुमने बना लिया है इसीवास्ते जिनजीवों को तुम मारतेहो वह फिर तुमको मारकर खायेंगे लोगों की समझ में उसका उपदेश बैठगया और उसी दिन से तिस देवता के आगे कुरबानी करनी बन्दहोगई यह भी यूनान देशमें सन् ईसासे तीन सौ बरसपहिलेहुआहै त्याग और वैराग्यमें यहपूराथा ॥

इति श्रीस्वामिपरमानन्दकृतंहकीमफलातूनजीवनचरित्रंसमाप्तम् १७॥

---

## अब हथीमसपेदकेहालको दिखलाते हैं ॥

यूनान देशके एक नगर में हथीम सपेद नाम कर के एक बड़ेनामी याने मशहूर हुये हैं यह हमेशाही एकान्त देश में रहते थे और ज़्यादा करके मौन ही रहते थे क्योंकि इन के चित्त में वैराग्य हमेशा भरा रहता था इसलिये संसारी लोगों से यह उदासीन रहते थे बल्कि इन्हों ने ऐसा नियम करलिया था जो कि व्यवहारी लोगों के साथ बिलकुल नहीं बोलना एक रोज़ बादशाह ने आकर इनको कितनाही बुलाया परन्तु यह बिलकुल नहीं बोले तब बादशाह ने जल्लाद को बुलाकर इनके क़तल का हुक्म दिया और बादशाह ने जल्लाद को किनारे ले जाकर के कहा अगर यह तुम्हारी नंगी तलवार को देखकर डरजायें तब तो तुम इनका शिर काटडालना अगर यह नंगी तलवार तुम्हारी देखकर न डरें तब क़तल नहीं करना और मेरेपास तुम चले आना जल्लाद ने नंगी तलवार को निकाल कर उनको दिखलाई और

क़तलका इरादा किया तब भी वह न डरे और नाहीं मुख से बोले किन्तु एकरस चुपचाप ज्यों के त्यों ही बैठरहे जल्लाद ने तलवार को मियान में कर लिया और आकरके बादशाह से सब हाल कहदिया फिर बादशाह उन के पास गये और उनको बड़ी इज़्ज़त के साथ पालकी में बिठलाकर अपने मकान में ले आये और एक उमदा कमरे में उन के लिये जगह रहने की मुक़र्रर करके उनको एक आसनपर बिठ- लाकर उन के आगे बादशाह ने कुछ सवाल किये उन सवालों का जवाब उन्होंने कागज पर लिखकर बादशाहको दे दिया बादशाहउनको पढ़कर बड़े खुश हुये अब बादशाह उनकी सेवा करने लगे जबतक वह जीतेरहे बादशाह उनकी सेवा को करतेही रहे ८० बरसकी उमर को भोग शरीर का इन्होंने त्याग कर दिया ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणपरमानन्दसमाख्याभरेण हबीमसुपेद्नाम जीवनचरित्रंभाषायांकृतंसमाप्तम् १८ ॥

## अब अबूअली के हालको लिखते हैं ॥

यूनान देशके एकनगर में अबूअली नामकरके एक बड़ाभारी हकीम हुआहै यह हकीम त्याग और वैराग्य में लासानी था कभीभी किसी अमीर और बादशाह के मिलने को भी यह नहीं जाताथा एक दिन बड़ेभारी एक अमीरनें इनको बुलाया और बहुत सा सामान रुपया कपड़ा वग़ैरह इनकी नज़रको भेजा इन्हों ने सब सामान को वापस करदिया और कहला भेजा कि एकदिन का खाना मेरेलिये काफ़ीहै और एक हाथभर ज़मीन मेरे सोनेके लिये काफ़ीहै और एक जोड़ा कपड़ोंका मेरेलिये काफ़ी है और अगर मैं इस से ज्यादा लेकर जमाकरूंगा तब तुम्हारा ख़ज़ानची बनूंगा और जो तुमसे लेकर दूसरे को देऊंगा तब तुम्हारा दलाल बनूंगा सो यह बातें हमसे नहीं हो-सक्तीहैं ऐसे कहकरके सब सामान उसका उसने वापस करदिया एकरोज़ एक अमीर ने उनसे कहा हमको फ़िलासफ़ी पढ़ावो उन्हों ने उससे कहा एक सौ अशरफ़ी हम महीना लेवैंगे अमीरने देनेका इक़-

शरकिया तीनवर्ष तक उसको पढ़ातेरहे और हरएक महीना में अशरफी उससे लेतेरहे और जमाकरते रहे जब कि वह पढ़कर अपने वतन को जाने लगा तब जितनी अशरफियें उससे लेकर इन्हों ने जमाकी थीं सब निकालकर उसके आगे इन्होंने ढेरकरदीं और कहा इन सबको तुम लेतेजाओ हमको इनकी कोई भी ज़रूरत नहींहै हमने तो सिरफ़ तुम्हारे इम्तहान केलिये इनको तुमसे लियाथा हमने यह शोचा था इनको इल्म प्यारा है या कि दौलत प्यारी है अगर दौलत प्यारी है तबतो यह सौ अशरफ़ी महीना में नहीं देवेंगे अगर इनको इल्म प्यारा होगा तब तो देवेंगे सो तुमको इल्म प्याराथा इसीलिये तुमने इल्म के आगे दौलत की कुछभी क़दर नहीं समझी इल्म कीही तुमने क़दरकी है इसी वास्ते हमने तुमको इल्म भी पढ़ाया है अबतुम अपनी अशरफियों को अपने साथ लेतेजाओ यदि तुम इल्म से दौलत की क़दर ज्यादा करते तब हम तुमको न पढ़ाते तुमने दौलत से इल्मकी क़दर ज्यादाकी है इसी वास्ते हम तुमपर बड़े खुशहैं क्योंकि जो आदमी इल्मकी क़दर

करता है वही इल्मसे फ़ायदे को भी उठाता है ज़रूर तुम इल्मसे फ़ायदाको उठावोगे अमीर ने कहा दी हुई अशरफ़ियों को मैं अबनहीं लेसक्ताहूं आपकिसी नेक काममें लगादें हुधीमने कहा हमारा कहना तुम को मानना ही पड़ैगा तुम इनको लेकर अपने वतनमें जाकर ग़रीबों को खिलादेना अमीर अशरफ़ियों को लेकर अपने वतनको चलागया इतने बड़े यह त्यागी थे॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणपरमानन्दसमाख्याधरेण हुधीमअब्रूनज़ीजीवनचरित्रंमध्यदेशीयभाषायांकृतं समाप्तम्॥ १६॥

## अब फैलसूफ़ के हालको दिखाते हैं ॥

फ़ैलसूफ़ भी यूनान देशमें बड़ा फ़ुलासूफ़ हुवाहै मारफ़त में वह अपने ज़माना में लासानी था याने जिस ज़माना में वह हुवा है उस ज़माना में उसके बराबर का दूसरा कोई भी उसदेश में नहींथा इस फ़ैलसूफ़ का यह सिद्धांत था जबतक दिलकी बाग दुनियां की तरफ़से न खींचीजायेगी तबतक मारफ़त का हासिल होना याने खुदासे मिलना मुश्किल है इस हकीम ने सफ़र बहुतसा कियाथा और जहांतहां जाकर मारफ़त वालोंसे मुलाक़ात करके उनकी ख़िद-मतकरके इसने मारफ़त के इल्मको हासिल किया था और उस इल्मसे इसने बहुतसा फ़ायदाभी उठायाथा और हमेशा यह सोफ़ियोंकी तरह रहते थे याने फ़क़ीराना लिबास और चाल ढंगसे रहतेथे फिर यह हलब शहर में चलेगये वहांका बादशाह इनकी सुहबत करके बड़ा खुशहुआ बल्कि इनका गुलाम बनगया और उस शहरके बड़े२आलिम लोग इनको शास्त्रार्थ करने को आये सबको इन्हों ने जीतलिया

उनआलिमों के दिलमें हारजाने से बड़ारंज पैदाहुआ और इनके मरवाने की फ़िकर में हुये वहांके आलिम सब शराके गुलाम थे और पाखंडोंसे लोगोंको ठगते थे और यह सत्यवादी और सत्य झूठको जुदाकरके दिखला देतेथे जब कि इनके सामने शरावालोंकी कुछ भी न चली तब सब उलमा ने मिलकर बादशाह से कहा यह शरासे बाहर हैं. इनको क़तल करवादेना चाहिये बादशाह ने उनकी बातका ख़याल न किया और उनको दूसरे शहर में जहांपर कि बादशाह का लड़का रहताथा भेज दिया बादशाह का लड़का उनकी बातोंको सुनकर बड़ाखुशहुआ और उनकी उसने बड़ी ख़ातिरकी उन शरा वालोंने जब कि इसबात को सुना तब फिर बादशाह से उन्हों ने कहा अगर आप उनको क़तल नहीं करादेंगे तब आपकी बादशाही में ख़लल आवैगा बादशाह ने लाचारहोकर अपने लड़के को सबहाल लिखभेजा जब कि लड़के ने सबहाल पढ़ा तब चित्तमें बड़ादुखी हुआ और उनको बाहर भेजकर किसी बहानासे मरवाकर बाप को लिखभेजा बादशाहके पास जब कि उसके मरवाने

का हाल पहुंचा तब सब शरावालों को सुनादिया थोड़ेदिनों के पीछे कोई तोहमत लगाकर सब शरावालोंको बादशाहने पकड़कर क़तल करवादिया और उनका माल असबाब भी सब ज़ब्त करलिया शरावालों का हमेशा से सोफियों के साथ विरोध रहताहै क्योंकि वह शराके कूकर होते हैं और सोफ़ी शरा को नहीं मानते हैं॥ यह हकीम इसलाम के ज़माना में हुआथा इसी वास्ते शरावालों के हाथ से मारागया ज़ुल्मकरना इसलामवालों का खासधर्म्म है इनके अधर्मका पता नहीं है॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणपरमानन्दसगा ख्याधरेणफैलसूफकबीमजीवनचरित्र भाषायांकृतं समाप्तम्॥ २०॥

## अब देवजान सकलवी के हालको लिखते हैं ॥

सिकन्दर के ज़माना में यूनान देशमें देवजान स-कलवीनामकरके एकहकीम हुआहै यह बड़ा विरक्त और वैराग्यवान्था इसने जन्मभर अपना विवाह नहीं कियाथा किंतु यह जन्मभर ब्रह्मचारी ही रहाथा और अपनी उमरभर में इसने अपने रहने के लिये कोई भी मकान अपना नहीं बनवायाथा और यह हमेशा एक जगहमें भी नहीं रहते थे कभी जङ्गल में कभी मैदान में कभी नदीके किनारे पर और किसी दरख्त के नीचे रहजाते थे और विना अपने मतलब के किसीसे बोलते चालते भी नहींथे और जिस कालमें इनको भूख लगती थी उसी कालमें किसी न किसीसे मांगकर खालेते थे और अमीर के उत्तम भोजन को और गरीबकी सूखीरोटी को बराबरही समझते थे फक्त पेट भरने से इनका मतलबथा स्वाद लेनेसे इन का कोई भी काम नहींथा और हमेशा अलफ नग्न ही रहते थे लंगोटी तक नहीं बांधते थे किसी ने

इनसे कहा तुम कपड़ा पहनकर अपने धर्मको क्यों नहीं ढांपतेहो इन्हों ने कहा जिस में कोई ऐब हो-ता है वह अपने ऐब को छिपाता है जिसमें कोईभी ऐब नहींहोता वह छिपाता भी नहीं है वह आदमी इस जवाबको सुनकर चलागया ॥ यह दर्वेश नित्य-ही एक नानबाई की दूकानपर रोटी मांगकर खाते थे उस नानबाई के यहां जब कि इनको रोटी खा-ते कई एक दिन गुज़रगये एक दिन उस नानबाई ने इन से कहा तुम रोज़ही रोटी को खातेहो इन्हों ने कहा तू रोज़ही रोटी को पकाता है और हमको रोज़ही भूख लगती है तब खायें नहीं तो क्या करें नानबाई हँसपड़ा और उसीदिन से इन्हों ने उसकी दूकान पर जाना छोड़ दिया इधर उधर से मांग कर पेटको भर लेते नानबाई ने फिर इनकी बहुतसी खुशामद की परन्तु फिर यह उसकी दूकान पर नहीं गये एक दिन एक आदमी ने इन से कहा तुम अ-पना घर क्यों नहीं बनाते हो इन्हों ने कहा घर को वह बनावे जिसका घर गिरा हो या कि जिसका अपना घर न हो परलोक की तरफ़ से सच्चे घर लो-

गों के गिरेहुये हैं इस लिये वह झूठे घरों को बनाते हैं हमारा घर ऐसा है जो कि कभी भी गिरनेवाला नहीं है फिर हम बनेहुये को क्या बनावैं दूसरा हमारा घर तमाम दुनियां है जिसमें आकर लाखों आदमी आराम पाते हैं जब कि हमारा इतना बड़ा घर है तब हम और घर क्या बनावैं मेराघर इतना बड़ा है तमाम ज़मीन जिसका आंगन है यानें सेन है आसमान जिसकी छत है ऐसा किसी भी आदमीसे नहीं बनसक्ता है एक दिन किसीने इनसे पूछा तुम्हारा मज़हब क्या है इन्होंने कहा खुदाका जो मज़हब है वही हमारा भी मज़हब है उस ने कहा खुदातो ला मज़हबहै इन्हों ने कहा हम भी लामज़हब हैं उसने कहा क्या तुम खुदा के शरीरहो इन्हों ने कहा शरीर नहीं हैं बल्कि खुदही खुदा हैं एक दिन एक जङ्गल में यह लम्बे पड़े थे कि इतने में सिकन्दर ने आकर इनको लातमारकर के कहा उठो जल्दी हमने एक मुल्क को फ़ते किया है तब लम्बे पड़े पड़े ही इन्हों ने कहा मुल्क का फ़ते करना यह तो बादशाहों का कामही है मगर लात मारना गधोंका काम

है इस बात को सुनकर सिकन्दर ने कहा इतनी बे परवाही तुम को कहां मिली कहा सबर करने से और ख़्वाहिशों के छोड़ने से इतनी बेपरवाही हमको मिली है एक दिन किसी आदमी ने इन से पूछा दुनियां में कोई तुम्हारा सम्बन्धी भी है या कि कोई नहीं है इन्हों ने कहा तमाम दुनियां के लोग अपने मतलब के सम्बन्धी हैं इस लिये मैं किसीको भी अपना सम्बन्धी नहीं बनाता हूं तब उसने कहा जब कि तुम मरो गे तब कौन तुमको दफ़न करे गा इन्हों ने कहा जिस को हमारे मुर्दे की सड़ीहुई गन्ध आवैगी वही दफ़नकरैगा इसका हमको कौन फ़िकरहै और एकआदमीने इनसे पूछा खाना कब खानाचाहिये इन्होंने कहा जिस के पास खाना मौजूद है जिसवक्त उसको भूख लगे उसीवक्त खाना खा ले और जिसके पास नहीं है उसको जिसवक्त खाने को मिलजाय उसीवक्त खा ले॥ फिर एक दिन एक ने इनसे पूछा तुम को लोग कलबी क्यों कहते हैं तब कहा कुत्ता जब कि दोस्त को देखता है तब उसकी कदमबोसी करता है फिर जब कि अपने दुश्मन को देखता है

तब उसको तंग करता है सो मेरे में कुत्ते की आदतें हैं इसलिये मेरा नाम लोगों ने कलवी रक्खा है॥ एक दिन एक आदमी को शादी करतेहुये इन्हों ने देखकर कहा थोड़े आराम के लिये बहुतसी तकलीफ़ों को यह उठावेगा एक दिन एक औरत खूबसूरत रास्ता में जाती थी उसको देखकर कहने लगे कि देखने में तो यह थैला बड़ाही खूबसूरत मालूम होता है मगर इस में बुराइयां बहुतसी भरी हुई हैं ऊपरके चमड़े सफ़ेदको देखकर लोग फँसतेहैं भीतरका हाल नहीं जानते हैं एक दिन इन्हों ने एक आदमी को कलप लगाते देखा तब कहने लगे कलप लगानेसे बालों की सफ़ेदी तो छिपगई मगर बदनकी कमज़ोरी और दिलकी सफ़ेदी न छिपी किसी ने इन से पूछा दुश्मन से बदला कौनसी चीज़ के हासिल करने से लेना चाहिये कहा जो हुनर कि दुश्मन में न हो उस हुनर के हासिल करने से दुश्मन से बदला लेना चाहिये॥ किसी ने पूछा क़ैदख़ाना क्या है कहा बदन की बीमारीही क़ैदख़ानाहै और ग़म तथा गुस्सा रूहका क़ैदख़ाना है ऐसे २ उत्तम २ इन के हज़ारों उपदेश

थे त्याग और वैराग्य का यह घर थे सत्तर ७७ वर्ष की उमर को भोग कर के इन्हों ने इस संसार का त्याग कर दियाथा ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणपरमानन्दसपाध्यायेण
देवज्ञानसकलवीयूनालीजीवनचरित्रभाषायां
कृतंसमाप्तम् २१ ॥

# अब हधीमजीतों के चरित्र को लिखते हैं॥

---

यूनान देशमें एक जीतोंनाम करके बड़े आक्रम मारफ़त के हुये हैं और अपने त्याग और वैराग्य में भी यह पूरण थे एकदिन इनसे किसीने पूछा सब कामों में कौनसा काम मुश्किल है जवाब दिया रूप का पहचानना और शराबालों से इस भेद को छिपाना येही सब कामों से मुश्किल है एकदिन बादशाह ने आकर इनसे पूछा हमारी बादशाही का क्या दाम है तब इन्होंने कहा हमको प्यास लगीहै पहले एक गिलास पानी का हमारे लिये मँगावो तब फिर मैं बताऊंगा बादशाहने हुक्मदिया तुरंत एक गिलास पानी का आगया और इनके आगे धरदियागया उस पानीके गिलासको हाथ में लेकर बादशाह से कहने लगे अगर तुम शिकार के वक्त किसी जंगल में रास्ता को भूलजावो और तुमको बड़ी सख़्त प्यास लगीहो और एक आदमी के पास एकही प्याला पानीका हो और वह तुमसे इनाम के बदलेपर देनाचाहे तब तुम उस

को क्या इनाम देवो बादशाहने कहा आधी बादशाही
मैं उसको देऊं फिर कहा अगर वह आधी बादशाही
पर नदे और प्राण निकलने लगें तब तुम उसको क्या
देकर गिलास पानी का लेवो बादशाहने कहा सारी
बादशाही को भी देकर लेलेऊं तब उन्होंने कहा तु-
म्हारी बादशाही का दाम एक गिलास पानीकाही है
बादशाह चुप होकर चलेआये एक आदमी ने उनसे
आकर कहा मैं आज बड़ा ग़मगीनहूं क्योंकि मेरा
कुछ असबाब जातारहा है उन्होंने कहा तुम अपने
दिलमें अपने को बड़ा मालदार सौदागर मानो और
फिर समुद्र में मालका भराहुआ जहाज़ किसी तरफ़
को लेजाता हुआ अपने को मानो और रास्ता में तू-
फ़ान आजाये और जहाज़ डूबने लगे तब तुम उस
कालमें मालके बचानेकी फिकरको करोगे या कि जा-
न बचानेकी उस आदमी ने कहा पहले तो जान के
ही बचानेकी फिकर को करेंगे फिर कहा तुम अपने
मनमें अपने को राजा ख़याल करो जब कोई तुमपर
दुश्मन चढ़आये और तुम्हारे राजको लेकर तुमको
क़ैदकरदे तब तुम अपने को क़ैद से निकालने की

फ़िकर करोगे या कि अपने मुल्कके छुड़ानेकी उसने कहा अपनी जानको क़ैदसे छुड़ाने की हम फ़िकर करेंगे उन्होंने कहा अवभी तुम ऐसाही ख़याल करले-वो जान तो बचगई माल गया तो गया उन्होंने कहा यह दुनियां सब फ़ानी है और झूठी है इसपर जो दिलको लगाताहै वह हमेशाही दुखी रहताहै इसतरह के इनके उपदेश बहुतसे हैं अस्सी ८० बरसकी उमर को भोगकर इन्होंने इस संसारका त्याग करदिया॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्दसमाख्याधरेणह्यीमजीतोंजीवनचरित्रंमध्यदेशीयभाषायांकृतं समाप्तम्॥ २२॥

## नसरुद्दीन के हाल को लिखते हैं ॥

हिन्दुस्तान में जितने कि मुसल्मान बादशाह देहली के तख्त पर बैठे हैं सबके सब तअस्सुबी और शराबके गुलाम तथा ज़ालिम हुये हैं और हज़ारों क़िस्मकी तकलीफें हिंदुवों को उन्होंने दीहैं जिनको सुनकर रोमांच खड़े होजाते हैं लेकिन एक नसरुद्दीन बादशाह तअस्सुब से और बुराइयों से ख़ालीहुआ है क्योंकि इसमें परमेश्वर का डरथा और कुछ इस को वैराग्य भी रहताथा और बड़ा विचारवान् भी था इसलिये इसने कभी भी किसी मनुष्य को नहीं सतायाथा और न किसीपर इसने कभी जुल्मही कियाथा सन् १२६६ ईसवी में यह तख़्तपर बैठाथा और बीस बरस तक राज करके फिर संसार से अपना चलान करदिया था तारीख़में इसका हाल इसतरह से लिखा है नसरुद्दीन पहिले सूबे बंगालका लड़का था जब कि इसके मा और बाप मरगये तब इसकी उमरबारह १२ बरसकी थी और लिखना इसको बहुतही अच्छा आताथा बापके मरनेके पीछे इसकी सौतेली मा ने तमाम

राज पर अपना दख़ल करलिया क्योंकि इसकी सगी मा तो पहिलेही मरगई थी उस सौतेली मा ने इसको क़ैदख़ाने में डालदिया और आप गद्दी की मालिक बनगई नसरुद्दीन छोटा था उस क़ैदख़ाने मेंही यह किताबों को अपने हाथ से लिखकर बेंचवाकर जो कुछ कि दाम मिलजाता उसीपर अपने खाने पीनेकागु- ज़र करता था जब कि इसकी सख्ती के दिन पूरे हो गये तब इसकी सौतेली मा और उसके सब मददगार मरगये और यह देहली के तख्त का बादशाह बन गया इल्मकी यह बड़ी क़दर करता था क्योंकि उसी के ज़ोर से यह जेलख़ाना में जीतारहा था जबकि यह दिल्ली के तख्त पर बैठा तब इसका एक बहनोई बड़ा अक़लमंद था उसको इसने अपना वज़ीर बनाया और बीसबरस तक इसने पूरी २ अदालत की और रिआयाकोभी इसने बहुतही खुश रक्खा एकही स्त्रीके साथ इसने अपना विवाह किया और जन्मभर दूस- री स्त्रीका मुख न देखा और न कभी किसी वेश्या के साथही इसने सम्बन्ध किया जन्मभर अपनी एकही स्त्री से संतुष्ट रहा और परस्त्री की तरफ़ कभी निगाह

को उठाकरके भी नहीं देखता था अपने ब्रह्मचर्य्य में
बहुतही मज़बूत था और यह खाना भी अपनी ही
बीबी के हाथ का खाता था दूसरे के हाथ का खाना
कभी नहीं खाता था और हमेशा इसकी बीबी अपने
हाथसेही खाना बनाती थी और फ़जूल ख़र्ची को
भी यह नहीं करता था किंतु अधिक दौलत हमेशा
यह ग़रीबों कोही खिलाताथा एक दिन इसकी बेगम
ने इससे अरज़की खुदावन्द आजकल गरमीके दिनों
में भोजन बनाते मेरे को बड़ी तकलीफ़होतीहै और
मेरे हाथों पर छाले भी पड़गये हैं अगर आपकी मेहर-
बानीहो तब खाना बनाने के लिये एक लौंड़ी हमको
और मिलजाती बेगम की बात को सुनकर बादशाह
ने नाराज़ होकर बेगम से कहा यह मुल्क और दौ-
लत सब खुदा की है अगर मैं अपने लिये इस में से
फ़जूल ख़र्ची करूंगा तब देनदार खुदा का होजाऊंगा
जैसे काम तुम से चले वैसे चलावो बेगम सुनकर
चुप होगई यह हमेशाही सादा खाना खाता था और
पोशाक भी सादीही पहिनता था और हरवक्त खुदा
की यादगार में रहता था इस में दयाबड़ी भारी थी

कभी भी दूसरे के दिल को नाराज़ न करता हमेशा सबको खुशही रखता था आप तो बुरे कामोंसे हटा-ही रहता था बल्कि दूसरों को भी हटाता था प्रजा की स्त्रियों को मा बहन करके जानता था प्रजा की लड़कियों को अपनी लड़की करके देखताथा चालीस वर्ष उमर भोग करके गुज़रगया ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्दसमाख्या-चरेणपिशावरनगरनिवासिनामध्यदेशीयभाषायां कृतंनरसीजीवनचरित्रंसमाप्तम् २३ ॥

महात्मा लोगों की इस जीवन चरित्र रत्नावली को हमने संवत् १९५९ फाल्गुनशुदी १५ को समाप्त किया ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येणस्वामिपरमानन्द समाख्याचरेणपिशावरनगरनिवासिनामध्य देशीयभाषायांकृतंजीवनचरित्ररत्नाव-लिनामग्रन्थस्समाप्तिमगात् ॥

## श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण भाषा किताबनुमा

## कागज़ रस्सी ५) व कागज़ गुन्दा ६)

पूरे सातोंकाण्ड अयोध्या पाठशाला के तृतीयाध्यापक पण्डित महेशदत्तकृत भाषा—यह वही पण्डितजी महाराज हैं जिन्होंने पहिले देवीभागवत और विष्णुपुराणका उल्था कियाहै दोभागों में यथातथ्य सुगम रीतिसे परिपूर्ण श्लोक के अनुसार हुआ है कोई शब्दभी छूटने नहीं पाया और श्लोकके जानने के लिये अङ्कभी लगादिये हैं कि भ्रम न पड़े अक्षर टैप के बहुत पुष्ट हैं अबकीबार बड़ी होशियारी से छापीगई है ॥

## तथा पत्रानुमा क़ी० १५)

विदित हो कि यह पत्रानुमा वाल्मीकीय रामायण जोकि अबकीबार मालिकमतबा ने छपाकर मुद्रित की है वह बहुतही अनुपम होकर सन्दर्शनीय है कि जिसका भाषानुवाद धनावली ग्राम निवासि रामचरणोपासि पं० महेशदत्तने किया व जिसका संशोधन भी संस्कृत तत्तिमें उन्नावप्रदेशान्तर्गत गुण्डा ग्रामनिवासि पण्डित सूर्यदीनजी ने किया है इसमें प्रत्येक श्लोकोंका अर्थ अन्वयरीति से प्रकाशया व प्रत्येक पदों व अक्षरोंका जैसा अर्थ होनाचाहिये था वैसाही हुआहै यद्यपि मुम्बई आदि नगरों में इसके बहुतसे अनुवादहुये हैं तो भी

पद इसके समान नहीं होसक्ते हैं क्योंकि उक्तनगरोंके पुस्तक अनुवादों में कहीं २ अन्वयरीति से अर्थ मिलता व कहीं २ मनमाना देख पड़ता है इस भेद को विद्वान् लोगही समझ सक्ते हैं इस हमारे अनुवाद में शुद्धता, छपाई, रोशनाई, कागज़आदि बड़ी सफ़ाई के साथ हैं इसकी सरल हिन्दी भाषा सर्वदेशवासियोंके समझमें आसक्ती है जिसकी भूमिका संकल्प तत्वदीपिका नाम है व जिसके प्रत्येक सर्गोंका सूचीपत्र भी बहुतही उत्तम रचाया है केवल इसीसेही सर्व साधारण जन रामायण की पारायण बांचसक्ते हैं—इसकी उत्तमता लेखनी से बाहर है अहो ग्राहकगणो! इसके खरीदने में विलम्ब मत करो क्योंकि विलम्ब होने में सिवाय पछिताने के और कुछ हाथ नहीं लगता है आशा है कि सर्व महाशयगण अवश्यही इसको देखेंगे और इसकी एक २ प्रति खरीदकर अपने घरको सुशोभित करेंगे अग्रे किमधिकं बहुलेखिन्यलम् ॥